

रुद्राक्ष डिकोडेड

अरुशन आर कत्याल



BlueRoseONE.com
S t o r i e s M a t t e r

New Delhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS

India | U.K.

Copyright © Arushan R Katyal 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.



BlueRoseONE^{.com}
S t o r i e s M a t t e r
New Delhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS

www.BlueRoseONE.com

info@bluerosepublishers.com

+91 8882 898 898

+4407342408967

ISBN: 978-81-6744-352-6

Typesetting: Simran

First Edition: August 2026

भूमिका

दुनिया को आध्यात्मिक नियमों और अंधविश्वासों से भरी एक और उलझी हुई पुस्तक की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता है एक ऐसी सरल और व्यावहारिक मार्गदर्शिका की, जिसे आप वास्तविक जीवन में आसानी से समझ सकें, अपनाकर परिणाम प्राप्त कर सकें।

लंबे समय से यह गलत धारणा प्रचलित रही है कि रुद्राक्ष केवल संतों, संन्यासियों या वृद्ध लोगों के लिए होता है। मैं इस भ्रम को यहीं समाप्त करना चाहता हूँ। यह पुस्तक हर उस व्यक्ति के लिए है जो अपने जीवन को बेहतर बनाना चाहता है। चाहे आप घर की अनेक जिम्मेदारियाँ निभाने वाली एक गृहिणी हों, निगम जगत में आगे बढ़ने का प्रयास कर रहे तनावग्रस्त पेशेवर हों, पढ़ाई और परीक्षाओं में ध्यान केंद्रित करने का प्रयास कर रहे पाँचवीं कक्षा के विद्यार्थी हों या अपने पहले बड़े अवसर की तलाश में जुटे एक नए उद्यमी—यह पुस्तक आपके लिए है।

यदि आप ध्यान से देखें, तो पाएँगे कि उभरते हुए अरबपतियों से लेकर शीर्ष अधिकारियों और विश्व के प्रभावशाली नेताओं तक, अनेक सफल लोग रुद्राक्ष धारण करते हैं। वे इसकी जैव-विद्युत शक्ति का उपयोग अपने आभामंडल की सुरक्षा, सही निर्णय लेने और निरंतर उत्कृष्ट प्रदर्शन बनाए रखने के लिए करते हैं।

इतनी शक्ति होने के बावजूद अधिकांश लोग रुद्राक्ष को लेकर गहरे भ्रमों के साथ उसके पास पहुँचते हैं। ग्राहकों से मुझे सबसे अधिक सुनने को मिलने वाला प्रश्न है—“सबसे शक्तिशाली रुद्राक्ष कौन-सा है?”

लेकिन वे एक मूल सत्य नहीं समझते। यदि कोई एक ही रुद्राक्ष सभी लोगों के लिए समान रूप से सबसे शक्तिशाली होता, तो दुनिया का हर व्यक्ति वही रुद्राक्ष धारण करता। वास्तव में रुद्राक्ष की शक्ति किसी एक मनके में नहीं, बल्कि उस सही गणितीय संयोजन में निहित होती है जो आपकी व्यक्तिगत ऊर्जा के अनुरूप हो।

वर्षों तक सर्वोत्तम रुद्राक्षों का चयन करने और दुनिया भर के हज़ारों लोगों के अनुभवों का अध्ययन करने के बाद मैंने यह पुस्तक लिखने का निर्णय लिया, ताकि इस क्षेत्र में फैले भ्रम और छल का अंत किया जा सके। पहली बार मैं रुद्राक्ष व्यापार से जुड़े वे तथ्य आपके सामने रख रहा हूँ, जिनकी जानकारी सामान्यतः लोगों तक नहीं पहुँचती।

जब लोगों के साथ धोखा होता है, तो वे अक्सर कहते हैं कि उन्हें "नकली" रुद्राक्ष दे दिया गया। लेकिन इस उद्योग का सबसे बड़ा रहस्य कुछ और ही है। पूरी तरह कृत्रिम या नकली रुद्राक्ष वास्तव में बहुत कम मिलते हैं। असली धोखा गुणवत्ता में होता है।

मैंने बहुत कम लोगों को यह पूछते हुए देखा है कि, "इस रुद्राक्ष की गुणवत्ता कैसी है?" अधिकांश लोग केवल इतना पूछते हैं, "क्या यह असली है?"

यहीं पर लालची विक्रेता लाभ उठा लेते हैं। क्योंकि मृत, खोखला या अत्यंत निम्न गुणवत्ता वाला रुद्राक्ष भी तकनीकी रूप से "असली" ही होता है, इसलिए वास्तविक प्रश्न कभी पूछा ही नहीं जाता। वे केवल इसलिए कम गुणवत्ता वाला, लगभग निष्प्रभावी रुद्राक्ष ग्राहक को दे देते हैं क्योंकि वह वास्तव में रुद्राक्ष के फल से प्राप्त हुआ होता है।

जब तक आप इस पुस्तक को पूरा करेंगे, रुद्राक्ष के बारे में आपकी अनेक पुरानी धारणाएँ पूरी तरह बदल चुकी होंगी। मैं आपको ऐसे विशेष व्यावहारिक उपाय बताऊँगा जिनकी सहायता से आप केवल उच्चतम गुणवत्ता वाले, अधिकतम जीवनशक्ति से भरपूर रुद्राक्षों की पहचान कर सकेंगे। आप यह भी सीखेंगे कि अपने जीवन की आवश्यकताओं के अनुसार सही रुद्राक्ष कैसे चुनें तथा किसी अन्य व्यक्ति पर निर्भर हुए बिना उसकी ऊर्जा को स्वयं कैसे जागृत करें।

मैं खोखले वादों में विश्वास नहीं करता। मेरा विश्वास केवल वास्तविक परिणामों में है। इसलिए इस पुस्तक के प्रारम्भ में ही मैं एक ऐसा स्पष्ट वचन दे रहा हूँ, जिसे अधिकांश लेखक या विक्रेता देने का साहस नहीं करेंगे—

यदि आप इस पुस्तक में दी गई जानकारी को ध्यानपूर्वक पढ़ें और कम-से-कम तीन रुद्राक्षों का अपने लिए उपयुक्त तथा सही ढंग से पिरोया गया अनुकूलित संयोजन नियमित रूप से धारण करें, तो मैं व्यक्तिगत रूप से विश्वासपूर्वक कहता हूँ कि 45 दिनों के भीतर आप अपने जीवन में स्पष्ट और अनुभव योग्य परिवर्तन देखेंगे।

यह कोई जादू नहीं है। यह उस स्वाभाविक परिवर्तन का परिणाम है जो तब होता है जब आपका मन, शरीर और दैनिक प्रयास भगवान शिव की पवित्र एवं शक्तिशाली ऊर्जा के साथ सामंजस्य स्थापित कर लेते हैं। जब आपके मार्ग की अदृश्य बाधाएँ दूर होने लगती हैं और आपका मन शांत तथा एकाग्र हो जाता है, तब सफलता स्वाभाविक रूप से आपके जीवन में आने लगती है।

इसी ज्ञान को व्यवहार में लाने के लिए मैं इस पुस्तक को पूरा पढ़ने वाले पाठकों को एक **निःशुल्क 5 मुख्य रुद्राक्ष ब्रेसलेट** भेंट कर रहा हूँ। इसे प्राप्त करने की पूरी प्रक्रिया और संबंधित विवरण आपको आगे के अध्यायों में मिलेगा।

इन पृष्ठों को ध्यानपूर्वक पढ़िए। बताए गए सरल चरणों का पालन करके अपने रुद्राक्षों की ऊर्जा को जागृत कीजिए। जैसे ही आप अगला पृष्ठ पलटेंगे, आपके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन की 45 दिनों की यात्रा आरम्भ हो जाएगी।

रुद्राक्ष का वास्तविक विज्ञान समझने की इस यात्रा में आपका स्वागत है।

वास्तविक जीवन में बदलाव: लोगों के अनुभव

किसी भी आध्यात्मिक या ब्रह्मांडीय विज्ञान की असली परीक्षा इस बात से होती है कि उसका असर वास्तविक जीवन में कैसा दिखाई देता है।

जब आप अपनी यात्रा शुरू करने जा रहे हैं, उससे पहले आइए कुछ ऐसे लोगों के अनुभव जानते हैं जिन्होंने इस किताब में बताए गए इन्हीं तरीकों और रुद्राक्ष संयोजनों को अपने जीवन में अपनाया।

संजय रमेश परमार — बैंगलोर

पहना गया संयोजन: 3, 4, 5, 6, 7, 10 और 11 मुखी

"अपना अनुकूलित संयोजन पहनने के बाद मेरा मन तुरंत शांत होने लगा और अस्वस्थ आदतें अपने आप कम होती गईं। सबसे बड़ी बात यह रही कि मैं आखिरकार वह विवादित संपत्ति बेच पाया, जो दस साल से अटकी हुई थी। उससे मिले पैसों से मैंने एक बेहतरीन नया घर लिया।

बड़े पैमाने पर कॉर्पोरेट छँटनी होने के बावजूद मेरा व्यावसायिक जीवन पूरी तरह सुरक्षित रहा और पैसों से जुड़े मेरे जल्दबाजी में लिए जाने वाले फैसलों की जगह अब काफ़ी स्पष्टता आ गई है।"

रोनक्कुमार पंचाल — अहमदाबाद

पहना गया संयोजन: 3, 4, 5, 6, 7, 12 मुखी और गौरीशंकर

"अपना अनुकूलित संयोजन पहनने के बाद—खासकर 12 मुखी और गौरीशंकर के साथ—मैंने अपनी नेतृत्व क्षमता, आत्मविश्वास और मानसिक शांति में जबरदस्त बढ़ोतरी महसूस की।

मेरे व्यवसाय के सफर में स्पष्ट रूप से सकारात्मक गति आई और नए अवसर मिलने शुरू हुए। साथ ही इसने मेरी भावनाओं को भी काफ़ी संतुलित किया, जिससे पारिवारिक जीवन में स्थायी सामंजस्य आया और आध्यात्मिकता की ओर मेरा ध्यान दोबारा मजबूत हुआ।"

उज्ज्वल — गुड़गाँव

पहना गया संयोजन: 1, 4, 5, 6, 7, 10, 14 और 15 मुखी

"एक ऊर्जा चिकित्सक होने के कारण मैं अपने चक्र स्तर में आए बदलाव को माप पाया। जैसे ही मैंने इन रुद्राक्षों को अपने आभामंडल में शामिल किया, मेरे चक्र स्तर में बहुत बड़ा बदलाव दिखाई दिया।

4 मुखी ने बेहतर संवाद के लिए मेरे विशुद्ध चक्र को संतुलित किया, जबकि पूरे संयोजन ने मेरी आध्यात्मिक उन्नति और उपचार क्षमता को बहुत तेज़ी से आगे बढ़ाया।"

पीयूष प्रधान — भुवनेश्वर

पहना गया संयोजन: 1 से 14 मुखी समृद्धि माला

"इस माला ने मेरे डर को विश्वास में और मेरी उलझन को पूरी स्पष्टता में बदल दिया। इसने मुझे वह मजबूत अनुशासन दिया जिसकी मदद से मैं ऊर्जा चिकित्सक के रूप में काम करते हुए उच्च शैक्षणिक उपाधियाँ भी पूरी कर सका।

यह कोई जादुई छोटा रास्ता नहीं है, बल्कि एक पवित्र साथी है, जो धीरे-धीरे और स्थायी रूप से आपकी वास्तविकता को भीतर से बदलता है।"

डॉ. उमा अग्रवाल — गाज़ियाबाद

पहना गया संयोजन: 13 मुखी और गौरीशंकर

"पहले ही दिन से मेरी ऊर्जा इतनी बढ़ गई कि मैं बिना थकान महसूस किए लगातार काम कर पा रही थी।

इसके अलावा मेरे वैवाहिक जीवन में भी बहुत खूबसूरत बदलाव आया। हमारे रिश्ते में नया सम्मान और सामंजस्य पैदा हुआ। वहीं एक गर्भ-गौरी मनका, जिसकी मैंने अपनी एक मुवक्किल को सलाह दी थी, उसके 14 वर्षों के संघर्ष के बाद गर्भधारण में मददगार साबित हुआ।"

संदीप ग्वालानी — पुणे

पहना गया संयोजन: वृद्धि बंध — 5, 6, 7, 8 और 12 मुखी

"वृद्धि बंध पहनने के बाद मैंने अपने भीतर गहरी शांति, भावनात्मक संतुलन और स्थिरता महसूस की है।

यह मेहनत की जगह नहीं लेता, लेकिन यह मुझे बिना तनाव के फैसले लेने और सकारात्मक सोच के साथ अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ने के लिए मजबूत स्पष्टता और आत्मविश्वास देता है।"

रविंद्रनाथ हेगड़े — अहमदाबाद

पहना गया संयोजन: 1 से 14 मुखी समृद्धि माला

"रुद्राक्ष को सक्रिय करने का सही विज्ञान समझने और पूरी माला पहनने के बाद मुझे ऐसी शांति, संतुष्टि और आत्मविश्वास मिला, जैसा पहले कभी महसूस नहीं हुआ था।

यह मुझे चौबीसों घंटे, सप्ताह के सातों दिन ईश्वर से जुड़ा हुआ महसूस कराती है। आखिरकार भगवान शिव की कृपा से मैं अपने करियर के सर्वोच्च स्तर पर पहुँचकर अधिकतम लाभों के साथ सेवानिवृत्त हुआ।"

डॉ. प्रदीप चक्रवर्ती — तेजपुर, असम

पहना गया संयोजन: 1 से 16 मुखी माला

"अपनी माला पहनने के बाद मैंने ज़्यादा मानसिक शांति और भावनात्मक स्थिरता महसूस की और मेरा तनाव काफ़ी कम हुआ।

पढ़ाई और ध्यान के दौरान मेरी एकाग्रता में काफ़ी सुधार हुआ, गुस्से पर मेरा नियंत्रण बेहतर हुआ और मुझे आध्यात्मिक सुरक्षा के साथ ईश्वर से गहरे जुड़ाव का अनुभव हुआ।"

अमरेंद्र जेना — हैदराबाद

पहना गया संयोजन: 1, 4, 5, 6, 7, 8 और 12 मुखी

"अपना रुद्राक्ष संयोजन पहनने के बाद मैंने अपने सोचने के तरीके, व्यवहार और एकाग्रता में बहुत सकारात्मक बदलाव महसूस किए हैं। भगवान शिव के साथ मेरा आध्यात्मिक जुड़ाव पहले से कहीं ज़्यादा गहरा हुआ है।

सबसे खास बात यह है कि हर बार जब मैं 15 दिनों वाला सफाई और रखरखाव की प्रक्रिया पूरा करता हूँ, तो मुझे अपने मन और शरीर में दोबारा एक अलग तरह की ऊर्जा महसूस होती है। इससे मेरी एकाग्रता काफ़ी तेज़ हुई है और मेरे समग्र स्वास्थ्य में भी बड़ा सुधार आया है।"

विक्रम एस. — उद्यमी, गुड़गाँव

पहना गया संयोजन: 5, 6, 7 मुखी विष्णु लक्ष्मी बंध और समृद्धि माला

"मैंने शुरुआत विष्णु लक्ष्मी बंध—5, 6 और 7 मुखी—से की थी। एक महीने के भीतर काम को लेकर मेरी बेचैनी पूरी तरह खत्म हो गई और मेरी आर्थिक स्थिति आखिरकार स्थिर होने लगी।

इन स्पष्ट परिणामों को देखने के बाद मैंने पूरी 1 से 14 मुखी समृद्धि माला पहननी शुरू की। ऐसा महसूस हुआ जैसे मेरे पूरे मानसिक और शारीरिक संयोजन को उन्नत कर दिया गया हो। बाधाएँ अपने आप खत्म होती हुई महसूस होती हैं और मेरा बिजनेस उन ऊँचाइयों तक पहुँचा है, जिनके बारे में मैंने कभी सोचा भी नहीं था।

मेरे लिए यह अंधविश्वास नहीं है—यह पूरी तरह जीवन बदल देने वाला साबित हुआ है।

अनुक्रमणिका

अध्याय 1: भगवान शिव.....	1
अध्याय 2: दिव्य उत्पत्ति और वनस्पति विज्ञान का अद्भुत चमत्कार.....	9
अध्याय 3: भ्रांतियों का अंत — शास्त्रों की सच्चाई बनाम आज के मिथक.....	20
अध्याय 4: पवित्रता के पीछे का विज्ञान — रुद्राक्ष मानव शरीर पर कैसे काम करता है.....	27
अध्याय 5: 4-स्तरीय गुणवत्ता जाँच प्रणाली (रुद्राक्ष की पहचान करने की सर्वोत्तम प्रणाली).....	32
अध्याय 6: नकली रुद्राक्षों की सच्चाई.....	42
अध्याय 7: ब्रह्मांडीय शक्ति का भंडार — 1 से 21 मुखी रुद्राक्ष का रहस्य.....	56
अध्याय 8: एक शक्तिशाली माला बनाने का सही तरीका.....	142
अध्याय 9: माला की बनावट — पिरोने का तरीका, धातुएँ और पवित्र सामग्री.....	148
अध्याय 10: रुद्राक्ष को सक्रिय करने, शरीर को उसके अनुकूल बनाने और उसकी देखभाल का विज्ञान.....	156
अध्याय 11: रुद्राक्ष और अंक ज्योतिष मार्गदर्शिका.....	165
अध्याय 12: रुद्राक्ष और ज्योतिष मार्गदर्शिका.....	170
अध्याय 13: पहले से तैयार शक्तिशाली रुद्राक्ष संयोजन.....	177
अध्याय 14: आयुर्वेद में रुद्राक्ष का उपयोग.....	184

अध्याय 15: पवित्र श्लोक—प्रसिद्ध श्लोक और उनके गहरे अर्थ	192
अध्याय 16: अंतिम जागरण.....	200
आपके लिए एक निःशुल्क उपहार और विशेष छूट.....	203
अंतिम आशीर्वचन	205
परिशिष्ट: प्रमुख शब्दों की विस्तृत शब्दावली.....	206
परिशिष्ट: रुद्राक्ष चयन की व्यावहारिक मार्गदर्शिका (पेशा एवं समस्या के अनुसार)	211

अध्याय 1:

भगवान शिव

अथर्ववेद

सौर्यमा स वरुणः स रुद्रः स महादेव।
रश्मिभिर्यम आभूतं महेंद्र एत्यावृतः॥

अर्थ: "वही अर्यमन हैं, वही वरुण हैं, वही रुद्र हैं, वही महादेव हैं। सूर्य की किरणों के रूप में वही पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त हैं और इंद्र के रूप में भी संपूर्ण सृष्टि में विचरण करते हैं।"

नमः शिवाय

रुद्राक्ष की अद्भुत शक्ति को वास्तव में समझने के लिए सबसे पहले उसके मूल स्रोत को समझना ज़रूरी है—भगवान शिव को।

रुद्राक्ष के बारे में जानने से पहले हमें उस परम सत्ता को समझना होगा, जिससे इसका जन्म हुआ।

हमारे प्राचीन शास्त्रों में भगवान शिव को **आदिदेव** (सबसे पहले प्रकट हुए देव) और **परब्रह्म** (संपूर्ण सृष्टि की परम और अंतिम सत्य) कहा गया है।

उन्हें इस ब्रह्मांड में प्रकट होने वाला प्रथम देव माना गया है। वे स्वयंभू सृष्टिकर्ता हैं, जिनसे एक अनंत दिव्य प्रकाश की किरण के माध्यम से पूरे ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई। आधुनिक विज्ञान जिस घटना को **महाविस्फोट** कहता है, हमारे वेद उसे **अ, उ और म (ॐ)** की दिव्य ध्वनि के प्रकट होने के रूप में बताते हैं।

भगवान शिव की महिमा कोई आधुनिक व्याख्या नहीं है, बल्कि एक सनातन सत्य है, जिसका उल्लेख हमारे सबसे प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। चारों वेदों में 160 से अधिक मंत्रों में उनकी स्तुति की गई है। उपनिषदों, पुराणों और श्रुतियों में भी उनका बार-बार वर्णन मिलता है।

वे केवल इस ब्रह्मांड का हिस्सा नहीं हैं—**वे स्वयं संपूर्ण ब्रह्मांड हैं।**

सभी मानवीय अभिव्यक्तियों के मूल स्रोत

भगवान शिव पूरे सृष्टि-चक्र के स्वामी हैं।

उन्हीं से हमें सृजन, पालन और संहार का वह शाश्वत नियम सीखने को मिलता है, जो केवल हमारे जीवन ही नहीं बल्कि पूरे ब्रह्मांड को संचालित करता है।

वे सर्वोच्च कलाकार हैं।

मानव की हर कला और हर अभिव्यक्ति की शुरुआत उन्हीं से होती है।

संगीत का स्रोत वही हैं।

नटराज के रूप में नृत्य के जन्मदाता वही हैं।

प्रेम और मिलन के दिव्य भाव के भी वही मूल स्रोत हैं।

हर रचनात्मक कला उन्हीं से उत्पन्न हुई है।

देवगण उनकी दिव्य शक्तियों और दायित्वों को संसार में आगे बढ़ाते हैं; किंतु इन सबका मूल स्रोत भगवान शिव ही हैं।

भोलेनाथ: सब पर समान कृपा करने वाले भगवान

असीम शक्ति के स्वामी होने के बावजूद भगवान शिव को **भोलेनाथ** कहा जाता है।

जब कोई भक्त सच्चे और निर्मल मन से उनकी आराधना करता है, तो वे एक निष्पक्ष और निष्कपट बालक की तरह उसकी प्रार्थना स्वीकार करते हैं।

वे किसी के साथ भेदभाव नहीं करते।

हमारी पौराणिक कथाओं में बार-बार देखने को मिलता है कि भगवान शिव देवताओं और असुरों—दोनों के साथ समान व्यवहार करते हैं।

चाहे देवताओं ने उनकी शरण लेकर रक्षा मांगी हो, या रावण और त्रिपुरासुर जैसे शक्तिशाली असुरों ने कठोर तपस्या की हो—भगवान शिव ने उनकी भक्ति और तप के अनुसार उन्हें वरदान दिया।

वे किसी का जन्म, कुल या पहचान नहीं देखते।

वे केवल उसके मन की भावना और उसकी भक्ति को देखते हैं।

यही भावना रुद्राक्ष का भी आधार है।

जिस तरह भगवान शिव किसी भी व्यक्ति के अतीत को देखकर नहीं, बल्कि उसकी श्रद्धा को देखकर कृपा करते हैं, उसी तरह रुद्राक्ष भी अपने धारण करने वाले पर बिना किसी भेदभाव के अपनी दिव्य ऊर्जा प्रदान करता है।

चाहे किसी की जाति, धर्म, संप्रदाय, लिंग या आयु कुछ भी हो—रुद्राक्ष सभी के लिए समान रूप से शुभ है।

समाज में कई तरह की गलत धारणाएँ फैली हुई हैं—जैसे महिलाएँ, बुजुर्ग या सांसारिक जीवन जीने वाले लोग रुद्राक्ष नहीं पहन सकते।

लेकिन शास्त्र स्पष्ट रूप से बताते हैं कि राजा से लेकर किसी भटकती हुई राक्षसी तक—भगवान शिव की कृपा सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध है।

भगवान शिव की शक्ति को अपने जीवन में जागृत करने के लिए सबसे ज़रूरी चीज़ आपका सामाजिक परिचय नहीं, बल्कि आपकी अटूट श्रद्धा और दृढ़ विश्वास है।

रुद्र के 1,008 नाम और उनकी महिमा

हमारे शास्त्रों में भगवान शिव का वर्णन **1,008 से भी अधिक नामों** से की गई है। उनका हर नाम उनके अनंत स्वरूप और व्यक्तित्व के एक अलग पहलू को दर्शाता है। हम उन्हें **महादेव** (देवों के देव), **शंकर** (आनंद प्रदान करने वाले), **शिव** (कल्याणकारी) और **ईशान** (अदृश्य एवं सर्वव्यापी भगवान) जैसे अनेक नामों से जानते हैं।

लेकिन इन सभी नामों में "**रुद्र**" नाम का विशेष और अत्यंत गहरा महत्व है। सबसे प्राचीन वेद, **ऋग्वेद (1.43.5)** में भगवान शिव के रुद्र स्वरूप की सुंदर स्तुति की गई है—

**यः शुक्र इव सूर्यो हिरण्यमिव रोचते ।
श्रेष्ठो देवानां वसुः ॥**

अर्थ: "जो सूर्य की तरह तेजस्वी हैं, जो शुद्ध स्वर्ण की भाँति चमकते हैं, वे रुद्र देवताओं में सबसे श्रेष्ठ हैं और सभी प्रकार के कल्याण एवं आशीर्वाद प्रदान करने वाले हैं।"

शिव पुराण के अनुसार, "**रुद्र**" का एक अर्थ यह भी है—"**वह जो मनुष्य के सभी दुःख और कष्टों को दूर कर दे।**"

जब हम **रुद्र** और **अक्ष** (नेत्र या आँसू) इन दोनों शब्दों को मिलाते हैं, तब **रुद्राक्ष** का अर्थ स्पष्ट हो जाता है। रुद्राक्ष वास्तव में भगवान शिव की करुणा का साकार रूप है—वे दिव्य, तेजस्वी आँसू जो उन्होंने मानव जाति के दुःखों को दूर करने के लिए बहाए।

साकार और निराकार: शिवलिंग का रहस्य

सनातन धर्म में भगवान शिव एकमात्र ऐसे देवता हैं जिनकी पूजा दो अलग-अलग रूपों में की जाती है — **साकार रूप**, अर्थात् मूर्ति, चित्र या हिमालय में ध्यानमग्न भगवान शिव के रूप में।

और **निराकार रूप**, अर्थात् शिवलिंग के रूप में, जो उस अनंत, निराकार परम सत्य का प्रतीक है।

शिवलिंग का महत्व अत्यंत व्यापक है और इसका विस्तार से वर्णन **लिंग पुराण** में मिलता है।

शास्त्रों के अनुसार, देवताओं के दिव्य वास्तुकार **भगवान विश्वकर्मा** ने शिवलिंग का भौतिक स्वरूप बनाया, ताकि देवता और मनुष्य उस अनंत एवं निराकार भगवान शिव की उपासना कर सकें।

शिवलिंग की संरचना स्वयं पूरे ब्रह्मांड और त्रिदेव का प्रतीक मानी जाती है।

कहा जाता है कि—

- शिवलिंग का **निचला, अदृश्य भाग** भगवान **ब्रह्मा** (सृष्टिकर्ता) का प्रतिनिधित्व करता है।
- **मध्य का बेलनाकार भाग** भगवान **विष्णु** (पालनकर्ता) का प्रतीक है।
- **सबसे ऊपरी भाग** भगवान **शिव** (संहारक और पुनः सृष्टि करने वाले) का प्रतिनिधित्व करता है।

शिवलिंग के चारों ओर स्थित **वेदी (योनि)** देवी **पार्वती**, अर्थात् आदिशक्ति का प्रतीक मानी जाती है।

इस प्रकार केवल शिवलिंग के सामने श्रद्धा से प्रणाम करना और उसकी पूजा करना ही ब्रह्मा, विष्णु, शिव और शक्ति—चारों की एक साथ उपासना करने के समान माना गया है।

शिवलिंग पूरे ब्रह्मांड का सर्वोच्च प्रतीक है। यह हमें याद दिलाता है कि समस्त सृष्टि की उत्पत्ति निराकार से हुई है और अंततः सब कुछ उसी निराकार परम सत्य में विलीन हो जाएगा।

भगवान शिव का दिव्य स्वरूप और उनके प्रतीकों का रहस्य

जब भगवान शिव की पूजा उनके **साकार रूप** में की जाती है, तब उनके शरीर पर धारण किए गए प्रत्येक आभूषण, प्रत्येक प्रतीक और प्रत्येक वस्तु का गहरा आध्यात्मिक और ब्रह्मांडीय अर्थ होता है।

जैसा कि पुराणों में वर्णित है और हमारे विस्तृत अध्ययन में भी समझाया गया है, ये केवल अलंकरण नहीं हैं, बल्कि मानव जीवन के लिए गहन आध्यात्मिक शिक्षाएँ हैं।

- **तीसरा नेत्र (त्रिनेत्र)**

भगवान शिव के ललाट के मध्य स्थित तीसरा नेत्र आध्यात्मिक ज्ञान, ब्रह्मांडीय चेतना और अज्ञान के विनाश का प्रतीक है।

उनकी दो सामान्य आँखें भौतिक और द्वैत से भरे संसार को देखती हैं, जबकि तीसरा नेत्र भीतर की ओर देखता है और परम सत्य का अनुभव करता है।

जब यह नेत्र प्रचंड क्रोध में खुलता है, तो उससे निकलने वाली अग्नि बुराई और अहंकार का नाश कर देती है।

इसी तीसरे नेत्र की अग्नि से भगवान शिव ने कामदेव (कामना के देवता) को भस्म कर दिया था।

यह नेत्र सामान्य दृष्टि से परे जागृत चेतना का सर्वोच्च प्रतीक है।

- **भस्म (पवित्र राख)**

भगवान शिव अपने पूरे शरीर पर भस्म धारण करते हैं।

यह भस्म मुख्य रूप से पवित्र श्मशान की राख अथवा कुछ विशेष पवित्र वृक्षों (जैसे पीपल) की लकड़ी और गोबर से तैयार की जाती है।

भस्म इस ब्रह्मांड के उस अंतिम और अटल सत्य का प्रतीक है कि एक दिन हर भौतिक वस्तु राख में बदल जाएगी।

यह हमें निरंतर हमारी नश्वरता का स्मरण कराती है और अहंकार, धन तथा सांसारिक मोह का त्याग करने की प्रेरणा देती है।

भगवान शिव अपने मस्तक पर जो **त्रिपुण्ड** (तीन क्षैतिज रेखाएँ) लगाते हैं, वह ब्रह्मा, विष्णु और महेश—त्रिदेव का प्रतीक है।

साथ ही यह हमें याद दिलाता है कि शरीर नश्वर है, लेकिन आत्मा सदैव अमर रहती है।

- **त्रिशूल**

भगवान शिव का त्रिशूल प्रकृति के तीन गुणों—

- **सत्त्व** (पवित्रता),
- **रजस** (क्रियाशीलता),
- **तमस** (जड़ता और अंधकार)

का प्रतीक है।

यह भूत, वर्तमान और भविष्य—समय के तीनों आयामों पर भगवान शिव के पूर्ण नियंत्रण को भी दर्शाता है।

- **डमरू**

भगवान शिव के हाथ में रहने वाला डमरू सृष्टि की लयबद्ध ब्रह्मांडीय ध्वनि का प्रतीक है।

मान्यता है कि ब्रह्मांड की पहली ध्वनि ॐ तथा सभी भाषाओं के व्याकरण का मूल स्वरूप भगवान शिव के डमरू की ध्वनि से ही प्रकट हुआ।

- **सर्प (वासुकी)**

भगवान शिव के गले में विराजमान सर्प मानव शरीर में स्थित जागृत **कुंडलिनी शक्ति** का प्रतीक है।

यह भय, मृत्यु और समय पर भगवान शिव की पूर्ण विजय को भी दर्शाता है।

अपने गले में विषैले सर्प को धारण करके भगवान शिव यह संदेश देते हैं कि वे हर जीव को—चाहे वह कितना ही भयावह या समाज द्वारा तिरस्कृत क्यों न हो—अपनी शरण में स्वीकार करते हैं।

- **अर्धचंद्र**

भगवान शिव की जटाओं पर सुशोभित अर्धचंद्र समय और मानव मन की बदलती हुई प्रकृति का प्रतीक है।

चंद्रमा को धारण करके भगवान शिव यह बताते हैं कि उन्होंने अपने मन पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर लिया है।

इसी कारण वे बाहरी परिस्थितियाँ कैसी भी हों, सदैव शांत, स्थिर और संतुलित रहते हैं।

- **जटाओं में गंगा**

भगवान शिव की जटाओं से प्रवाहित होने वाली माँ गंगा ज्ञान, पवित्रता और ईश्वरीय कृपा के निरंतर प्रवाह का प्रतीक है।

जब गंगा स्वर्ग से पृथ्वी पर उतर रही थी, तब उनका वेग इतना प्रचंड था कि पृथ्वी उसका आघात सह नहीं सकती थी।

भगवान शिव ने उन्हें अपनी जटाओं में धारण करके उनके वेग को नियंत्रित किया और फिर धीरे-धीरे पृथ्वी पर प्रवाहित किया।

यह उनकी उस अद्वितीय शक्ति का प्रतीक है, जो विनाशकारी ऊर्जा को भी जीवनदायी शक्ति में बदल सकती है।

- **नंदी (बैल)**

नंदी केवल भगवान शिव का वाहन नहीं हैं, बल्कि उनके सबसे बड़े और सबसे समर्पित भक्त भी हैं।

वे **धर्म**, अटूट भक्ति और निष्कलंक आनंद का प्रतीक हैं।

शिव के सामने सदैव प्रतीक्षा की मुद्रा में बैठे नंदी हमें धैर्य, समर्पण और ईश्वर के प्रति अटल निष्ठा का महत्व सिखाते हैं।

- **रुद्राक्ष**

भगवान शिव अपने गले, भुजाओं और कलाइयों में रुद्राक्ष धारण करते हैं।

ये रुद्राक्ष उनके अपने करुणामय आँसुओं का स्वरूप हैं।

स्वयं रुद्राक्ष धारण करके भगवान शिव यह आदर्श स्थापित करते हैं कि वास्तविक संपत्ति सोना, चाँदी या आभूषण नहीं, बल्कि आध्यात्मिकता और ईश्वर से जुड़ाव है।

इन सभी प्रतीकों को समझने के बाद हमें एहसास होता है कि भगवान शिव का संपूर्ण स्वरूप आध्यात्मिक जागरण का एक पूर्ण मार्गदर्शक है।

वे हमें सिखाते हैं कि भय पर विजय कैसे पाई जाए, अहंकार से कैसे ऊपर उठा जाए, हर परिस्थिति में संतुलित कैसे रहा जाए और जीवन के परम सत्य को कैसे स्वीकार किया जाए।

भगवान शिव के इस गहरे स्वरूप को समझे बिना उस दिव्य ऊर्जा को पूरी तरह नहीं समझा जा सकता, जिसे उन्होंने मानवता के कल्याण के लिए **रुद्राक्ष** के रूप में इस धरती पर छोड़ दिया।

अध्याय 2:

दिव्य उत्पत्ति और वनस्पति विज्ञान का अद्भुत चमत्कार

नमः शिवाय

रुद्राक्ष के चमत्कार और उसकी शक्ति को वास्तव में समझने के लिए सबसे पहले यह जानना ज़रूरी है कि वह इस धरती पर कैसे आया।

आखिर एक दिव्य ब्रह्मांडीय ऊर्जा एक ऐसे वास्तविक बीज में कैसे बदल गई, जिसे हम अपने हाथों में पकड़ सकते हैं, धारण कर सकते हैं और श्रद्धा के साथ पूज सकते हैं?

इसका उत्तर हमारे सबसे प्राचीन ग्रंथों—विशेष रूप से **श्रीमद् देवी भागवत**, **देवी पुराण** और **शिव पुराण**—में वर्णित एक अत्यंत सुंदर और प्रभावशाली कथा में मिलता है।

त्रिपुरासुर और भगवान शिव के आँसुओं की कथा

हज़ारों वर्ष पहले **त्रिपुरासुर** नाम का एक अत्यंत शक्तिशाली असुर हुआ, जिसने पूरे ब्रह्मांड में भारी विनाश मचा दिया।

वह इतना शक्तिशाली, अत्याचारी और अहंकारी बन गया कि उसने देवताओं को भी आसानी से पराजित कर दिया। यहाँ तक कि भगवान ब्रह्मा और भगवान विष्णु भी उसके आतंक को रोक नहीं पाए।

जब पूरा ब्रह्मांड असहनीय पीड़ा से भर गया, तब देवता सहायता के लिए भगवान शिव की शरण में पहुँचे।

त्रिपुरासुर को एक विशेष वरदान प्राप्त था, जिसके कारण उसका वध केवल एक अत्यंत विशिष्ट और सर्वोच्च दिव्य अस्त्र **अघोर** से ही संभव था।

जैसा कि **श्रीमद् देवी भागवत** में सुंदर ढंग से वर्णित है, उस दिव्य अस्त्र को प्राप्त करने और उस पर पूर्ण अधिकार पाने के लिए भगवान शिव गहन तपस्या में लीन हो गए।

उन्होंने पूरे एक हजार वर्षों तक बिना पलक झपकाए, आँखें पूरी तरह खुली रखकर ध्यान किया।

जब उनकी तपस्या पूरी हुई और वह दिव्य अस्त्र त्रिपुरासुर का संहार करने के लिए तैयार हो गया, तब भगवान शिव ने चारों ओर फैले विनाश को देखा।

मानव जाति और देवताओं की असहनीय पीड़ा, दुःख और कष्ट देखकर उनका हृदय गहरी करुणा से भर उठा।

उनकी बिना पलक झपकाए खुली आँखों से दुःख और निष्काम प्रेम के आँसू धरती पर गिरने लगे।

हमारे शास्त्र बताते हैं कि जहाँ-जहाँ भगवान शिव के ये दिव्य आँसू पृथ्वी पर गिरे, वहीं सबसे पहले **रुद्राक्ष के वृक्ष** उत्पन्न हुए।

रुद्राक्ष के 38 प्रकार

देवी पुराण के प्राचीन ग्रंथों के अनुसार रुद्राक्ष की उत्पत्ति केवल करुणा की कहानी नहीं है, बल्कि यह ब्रह्मांड में फैली अराजकता के विरुद्ध एक सर्वोच्च दिव्य अस्त्र की रचना की कथा भी है।

शास्त्रों में **त्रिपुर** नाम की एक विनाशकारी शक्ति का वर्णन मिलता है। वह इतना शक्तिशाली था कि उसने पूरे ब्रह्मांड की दिव्य शक्तियों को अपने अधीन कर लिया था। उसने सृष्टि के रचयिता भगवान ब्रह्मा और पालनकर्ता भगवान विष्णु की शक्तियों को भी परास्त कर दिया था।

जब भगवान शिव ने देखा कि सामान्य दिव्य शक्तियाँ ब्रह्मांड में फिर से संतुलन स्थापित करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं, तब वे पूर्ण एकाग्रता की अवस्था में प्रवेश कर गए।

लगातार **एक सहस्र वर्ष** तक उन्होंने एक क्षण के लिए भी अपनी आँखें बंद नहीं कीं।

वे उस सटीक दिव्य ऊर्जा और शक्ति की खोज कर रहे थे, जो इस अभूतपूर्व संकट का अंत कर सके।

जब उनकी यह ब्रह्मांडीय एकाग्रता अपने सर्वोच्च शिखर पर पहुँची, तब उस अपार ऊर्जा के प्रभाव से उनकी आँखों से अत्यधिक तनाव के आँसू पृथ्वी पर गिरे।

जहाँ-जहाँ वे आँसू गिरे, वहीं तत्काल पवित्र **रुद्राक्ष के वृक्ष** उग आए।

लेकिन इन वृक्षों पर केवल एक ही प्रकार के रुद्राक्ष नहीं लगे।

भगवान शिव के तीनों नेत्रों की अलग-अलग दिव्य ऊर्जा से उत्पन्न होने के कारण इन वृक्षों पर **कुल 38 प्रकार के रुद्राक्ष** प्रकट हुए।

देवी पुराण इनका वर्गीकरण इस प्रकार करता है—

- **सूर्य मंडल (दाहिना नेत्र)**

भगवान शिव के दाहिने नेत्र से गिरे आँसुओं से **12 प्रकार के रुद्राक्ष** उत्पन्न हुए।

इनमें सूर्य की सक्रिय और ऊष्मा उत्पन्न करने वाली ऊर्जा विद्यमान होती है।

इसी कारण इन रुद्राक्षों का प्राकृतिक रंग तॉबे जैसा चमकीला होता है।

- **चंद्र मंडल (बायाँ नेत्र)**

भगवान शिव के बाएँ नेत्र से गिरे आँसुओं से **16 प्रकार के रुद्राक्ष** उत्पन्न हुए।

इन रुद्राक्षों में चंद्रमा की शीतल, संतुलित और ग्रहणशील ऊर्जा होती है।

- **अग्नि मंडल (तीसरा नेत्र)**

भगवान शिव के तीसरे नेत्र से गिरे आँसुओं से **10 प्रकार के रुद्राक्ष** उत्पन्न हुए।

इनमें अग्नि तत्व की प्रचंड, परिवर्तनकारी और परम शक्ति समाहित होती है।

इसी कारण इन रुद्राक्षों का प्राकृतिक रंग गहरा काला माना जाता है।

इस प्रकार कुल **38 प्रकार के रुद्राक्ष** बताए गए हैं।

शास्त्रों के अनुसार रुद्राक्षों के अलग-अलग प्रकार और उनके रंग किसी संयोग या प्राकृतिक विकास की आकस्मिक घटना नहीं हैं।

वे सुव्यवस्थित ब्रह्मांडीय संरचनाएँ हैं, जिन्हें विशेष प्रकार की दिव्य ऊर्जा धारण करने वाले व्यक्ति तक पहुँचाने के उद्देश्य से बनाया गया है।

भगवान शिव की कृपा का वचन

भगवान शिव ने केवल अपने आँसू बहाकर मानवता को उसके हाल पर नहीं छोड़ दिया। उन्होंने एक सुंदर और शाश्वत वचन दिया। उन्होंने रुद्राक्ष को अपनी कृपा के प्रत्यक्ष स्वरूप के रूप में पृथ्वी पर स्थापित किया, ताकि वह मानव चेतना की रक्षा करे और उसे ऊँचे आध्यात्मिक स्तर तक पहुँचाए।

भगवान शिव का यह दिव्य वचन **शिव पुराण के विद्येश्वर संहिता**, अध्याय 25, श्लोक 6 और 7 में मिलता है। यहाँ भगवान शिव स्वयं माता पार्वती को रुद्राक्ष की उत्पत्ति के बारे में बताते हैं—

तदाश्रुबिन्दवः पेतुर्नेत्रेभ्यो भूतले प्रिये ।

तदाश्रुबिन्दुजातानि रुद्राक्षाणि महेश्वरी ॥

स्थावरत्वं प्रपन्नानि भक्तानामनुग्रहार्थं वै ।।

अर्थ: "हे प्रिये (पार्वती)! मेरी आँखों से जो आँसू पृथ्वी पर गिरे, उन्हीं आँसुओं से रुद्राक्ष के वृक्ष उत्पन्न हुए। हे महेश्वरी! इन वृक्षों का प्रकट होना विशेष रूप से भक्तों पर कृपा करने, उन्हें आशीर्वाद देने और उनके कल्याण के लिए हुआ है।"

इसी प्रत्यक्ष वचन के कारण रुद्राक्ष धारण करना सर्वोच्च शुभ कर्म माना जाता है। जिस मानसिक शांति और आध्यात्मिक पुण्य की प्राप्ति पवित्र नदियों में स्नान करने या वेदों का अध्ययन करने से होती है, वही श्रद्धा और सच्चे विश्वास के साथ रुद्राक्ष धारण करने से भी प्राप्त हो सकती है।

नील-मणि वृक्ष और नीलकंठ से उसका संबंध

अब पौराणिक कथा से आगे बढ़कर इसके वास्तविक स्वरूप को समझते हैं।

भगवान शिव के आँसू पृथ्वी पर एक अद्भुत वनस्पति चमत्कार के रूप में प्रकट हुए। रुद्राक्ष का वृक्ष अपने आप में अत्यंत भव्य और विशाल होता है।

क्षेत्र और जलवायु के अनुसार ये सदाबहार वृक्ष लगभग **15 से 30 मीटर** तक ऊँचे हो सकते हैं। नेपाल में पाए जाने वाले विशाल वृक्ष अक्सर **20 मीटर से भी अधिक ऊँचाई** तक पहुँच जाते हैं।

इनका तना भी काफ़ी मोटा होता है, जिसका व्यास लगभग **1.25 मीटर** तक हो सकता है। यही मजबूत तना इन्हें पर्वतीय मिट्टी में मजबूती से खड़ा रखता है।

जब इस वृक्ष पर फल लगते हैं, तो शुरुआत में वे चमकीले हरे रंग के होते हैं। पकने के बाद उनका रंग बदलकर गहरा नीला या बैंगनी हो जाता है।

इसी कारण पूरी दुनिया में इसे **नील-मणि वृक्ष** के नाम से जाना जाता है।

इस फल का गहरा नीला रंग केवल प्रकृति का संयोग नहीं है, बल्कि इसका गहरा आध्यात्मिक महत्व भी है।

यह भगवान शिव के **नीलकंठ** स्वरूप का प्रत्यक्ष प्रतीक माना जाता है।

समुद्र मंथन के दौरान जब देवताओं और असुरों ने मिलकर क्षीरसागर का मंथन किया, तब सबसे पहले अत्यंत घातक **हलाहल विष** निकला, जिसने पूरे ब्रह्मांड के विनाश का खतरा पैदा कर दिया।

समस्त सृष्टि की रक्षा के लिए भगवान शिव ने उस विष को स्वयं ग्रहण कर लिया। लेकिन उन्होंने उसे अपने कंठ से नीचे नहीं उतरने दिया। विष उनके

कंठ में ही ठहर गया, जिससे उनका कंठ नीला हो गया और वे **नीलकंठ** कहलाए।

जिस प्रकार भगवान शिव ने उस घातक विष को अपने कंठ में रोककर संसार की रक्षा की, उसी प्रकार रुद्राक्ष का नीला फल अपने भीतर स्थित पवित्र और जीवनदायी बीज की सुरक्षा करता है।

एलिओकार्पस का वैश्विक विस्तार

आधुनिक वनस्पति विज्ञान में रुद्राक्ष एलिओकार्पस वंश के अंतर्गत आता है।

इस नाम का अर्थ भी इसके स्वभाव को दर्शाता है। ग्रीक भाषा में **एलाएओ** का अर्थ है "तेल" और **कार्पस** का अर्थ है "फल"। **एलिओकार्पस**, जैतून कुल का सदस्य है।

दुनिया भर में एलिओकार्पस की लगभग 350 प्रजातियाँ पाई जाती हैं।

हालाँकि इसकी कुछ प्रजातियाँ हवाई और न्यूजीलैंड जैसे देशों में भी मिलती हैं, लेकिन हमें केवल उन क्षेत्रों पर ध्यान देना चाहिए जहाँ ऐसे रुद्राक्ष उत्पन्न होते हैं जिन्हें धारण किया जा सकता है और जो आध्यात्मिक दृष्टि से प्रभावशाली माने जाते हैं।

रुद्राक्ष का वास्तविक आध्यात्मिक विस्तार इन देशों तक फैला हुआ है--नेपाल, इंडोनेशिया, भूटान, म्यांमार, चीन, मलेशिया, श्रीलंका।

केवल भारत में ही रुद्राक्ष की **26 से अधिक अलग-अलग किस्में** विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में पाई जाती हैं।

ये मुख्य रूप से निम्न राज्यों में मिलती हैं— उत्तराखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल, सिक्किम, असम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, मिज़ोरम, त्रिपुरा, ओडिशा, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह।

हालाँकि **एलिओकार्पस** की सभी **350 प्रजातियाँ** समान नहीं हैं।

आध्यात्मिक उपयोग और ब्रह्मांडीय ऊर्जा के प्रभाव को ध्यान में रखते हुए मुख्य रूप से चार वैज्ञानिक रूप से वर्गीकृत प्रजातियों को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है।

धारण करने योग्य रुद्राक्ष की चार प्रमुख किस्में

1. एलिओकार्पस गैनिट्रस (सर्वश्रेष्ठ नेपाली रुद्राक्ष)

यह प्रामाणिक और ए-श्रेणी का नेपाली रुद्राक्ष है। दुनिया भर में होने वाले कुल रुद्राक्ष उत्पादन का केवल लगभग **25%** इसी प्रजाति से प्राप्त होता है। गुणवत्ता के मामले में इसे सबसे श्रेष्ठ माना जाता है।

इस प्रजाति के रुद्राक्ष आकार में सबसे बड़े, पूरी तरह संतुलित और प्राकृतिक रूप से बने होते हैं। इनमें बीच में प्राकृतिक छेद होता है। इनकी बाहरी मुखियाँ (रेखाएँ) गहरी और स्पष्ट दिखाई देती हैं तथा अंदर बने प्राकृतिक खंडों से पूरी तरह मेल खाती हैं।

यह प्रजाति नेपाल के ऊपरी हिमालयी क्षेत्रों के अलावा भारत के असम, पश्चिम बंगाल और सिक्किम में भी पाई जाती है।

इनमें पारंपरिक रूप से माला में पिरोने के लिए आवश्यक प्राकृतिक "मुख" और "पूँछ" का निर्माण होता है। इसी कारण इसे धारण करने के लिए सबसे शक्तिशाली रुद्राक्ष माना जाता है।

2. एलिओकार्पस स्फेरिकस (इंडोनेशिया/जावा की प्रचुर मात्रा में मिलने वाली प्रजाति)

यह प्रजाति मुख्य रूप से इंडोनेशिया के जावा द्वीप में पाई जाती है और दुनिया में होने वाले कुल रुद्राक्ष उत्पादन का लगभग **65%** हिस्सा इसी से आता है।

हालाँकि यह बी-श्रेणी का रुद्राक्ष है और इसमें भी प्राकृतिक छेद तथा सही प्रकार से बने आंतरिक खंड मौजूद होते हैं, लेकिन आकार में यह नेपाली रुद्राक्ष की तुलना में काफी छोटा होता है।

इसकी बाहरी सतह बहुत अधिक चिकनी होती है। इसलिए इसकी मुखियाँ (रेखाएँ) सामान्य आँखों से लगभग दिखाई नहीं देतीं।

कई बार बाहर से देखने पर ऐसा लगता है मानो इसमें कोई मुखी है ही नहीं। यही कारण है कि विशेषकर **14 मुखी से ऊपर** के रुद्राक्षों में बिना एक्स-रे के सही मुखी की पहचान करना बहुत कठिन हो जाता है।

3. एलिओकार्पस ट्यूबरकुलेटस (दक्षिण भारत की वैकल्पिक प्रजाति)

यह भारत की सी-श्रेणी की प्रजाति है, जो मुख्य रूप से दक्षिण भारत के तमिलनाडु, कूर्ग, मैसूर, नीलगिरि, पलनी और अन्नामलाई पर्वतीय क्षेत्रों में पाई जाती है।

इस प्रजाति के रुद्राक्ष चपटे और अंडाकार होते हैं।

बाज़ार में यह **काजू दाना** या **एकमुखी चंद्राकार (अर्धचंद्राकार)** रुद्राक्ष के नाम से बहुत प्रसिद्ध है।

चूँकि पूर्णतः गोल नेपाली **एकमुखी रुद्राक्ष** प्राकृतिक रूप से नहीं पाया जाता, इसलिए इस रुद्राक्ष को उसके विकल्प के रूप में व्यापक रूप से धारण किया जाता है।

यह **भद्राक्ष** श्रेणी में आता है, जिसका उल्लेख शिव पुराण में रुद्राक्ष की एक दूर की और निम्न श्रेणी की संबंधित प्रजाति के रूप में मिलता है।

यह न तो गोल होता है, न ही इसमें प्राकृतिक मुख और पूँछ होती है। इसे माला में पिरोने के लिए बीच में कृत्रिम रूप से छेद करना पड़ता है।

4. एलिओकार्पस सिक्किमेन्सिस (हिमालय की तराई का भद्राक्ष)

यह प्रजाति मुख्य रूप से हरिद्वार और देहरादून के आसपास हिमालय की तराई वाले क्षेत्रों में पाई जाती है।

बाज़ार में इसे अक्सर स्थानीय **1 मुखी, 2 मुखी और 3 मुखी** रुद्राक्ष के रूप में बेचा जाता है।

दक्षिण भारत में मिलने वाले एलिओकार्पस ट्यूबरकुलेटस की तरह यह भी चपटा और अंडाकार होता है। इसमें न तो गोल आकार होता है और न ही प्राकृतिक रूप से बना केंद्रीय छेद।

हालाँकि यह बाज़ार में काफ़ी प्रचलित है, लेकिन यह श्रेष्ठ गैनिट्स प्रजाति का नहीं, बल्कि **भद्राक्ष** परिवार का सदस्य है।

बीज के भीतर बीज: प्रकृति का अनसुलझा चमत्कार

वनस्पति विज्ञान का यह एक अद्भुत तथ्य है कि **रुद्राक्ष दुनिया का एकमात्र ऐसा फल है, जिसका बीज पृथ्वी पर पाए जाने वाले अन्य सभी फलों के बीजों से बिल्कुल अलग दिखाई देता है।**

इतना ही नहीं, रुद्राक्ष वास्तव में **"बीज के भीतर बीज"** है।

जब इस दिव्य फल का बाहरी नीला छिलका हटाया जाता है, तब उसके भीतर एक कठोर, लकड़ी जैसा और गहरी धारियों वाला खोल दिखाई देता है।

इस कठोर खोल के भीतर बहुत व्यवस्थित तरीके से बने कई छोटे-छोटे खंड होते हैं।

और इन्हीं खंडों के अंदर उसके वास्तविक, सूक्ष्म बीज मौजूद होते हैं।

बाहरी मुखियों (रेखाओं) और अंदर बने इन खंडों का एक-दूसरे से पूरी तरह मेल खाना एक ऐसा अद्भुत प्राकृतिक रहस्य है, जिसकी दिव्य उत्पत्ति को आधुनिक विज्ञान आज भी पूरी तरह समझा नहीं पाया है।

रुद्राक्ष के फलने और तैयार होने की प्रक्रिया

इन दिव्य बीजों का पूरा जीवनचक्र प्रकृति की एक सुंदर और निश्चित लय का पालन करता है—

- **परिपक्व होना:** रुद्राक्ष का एक युवा वृक्ष सामान्यतः अपनी तीसरे से सातवें वर्ष के बीच फल देना शुरू करता है। यह समय उस क्षेत्र की जलवायु और भौगोलिक परिस्थितियों पर निर्भर करता है।
- **फूल आने का मौसम (अप्रैल से मई):** इस समय वृक्ष पर छोटे-छोटे सफेद, घंटी के आकार के फूल बड़े-बड़े गुच्छों में खिलते हैं।
- **फल बनने और पकने का समय (जून से अगस्त):** फूलों की जगह धीरे-धीरे हरे, बेर जैसे फल आने लगते हैं, जो समय के साथ आकार में बड़े होते जाते हैं।

- **फल तोड़ने का मौसम (सितंबर से नवंबर):** पूरी तरह पकने पर इन फलों का रंग गहरा नीला हो जाता है। सही और नैतिक तरीके से इन्हें इकट्ठा करने का अर्थ है कि पेड़ से स्वयं गिर चुके गहरे नीले फलों को ज़मीन से उठाया जाए। इससे यह सुनिश्चित होता है कि भीतर का बीज पूरी तरह परिपक्व, भारी और अपनी अधिकतम ब्रह्मांडीय शक्ति से युक्त है।
- **प्रसंस्करण:** एकत्र किए गए नीले फलों को कई दिनों तक पानी में भिगोया जाता है, ताकि उनका गूदेदार भाग नरम हो जाए। इसके बाद उनका छिलका उतारकर उन्हें तार वाले ब्रश से अच्छी तरह साफ़ किया जाता है। अंत में कठोर रुद्राक्ष को लगभग एक सप्ताह तक धूप में सुखाया जाता है। इसके बाद ही वह माला में पिरोने के लिए तैयार होता है।

भौगोलिक पहचान: वास्तविक गुणवत्ता का रहस्य

मैंने हमेशा अपनी शिक्षाओं की शुरुआत में एक बात कही है—

"रुद्राक्ष में सबसे ज़्यादा महत्व उसकी गुणवत्ता का है, केवल असली होने का नहीं।"

ज़्यादातर लोग इस बात को लेकर परेशान रहते हैं कि उनका **5 मुखी** या **7 मुखी** रुद्राक्ष असली है या नकली।

सच्चाई यह है कि **3 मुखी से 12 मुखी** तक के रुद्राक्षों में नकली मिलने की संभावना बहुत कम होती है।

असल अंतर **गुणवत्ता** का होता है, और यह गुणवत्ता पूरी तरह उस रुद्राक्ष के **भौगोलिक क्षेत्र** और **समुद्र तल से उसकी ऊँचाई** पर निर्भर करती है।

इसलिए किसी भी खरीदार या धारण करने वाले को केवल उसकी प्रजाति का नाम देखकर निर्णय नहीं लेना चाहिए, बल्कि यह भी देखना चाहिए कि वह वास्तव में किस भौगोलिक क्षेत्र में उगा है।

अधिक ऊँचाई वाले क्षेत्रों में उगने वाला रुद्राक्ष पकने में काफ़ी अधिक समय लेता है।

कठोर और अत्यधिक ठंडे वातावरण में लंबे समय तक पकने के कारण वह रुद्राक्ष अधिक घना, गहरी धारियों वाला, आकार में बड़ा और वजन में भारी होता है, जबकि मैदानी क्षेत्रों में उगा रुद्राक्ष अपेक्षाकृत हल्का और छोटा होता है।

उदाहरण के लिए, असम-नेपाल सीमा के निचले और अपेक्षाकृत गर्म क्षेत्रों में उगने वाले **एलिओकार्पस गैनिट्रस** की तुड़ाई जुलाई के अंत तक शुरू हो जाती है।

नेपाल के निचले इलाकों में भी इस प्रजाति के वृक्ष मिलते हैं, लेकिन इन्हें सर्वोच्च गुणवत्ता वाला नहीं माना जाता।

वास्तव में सबसे श्रेष्ठ और उच्च गुणवत्ता वाले नेपाली रुद्राक्ष केवल नेपाल के ऊँचाई वाले विशेष क्षेत्रों—**भोजपुर, अरुण और डिंगला घाटियों**—से ही प्राप्त होते हैं।

ये घाटियाँ अत्यधिक ठंडी हैं और **कैलाश मानसरोवर**, जो भगवान शिव का शाश्वत निवास माना जाता है, उसके आध्यात्मिक प्रभाव क्षेत्र में स्थित हैं।

इसी कारण यहाँ रुद्राक्ष की तुड़ाई अपेक्षाकृत देर से, अर्थात् **सितंबर से नवंबर** के बीच होती है।

इन रुद्राक्षों को सबसे शुद्ध ब्रह्मांडीय ऊर्जा प्राप्त होती है, जिसके कारण ये दुनिया के सबसे भारी, सबसे शक्तिशाली और सबसे संतुलित रुद्राक्ष माने जाते हैं।

जब आप ऊँचाई वाले नेपाली क्षेत्र का रुद्राक्ष धारण करते हैं, तो वास्तव में आप भगवान शिव के धाम के निकट गिरे करुणा के एक पूर्ण रूप से परिपक्व आँसू को धारण कर रहे होते हैं।

अध्याय 3:

भ्रांतियों का अंत — शास्त्रों की सत्त्वाई बनाम आज के मिथक

नमः शिवाय

जब आप पहली बार रुद्राक्ष को अपने हाथ में लेते हैं, तो मन अपने आप श्रद्धा से भर जाता है। लेकिन बहुत से लोगों के मन में इसके तुरंत बाद डर भी पैदा हो जाता है।

"क्या मैं इसे पहन सकता हूँ?"

"अगर मैंने कुछ गलत खा लिया तो?"

"अगर मैं अशुद्ध हुआ तो?"

इन्हीं डर और भ्रांतियों ने लाखों सच्चे साधकों को रुद्राक्ष की दिव्य शक्ति का अनुभव करने से रोक दिया है।

सदियों तक कुछ लोगों ने ज्ञान को अपने तक सीमित रखने के लिए रुद्राक्ष से जुड़ी कई तरह की बंदिशें और अफवाहें फैलाईं।

इस अध्याय में हम इन सभी आधुनिक मिथकों को तोड़ेंगे और सीधे देखेंगे कि हमारे प्राचीन ग्रंथ—जैसे **श्रीमद् देवी भागवत** और **शिव पुराण**—वास्तव में क्या कहते हैं।

मिथक 1: "रुद्राक्ष केवल पवित्र लोगों, पुरुषों या किसी विशेष वर्ग के लोग ही पहन सकते हैं"

सबसे बड़ी गलतफहमी यह है कि रुद्राक्ष धारण करने के लिए आपको कोई संत, पुरुष या ऊँचे सामाजिक दर्जे का व्यक्ति होना चाहिए।

लेकिन हमारे शास्त्र इस भ्रम को पूरी तरह समाप्त कर देते हैं।

भगवान शिव की कृपा हर व्यक्ति के लिए समान रूप से उपलब्ध है।

आइए शिव पुराण की विद्येश्वर संहिता (अध्याय 25) का यह श्लोक देखें, जहाँ भगवान शिव स्वयं स्त्रियों और सभी वर्गों के लोगों के बारे में आदेश देते हैं—

**सर्वाश्रमाणां वर्णानां स्त्रीशूद्राणां शिवाज्ञया ।
धार्याः सदैव रुद्राक्षा यतीनां प्रणवेन हि ॥**

अर्थ: "भगवान शिव की आज्ञा से सभी आश्रमों, सभी वर्णों, सभी जातियों और स्त्रियों को सदैव रुद्राक्ष धारण करना चाहिए। योगी और संन्यासी इसे 'ऊँ' के जप के साथ धारण करें।"

इस श्लोक में "स्त्री" शब्द स्पष्ट रूप से लिखा गया है।

अर्थात् भगवान शिव स्वयं आदेश देते हैं कि समाज में किसी भी स्थान, जाति, वर्ण या लिंग का व्यक्ति हो, उसे रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

रुद्राक्ष माहात्म्य सामाजिक भेदभाव की इस दीवार को और भी स्पष्ट रूप से तोड़ता है—

**अभक्तो वाऽस्तु भक्तो वा नीचो नीचतरोऽपि वा ॥
रुद्राक्षान्धारयेद्यस्तु मुच्यते सर्वपातकैः ॥**

अर्थ: "चाहे कोई भक्त हो या न हो, चाहे वह किसी भी निम्न सामाजिक स्तर का व्यक्ति क्यों न हो, यदि वह रुद्राक्ष धारण करता है तो वह अपने सभी पापों से मुक्त हो जाता है।"

मिथक 2: "क्या बच्चे रुद्राक्ष पहन सकते हैं?"

हाँ, बिल्कुल।

जैसा कि शिव पुराण के ऊपर दिए गए श्लोक में कहा गया है— "*सभी आश्रमों के लोग*"—शास्त्र कहीं भी रुद्राक्ष धारण करने के लिए किसी आयु सीमा का उल्लेख नहीं करते।

रुद्राक्ष की दिव्य ऊर्जा किसी बच्चे और किसी वृद्ध में कोई भेदभाव नहीं करती।

हाँ, व्यावहारिक दृष्टि से यह सलाह दी जाती है कि बच्चे को तभी रुद्राक्ष पहनाया जाए, जब वह इतना समझदार हो जाए कि उसे मुँह में न डाले या उसके साथ खिलौने जैसा व्यवहार न करे।

बच्चों के लिए शुरुआत में एक-अंकीय मुखी वाले रुद्राक्ष अधिक उपयुक्त माने जाते हैं।

विशेष रूप से **4 मुखी, 5 मुखी और 6 मुखी** रुद्राक्ष बच्चों के लिए शांत, संतुलित और मूलभूत ऊर्जा प्रदान करते हैं। ये उनकी एकाग्रता, रोग प्रतिरोधक क्षमता और समग्र विकास में सहायक माने जाते हैं।

मिथक 3: "क्या महिलाएँ मासिक धर्म, रजोनिवृत्ति या गर्भावस्था में रुद्राक्ष पहन सकती हैं?"

यह सबसे अधिक पूछे जाने वाले और सबसे विवादित प्रश्नों में से एक है।

एक बार फिर, हमारे शास्त्र इसका बेहद सरल और स्पष्ट उत्तर देते हैं।

श्रीमद् देवी भागवत (स्कंध 11, अध्याय 7) में कहा गया है—

सुप्त पीते सदा कालं रुद्राक्षं धारयेन्नरः।

अर्थ: "मनुष्य को सोते समय, पीते समय और हर समय रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।"

शास्त्रों में कहीं भी यह नहीं लिखा कि स्त्री को मासिक धर्म या रजोनिवृत्ति के दौरान रुद्राक्ष उतार देना चाहिए।

यदि शास्त्र स्वयं इसे हर समय धारण करने की बात कहते हैं, तो इसमें शरीर की सभी प्राकृतिक जैविक अवस्थाएँ भी शामिल हैं।

गर्भावस्था में भी यही नियम लागू होता है।

यदि आपका स्वास्थ्य सामान्य है और कोई चिकित्सकीय जटिलता नहीं है, तो आप पूरी गर्भावस्था के दौरान रुद्राक्ष धारण कर सकती हैं।

वास्तव में, **"गर्भ गौरी रुद्राक्ष"** नाम का एक विशेष रुद्राक्ष भी होता है। यह गौरीशंकर रुद्राक्ष का एक रूप है, जिसमें दो रुद्राक्ष प्राकृतिक रूप से जुड़े होते हैं और उनमें से एक आकार में छोटा होता है, जो गर्भस्थ शिशु का प्रतीक माना जाता है।

यह विशेष रुद्राक्ष गर्भावस्था के दौरान माता और शिशु के कल्याण एवं सुरक्षा के लिए धारण करने की सलाह दी जाती है। इसके बारे में आगे के अध्यायों में विस्तार से चर्चा की जाएगी।

मिथक 4: "रुद्राक्ष धारण करने वाला व्यक्ति मांसाहार या मदिरा का सेवन नहीं कर सकता।"

हमारी वैदिक परंपरा निश्चित रूप से आध्यात्मिक उन्नति के लिए सात्विक भोजन को सर्वोत्तम मानती है।

लेकिन यदि कोई व्यक्ति तामसिक भोजन करता है या मांसाहार अथवा मदिरा का सेवन करता है, तो इसका अर्थ यह नहीं कि वह रुद्राक्ष धारण नहीं कर सकता।

रुद्राक्ष दंड देने वाला नहीं, बल्कि शुद्ध करने वाला है।

**खादन्मांसं पिबन्मद्यं संगच्छत्रंत्यजानपि ।
पातकेभ्यो विमुच्येत रुद्राक्षे शिरसि स्थिते ॥**

अर्थ: "यदि किसी व्यक्ति के सिर पर रुद्राक्ष धारण हो, तो वह मांस खाने वाला, मदिरा पीने वाला या दुष्ट लोगों की संगति करने वाला ही क्यों न हो, वह अपने पापों से मुक्त हो जाता है।"

इसका अर्थ यह नहीं कि रुद्राक्ष पाप करने की अनुमति देता है।

यह एक ऐसा माध्यम है जो मन और चेतना को धीरे-धीरे शुद्ध करता है। समय के साथ व्यक्ति की नकारात्मक आदतों और तामसिक प्रवृत्तियों की ओर स्वाभाविक रुचि कम होने लगती है।

मिथक 5: "रुद्राक्ष पहनने के लिए हर समय पूरी तरह शुद्ध रहना ज़रूरी है"

बहुत से लोग इस बात से डरते हैं कि यदि वे किसी कारणवश शारीरिक रूप से अशुद्ध हो जाएँ या अपनी दैनिक शारीरिक क्रियाओं के दौरान रुद्राक्ष पहनें, तो कहीं उसका अपमान न हो जाए।

लेकिन हमारे शास्त्र इस विषय में बहुत स्पष्ट और व्यावहारिक हैं।

वे बताते हैं कि रुद्राक्ष की पवित्रता मनुष्य की अशुद्धियों से कहीं अधिक प्रभावशाली है।

**शुचिर्वाप्यशुचिर्वापि तथाऽभक्ष्यस्य भक्षकः ।
म्लेच्छो वाप्यथ चाण्डालो युतो वा सर्वपातकैः ।
रुद्राक्षधारणादेव स रुद्रो नात्र संशयः ॥**

अर्थ: "चाहे कोई शुद्ध हो या अशुद्ध, चाहे वह वर्जित भोजन करने वाला हो, म्लेच्छ हो, चांडाल हो या बड़ा पापी ही क्यों न हो—यदि वह रुद्राक्ष धारण करता है, तो वह रुद्र के समान हो जाता है। इसमें कोई संदेह नहीं है।"

मिथक 6: "रुद्राक्ष का लाभ पाने के लिए कठिन नियम और अनुष्ठान करना ज़रूरी है"

निश्चित रूप से मंत्र-जप और प्राण-प्रतिष्ठा रुद्राक्ष की शक्ति को और बढ़ाते हैं।

लेकिन भगवान शिव की करुणा इतनी विशाल है कि यदि कोई व्यक्ति केवल साधारण रूप से, बिना किसी विशेष विधि-विधान के भी रुद्राक्ष धारण करता है, तब भी उसे इसका लाभ मिलता है।

**केवलानपि रुद्राक्षान्यद्यालस्याद्विभर्ति यः ।
तं न स्पृशंति पापानि तमांसीव विभावसुम् ॥**

अर्थ: "यदि कोई व्यक्ति आलस्यवश भी केवल रुद्राक्ष धारण कर ले, तब भी पाप उसे वैसे ही स्पर्श नहीं कर पाते, जैसे अंधकार प्रकाश के पास नहीं टिक सकता।"

वास्तव में रुद्राक्ष कब उतारना चाहिए?

जैसा कि शास्त्रों से स्पष्ट है, रुद्राक्ष अत्यंत सहनशील और सबको स्वीकार करने वाला है। यह आपका रक्षक है।

फिर भी कुछ विशेष परिस्थितियाँ ऐसी हैं, जहाँ इसे उतारना या अतिरिक्त सावधानी बरतना उचित माना जाता है—

- **श्मशान**

श्मशान का वातावरण विरक्ति, शोक और प्रस्थान करती आत्माओं की ऊर्जाओं से भरा होता है।

क्योंकि रुद्राक्ष ऊर्जा को ग्रहण करने की क्षमता रखता है, इसलिए वहाँ प्रवेश करने से पहले उसे उतार देना बेहतर माना जाता है, ताकि वह इन भारी ऊर्जाओं को अपने भीतर न ले।

- **अस्पताल और आपातकालीन वार्ड**

श्मशान की तरह अस्पतालों—विशेषकर आपातकालीन वार्ड—में भी अत्यधिक पीड़ा और मृत्यु से जुड़ी ऊर्जाएँ होती हैं।

यदि आपका कार्यस्थल अस्पताल है या आपको वहाँ अक्सर जाना पड़ता है, तो रुद्राक्ष उतारना आवश्यक नहीं है।

लेकिन उसे प्रतिदिन **गंगाजल** से शुद्ध करने की सलाह दी जाती है, ताकि यदि उसने कोई भारी ऊर्जा ग्रहण की हो तो वह दूर हो जाए।

- **सोते समय**

शास्त्र रुद्राक्ष को हर समय धारण करने की अनुमति देते हैं।

लेकिन व्यावहारिक रूप से सोते समय बार-बार करवट बदलने से गौरीशंकर जैसे रुद्राक्षों के प्राकृतिक जोड़ टूट सकते हैं या शरीर के दबाव से उनकी बाहरी संरचना को नुकसान पहुँच सकता है।

इसलिए सोते समय उसे उतारने का उद्देश्य किसी दैवी दंड का भय नहीं, बल्कि रुद्राक्ष की सुरक्षा है।

रुद्राक्ष की शुरुआत किस मुखी से करें?

अब जब सभी डर और भ्रांतियाँ दूर हो गई हैं, तो सबसे स्वाभाविक प्रश्न उठता है—

शुरुआत किस रुद्राक्ष से करें?

इसका उत्तर पूरी तरह इस बात पर निर्भर करता है कि आप अपने जीवन में क्या प्राप्त करना चाहते हैं।

शास्त्र स्पष्ट रूप से कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

लेकिन **कौन-सा मुखी** आपके लिए उपयुक्त होगा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप अपने जीवन की किस समस्या का समाधान चाहते हैं, कौन-सा लक्ष्य प्राप्त करना चाहते हैं या किस प्रकार की ब्रह्मांडीय ऊर्जा को अपने जीवन में सक्रिय करना चाहते हैं।

बहुत से लोग अपनी **अंक ज्योतिष** और **ज्योतिष** के आधार पर भी रुद्राक्ष का चयन करते हैं।

यह एक विस्तृत और रोचक विषय है, जिस पर आगे के अध्यायों में विस्तार से चर्चा की जाएगी।

जब आप मनुष्य द्वारा बनाई गई इन भ्रांतियों से मुक्त हो जाते हैं, तभी आप भगवान शिव की निष्कलंक, सहज और गहन वैज्ञानिक कृपा को वास्तव में अनुभव कर पाते हैं।

अध्याय 4:

पवित्रता के पीछे का विज्ञान — रुद्राक्ष मानव शरीर पर कैसे काम करता है

नमः शिवाय

अब तक हम रुद्राक्ष की दिव्य उत्पत्ति को समझ चुके हैं और उससे जुड़ी कई भ्रांतियों और डर को भी दूर कर चुके हैं।

लेकिन एक तार्किक मन में अब भी यह प्रश्न उठ सकता है—

"आखिर पेड़ का एक साधारण-सा बीज मेरी ज़िंदगी कैसे बदल सकता है? क्या यह सिर्फ़ मन का भ्रम है, या इसके पीछे वास्तव में कोई विज्ञान भी है?"

इसका उत्तर समझने के लिए हमें एक महत्वपूर्ण सत्य स्वीकार करना होगा।

हमारे प्राचीन ऋषि और योगी केवल श्रद्धा रखने वाले साधक नहीं थे, बल्कि वे मानव शरीर और ब्रह्मांड के गहरे वैज्ञानिक भी थे।

जब उन्होंने रुद्राक्ष धारण करने की सलाह दी, तब वे वास्तव में एक अत्यंत विकसित **जैव-चुंबकीय** साधन का उपयोग बता रहे थे।

आज का आधुनिक विज्ञान भी धीरे-धीरे इसी प्राचीन ज्ञान की पुष्टि कर रहा है।

1980 के दशक में **बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी** में **डॉ. एस. पी. गुप्ता** और उनके सहयोगियों ने रुद्राक्ष पर विस्तृत प्रयोगशाला अध्ययन किए। उनके

शोध "साइंटिफिक एग्ज़ल ऑफ़ रुद्राक्ष" नामक महत्वपूर्ण शोध-पत्र में प्रकाशित हुए।

1990 के दशक में फ्लोरिडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी (अमेरिका) के डॉ. डेविड ली ने रुद्राक्ष की रासायनिक संरचना पर गहन अध्ययन किया।

इन शोधों के चिकित्सकीय परिणाम इतने महत्वपूर्ण थे कि बेल्जियम की एक दवा कंपनी ने हृदय रोगों के उपचार के लिए रुद्राक्ष के अर्क से बनने वाले इंजेक्शन का पेटेंट भी कराया।

रुद्राक्ष कोई जादू नहीं है।

यह भौतिकी और जैव-रसायन के सिद्धांतों पर काम करता है।

यह मानव शरीर और मन पर कई अलग-अलग वैज्ञानिक तरीकों से प्रभाव डालता है।

1. जैव-विद्युत चुंबकत्व और "मुख से पूँछ" की संरचना

मानव शरीर मूल रूप से एक अत्यंत जटिल जैव-विद्युत परिपथ है।

जब भी हमारा हृदय धड़कता है या हमारे मन में कोई विचार आता है, तब हमारे तंत्रिका तंत्र में सूक्ष्म विद्युत आवेग प्रवाहित होते हैं।

आज की आधुनिक जीवनशैली में लगातार तनाव और मोबाइल, कंप्यूटर तथा अन्य स्क्रीन से निकलने वाली विद्युत-चुंबकीय विकिरण इस प्राकृतिक प्रवाह को प्रभावित करती हैं।

इसके परिणामस्वरूप रक्तचाप बढ़ना, बेचैनी और तनाव जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

शोधों से पता चला है कि रुद्राक्ष में परावैद्युत गुण पाए जाते हैं।

यह एक प्राकृतिक संधारित्र की तरह कार्य करता है, अर्थात् यह विद्युत ऊर्जा को संचित करके शरीर में प्रवाहित हो रही अनियमित जैव-विद्युत तरंगों को संतुलित करने में सहायता करता है।

इसके साथ ही रुद्राक्ष में स्थायी चुंबकीय गुण भी पाए जाते हैं।

सामान्य चुंबक की तरह एक असली रुद्राक्ष में भी उत्तर ध्रुव और दक्षिण ध्रुव होते हैं।

इसी कारण रुद्राक्ष को माला में सही दिशा, अर्थात् मुख से पूँछ की ओर पिरोना अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

जब रुद्राक्ष की माला इस प्रकार सही क्रम में धारण की जाती है, तब वह एक संतुलित और प्रभावी चुंबकीय परिपथ बनाती है।

यह चुंबकीय प्रवाह रक्त वाहिकाओं पर एक सूक्ष्म मालिश की तरह कार्य करता है, जिससे धमनियाँ फैलती हैं, रक्तचाप संतुलित रहता है और मन में गहरी शांति का अनुभव होता है।

2. साधु रत्नों की जगह रुद्राक्ष क्यों धारण करते हैं? — संकल्प सिद्धि की शक्ति

क्या आपने कभी सोचा है कि मोक्ष की साधना करने वाले साधु-संत हमेशा रुद्राक्ष की माला धारण करते हैं, न कि रत्नों या स्फटिक की माला?

स्फटिक एक निश्चित आवृत्ति पर कंपन करते हैं।

रुद्राक्ष एक जीवित बीज है, जो ऊर्जा-संवेदक की तरह कार्य करता है।

यह धारण करने वाले व्यक्ति को उच्च ब्रह्मांडीय ऊर्जा से जुड़ने में सहायता करता है।

हज़ारों लोगों के अनुभवों से यह पाया गया है कि रुद्राक्ष **संकल्प सिद्धि** का एक अत्यंत प्रभावशाली माध्यम है।

यह आपके शरीर के जैव-विद्युत क्षेत्र को ब्रह्मांडीय ऊर्जा से जोड़ता है और जिस संकल्प, प्रार्थना या उद्देश्य के साथ आप इसे धारण करते हैं, उसकी ऊर्जा को और अधिक प्रबल बनाता है।

यह आपकी गहरी इच्छाओं को ब्रह्मांड की ऊर्जा के साथ तालमेल में लाने में सहायता करता है, जो सामान्य स्फटिक नहीं कर पाते।

3. एक्वूप्रेशर का प्रभाव: सेरोटोनिन और पीयूष ग्रंथि

रुद्राक्ष की खुरदरी और काँटेदार सतह केवल उसकी बनावट नहीं है।

यह लगातार काम करने वाला एक प्राकृतिक **एक्वूप्रेशर** उपकरण भी है।

जब रुद्राक्ष त्वचा के संपर्क में रहता है, तब उसके सूक्ष्म उभार शरीर की कुछ विशेष तंत्रिकाओं को उत्तेजित करते हैं।

ये तंत्रिकाएँ सीधे **पीयूष ग्रंथि** तक संकेत पहुँचाती हैं।

इस उत्तेजना के कारण शरीर में **सेरोटोनिन** नामक तंत्रिका-संदेशवाहक का स्राव बढ़ता है।

सेरोटोनिन मन को स्थिर रखने, प्रसन्नता बढ़ाने और मानसिक संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इसी कारण कई लोगों को किसी विशेष रुद्राक्ष को धारण करने के बाद अचानक आत्मविश्वास, मानसिक स्पष्टता या सफलता का अनुभव होने लगता है।

ऐसा इसलिए होता है क्योंकि रुद्राक्ष चिंता को कम करने, सेरोटोनिन के स्तर को बढ़ाने और निर्णय लेने की क्षमता को बेहतर बनाने में सहायता करता है।

4. रासायनिक संरचना और रुद्राक्ष जल चिकित्सा

रासायनिक परीक्षणों से पता चलता है कि रुद्राक्ष मुख्य रूप से **कार्बन**, **हाइड्रोजन** और **नाइट्रोजन** से बना होता है।

इसके अतिरिक्त इसमें बहुत कम मात्रा में **सोना**, **तांबा** और **मैंगनीज़** जैसे महत्वपूर्ण तत्व भी पाए जाते हैं।

शोधकर्ताओं के अनुसार रुद्राक्ष में मौजूद ये तत्व हृदय को सक्रिय रखने, मानसिक अवसाद को कम करने तथा कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित रखने में सहायक गुण रखते हैं।

इसी कारण आयुर्वेद में **रुद्राक्ष जल चिकित्सा** का विशेष महत्व बताया गया है।

यदि कोई व्यक्ति हृदय संबंधी समस्याओं, चिंता या उच्च कोलेस्ट्रॉल से परेशान है, तो वह प्रतिदिन सुबह खाली पेट **5 मुखी रुद्राक्ष** से अभिमंत्रित या आवेश किया हुआ जल पी सकता है।

ऐसा माना जाता है कि इससे अच्छे परिणाम मिल सकते हैं।

नोट: यह एक पारंपरिक वैदिक उपाय है। लेखक स्वयं चिकित्सक नहीं हैं। इसलिए इस उपाय को चिकित्सक द्वारा दी गई दवाओं के साथ ही अपनाना चाहिए, उनके स्थान पर नहीं।

अंतिम सत्य: रुद्राक्ष की असली शक्ति उसके भीतर होती है

रुद्राक्ष के ये सभी वैज्ञानिक गुण उसके बाहरी स्तर पर कार्य करते हैं।

लेकिन एक बात हमेशा याद रखनी चाहिए—

रुद्राक्ष की वास्तविक शक्ति उसके भीतर होती है।

यदि किसी रुद्राक्ष को बीच से काटकर देखा जाए, तो उसके अंदर बने प्राकृतिक खंड ठीक उतनी ही संख्या में दिखाई देंगे, जितनी उसकी बाहरी मुखियाँ होती हैं।

इन्हीं खंडों के भीतर उसके वास्तविक सूक्ष्म बीज मौजूद होते हैं।

यही बीज रुद्राक्ष के वास्तविक ऊर्जा केंद्र हैं।

बाहरी मुखियाँ केवल वे मार्ग हैं, जिनके माध्यम से यह ऊर्जा उसके **मुख** से बाहर प्रवाहित होती है।

रुद्राक्ष की इस आंतरिक संरचना को समझना एक असली रुद्राक्ष की पहचान करने और उसकी वास्तविक गुणवत्ता को परखने का सबसे महत्वपूर्ण आधार है।

अगले अध्याय में हम इसी कला को विस्तार से समझेंगे और सीखेंगे कि एक असली और उच्च गुणवत्ता वाले रुद्राक्ष की पहचान कैसे की जाती है।

अध्याय 5:

4-स्तरीय गुणवत्ता जाँच प्रणाली (रुद्राक्ष की पहचान करने की सर्वोत्तम प्रणाली)

नमः शिवाय

पिछले अध्याय में हमने एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक सिद्धांत समझा था—**रुद्राक्ष की असली शक्ति उसके भीतर होती है।**

लेकिन अब प्रश्न यह है कि एक साधक उस शक्ति को बाहर से कैसे पहचाने?

अधिकांश लोग जब पहली बार रुद्राक्ष खरीदने जाते हैं, तो उनके मन में एक ही डर होता है कि कहीं उनके साथ धोखा न हो जाए।

वे दुकानदार से बार-बार पूछते हैं—

"क्या आपके पास असली रुद्राक्ष है?"

"क्या यह पूरी तरह प्रामाणिक है?"

यह डर बिल्कुल स्वाभाविक है, लेकिन यह सही प्रश्न नहीं है।

मैं चाहता हूँ कि आप रुद्राक्ष के बारे में यह एक बात हमेशा याद रखें। इस पुस्तक में मैं इसे बार-बार दोहराऊँगा—

"रुद्राक्ष में सबसे ज़्यादा महत्व उसकी गुणवत्ता का है, केवल असली होने का नहीं।"

हाँ, असली रुद्राक्ष होना आवश्यक है।

लेकिन असली समझदारी आपकी पहली खरीद में होती है।

यदि आप पहली बार रुद्राक्ष खरीद रहे हैं, तो **3 मुखी से 12 मुखी** तक का रुद्राक्ष सबसे सुरक्षित माना जाता है।

और यदि आप **3 मुखी से 7 मुखी** के बीच का रुद्राक्ष चुनते हैं, तो लगभग कभी गलती नहीं होगी।

इन मुखियों के रुद्राक्ष प्रकृति में पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं, इसलिए इन्हें नकली बनाना न तो आसान है और न ही आर्थिक रूप से लाभदायक।

लेकिन यही बात हमें फिर उसी मूल सिद्धांत तक ले आती है—

यदि कोई 5 मुखी रुद्राक्ष पूरी तरह असली भी है, तब भी उसकी वास्तविक शक्ति उसकी गुणवत्ता पर निर्भर करेगी।

यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि एक परिपक्व रुद्राक्ष के वृक्ष से प्राप्त होने वाले सभी रुद्राक्षों में से केवल लगभग 10% ही सर्वोच्च श्रेणी के होते हैं।

यानी वे आकार में संतुलित, स्पष्ट और गहरी मुखियों वाले, अधिक वजन वाले, सही आकार-से-वजन अनुपात वाले तथा उच्च विशिष्ट घनत्व वाले होते हैं।

इसी कारण ऐसे उत्कृष्ट रुद्राक्षों की मांग बहुत अधिक होती है और उनकी कीमत भी सामान्य रुद्राक्षों की तुलना में कहीं अधिक होती है।

इसे एक साधारण उदाहरण से समझिए।

जब आप फल खरीदने बाज़ार जाते हैं, तो हर सेब या संतरे की कीमत एक जैसी नहीं होती। उनकी कीमत उनके आकार, ताज़गी, रंग और गुणवत्ता पर निर्भर करती है। बेहतर गुणवत्ता वाले फल हमेशा अधिक महंगे होते हैं, जबकि छोटे, अधपके या खराब फल कम कीमत में मिलते हैं। रुद्राक्ष भी एक फल ही है।

इसलिए उसकी असलियत से पहले उसकी **गुणवत्ता** को समझना ज़रूरी है।

इसी उद्देश्य से मैंने रुद्राक्ष की पहचान के लिए एक सरल और विश्वसनीय **4-स्तरीय गुणवत्ता जाँच प्रणाली** विकसित की है।

यही वह प्रणाली है जो किसी भी सामान्य खरीदार को रुद्राक्ष का जानकार बना सकती है।

1. आकार और बाहरी बनावट

(आँवला, बेर और चना मानक)

रुद्राक्ष का आकार उसकी ऊर्जा ग्रहण करने की क्षमता और त्वचा पर होने वाले घर्षण से सीधे जुड़ा होता है।

यह कोई आधुनिक विचार नहीं है।

रुद्राक्ष माहात्म्य में भी इसका स्पष्ट उल्लेख मिलता है।

शास्त्रों में रुद्राक्ष को आकार के आधार पर तीन श्रेणियों में बाँटा गया है—

- **आँवले के आकार का रुद्राक्ष (सर्वश्रेष्ठ)**

आँवले जितना बड़ा रुद्राक्ष सबसे उत्तम माना गया है।

इसका सतही क्षेत्र अधिक होता है, जिससे इसकी प्राकृतिक काँटेदार बनावट त्वचा के एक्जुप्रेसर बिंदुओं पर बेहतर प्रभाव डालती है।

- **बेर के आकार का रुद्राक्ष (मध्यम)**

बेर के आकार का रुद्राक्ष मध्यम श्रेणी का माना गया है।

- **चने के आकार का रुद्राक्ष (निम्न श्रेणी)**

चना जितना छोटा रुद्राक्ष सबसे निम्न श्रेणी का माना जाता है।

सामान्यतः जितना बड़ा रुद्राक्ष होगा, उसकी ऊर्जा धारण करने की क्षमता भी उतनी अधिक मानी जाती है।

इंडोनेशियन (जावा) रुद्राक्ष

इनका सामान्य आकार **4 मिमी से 12 मिमी** तक होता है।

यदि इनका आकार 12 मिमी से अधिक हो जाए, तो इन्हें **संग्रहणीय रुद्राक्ष** कहा जाता है। यह शब्द कई दशकों से असाधारण रूप से बड़े और दुर्लभ इंडोनेशियन रुद्राक्षों के लिए उपयोग किया जाता है।

नेपाली रुद्राक्ष

इनका सामान्य आकार **12 मिमी से 25 मिमी** तक होता है।

25 मिमी से बड़े रुद्राक्ष **संग्रहणीय रुद्राक्ष** कहलाते हैं।

और यदि उनका आकार **30 मिमी से अधिक** हो, तो उन्हें **अत्यंत दुर्लभ संग्रहणीय रुद्राक्ष** माना जाता है।

अपने बाज़ार अध्ययन के दौरान मैंने पाया कि अधिकांश विक्रेता **4 मुखी और उससे ऊपर** के रुद्राक्ष 17-20 मिमी के आकार में बेचते हैं, क्योंकि इससे उनका लाभ अधिक होता है।

लेकिन मेरे अनुभव और अध्ययन बताते हैं कि **20 मिमी से बड़े रुद्राक्ष** अपेक्षाकृत जल्दी परिणाम देते हैं।

उनका त्वचा से घर्षण अधिक प्रभावी होता है और उनके बड़े आंतरिक खंड अधिक जैव-विद्युत ऊर्जा उत्पन्न करते हैं।

इसी कारण जब हमने **www.rudrasamrat.com** की शुरुआत की, तब हमने यह नियम बनाया कि **4 मुखी और उससे ऊपर** केवल **20 मिमी से बड़े** रुद्राक्ष ही उपलब्ध कराए जाएँ।

बाहरी सतह

रुद्राक्ष का दाना **खिला हुआ** होना चाहिए।

उसकी मुखियाँ (रेखाएँ) गहरी, स्पष्ट और **मुख से पूँछ** तक बिना टूटे दिखाई देनी चाहिए।

उसके प्राकृतिक काँटे भी मजबूत और अच्छी तरह विकसित होने चाहिए।

एक महत्वपूर्ण सावधानी

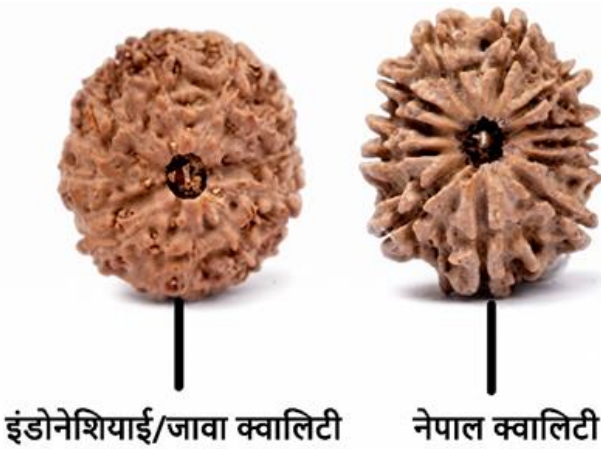
सन् 2020 के बाद नेपाल के कुछ किसानों ने रुद्राक्ष का आकार कृत्रिम रूप से बड़ा करने के लिए कृषि रसायनों का उपयोग शुरू कर दिया।

यह समस्या विशेष रूप से **4, 5, 6 और 7 मुखी** रुद्राक्षों में अधिक देखने को मिलती है।

इन रसायनों के कारण रुद्राक्ष का आकार तो बढ़ जाता है, लेकिन उसकी मुखियाँ स्पष्ट नहीं बन पातीं।

ऐसे रुद्राक्ष अधिक चिकने होते हैं और उनके प्राकृतिक काँटे भी कम विकसित होते हैं।

इसलिए हमेशा ऐसे रुद्राक्ष ही चुनें जिन पर किसी प्रकार का रासायनिक उपचार न किया गया हो और जिनकी मुखियाँ स्वाभाविक रूप से गहरी और स्पष्ट हों।



2. वजन, घनत्व और "गीले रुद्राक्ष" का सबसे बड़ा भ्रम

रुद्राक्ष को हाथ में लेते समय उसका वजन बहुत महत्वपूर्ण होता है।

भारी रुद्राक्ष इस बात का संकेत होता है कि उसके भीतर के बीज पूरी तरह विकसित, घने और परिपक्व हैं।

यदि कोई रुद्राक्ष असामान्य रूप से हल्का या खोखला लगे, तो इसका अर्थ हो सकता है कि उसके भीतर के बीज ठीक से विकसित नहीं हुए या उन्हें कीड़ों ने नुकसान पहुँचा दिया है।

शास्त्र ऐसे रुद्राक्ष धारण करने की सलाह नहीं देते।

मैंने बाज़ार में बड़ी संख्या में ऐसे निम्न गुणवत्ता वाले रुद्राक्ष देखे हैं जिनका वजन केवल **1.5 से 2.5 ग्राम** होता है।

ये सामान्यतः कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों या भारत-नेपाल सीमा के मैदानी इलाकों से आते हैं।

इनकी समय से पहले तुड़ाई कर ली जाती है, इसलिए इनका घनत्व कम होता है और इनके भीतर के बीज पूरी तरह विकसित नहीं हो पाते।

"गीले रुद्राक्ष" का जाल

यहीं सबसे अधिक लोग धोखा खा जाते हैं।

कई बार दुकानदार आपके सामने ताज़ा तोड़ा गया रुद्राक्ष छीलकर उसका वजन दिखाता है।

चूँकि वह अभी-अभी फल से निकला होता है, इसलिए उसमें पानी की मात्रा अधिक होती है और उसका वजन भी ज़्यादा दिखाई देता है।

इसे देखकर ग्राहक समझता है कि यह बहुत भारी और उच्च गुणवत्ता वाला रुद्राक्ष है।

लेकिन ऐसा नहीं है।

जब वही रुद्राक्ष पूरी तरह सूख जाता है, तो उसका वजन लगभग **30% से 40%** तक कम हो सकता है।

इसलिए हमेशा ऐसे रुद्राक्ष का वजन देखें जो पहले से सूखा हुआ हो।

तभी उसका वास्तविक और स्थायी वजन पता चलता है।

आदर्श वजन

सामान्यतः धारण किए जाने वाले **4 मुखी और उससे ऊपर** के रुद्राक्ष का सूखा वजन **3 ग्राम से अधिक** होना चाहिए।

यदि उसका वजन **4 ग्राम या उससे अधिक** हो, तो उसे और भी बेहतर माना जाता है।

इसी कारण www.rudrasamrat.com पर सामान्यतः 3 से 3.5 ग्राम या उससे अधिक वजन वाले रुद्राक्ष ही उपलब्ध कराए जाते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण मानक: आकार और वजन का अनुपात

उच्च गुणवत्ता वाला रुद्राक्ष चुनते समय उसके आकार और वजन का अनुपात भी देखना चाहिए।

- 6 से 6.5 का अनुपात — सर्वोच्च गुणवत्ता।
- 7 से अधिक — सामान्य गुणवत्ता।
- 8 से अधिक — निम्न गुणवत्ता या भीतर से कम विकसित रुद्राक्ष।

3. आकार और समरूपता

पूरी तरह गोल या हल्के अंडाकार रुद्राक्ष को सबसे उत्तम माना जाता है।

दुर्भाग्य से आज बाज़ार में बड़ी संख्या में ऐसे रुद्राक्ष मिलते हैं जो एक तरफ से दबे हुए, चपटे या असामान्य आकार के होते हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि इन्हें बिना किसी छँटाई के बड़ी मात्रा में पेड़ों से तोड़कर सीधे बाज़ार में बेच दिया जाता है।

इस प्रकार के असमा रुद्राक्ष अपेक्षाकृत कम प्रभावी माने जाते हैं, क्योंकि इनमें उत्पन्न होने वाली जैव-विद्युत ऊर्जा समान रूप से वितरित नहीं हो पाती।

एक उत्तम रुद्राक्ष की बाहरी सतह पर प्राकृतिक कोंटे अच्छी तरह विकसित होने चाहिए, ताकि त्वचा पर रगड़ के दौरान उचित एक्जूप्रेशर प्रभाव मिल सके।

उसकी सभी मुखियाँ (रेखाएँ) मुख से पूँछ तक बिना टूटे, सीधी और संतुलित रूप से जानी चाहिए।

ऐसा पूरी तरह समरूप रुद्राक्ष प्रकृति में बहुत कम मिलता है।

लेकिन यही दुर्लभ रुद्राक्ष सबसे उत्कृष्ट माने जाते हैं। इन्हें ही अंग्रेज़ी में "क्रीम ऑफ़ द मिल्क" कहा गया है—अर्थात् किसी वृक्ष से प्राप्त सबसे श्रेष्ठ और उच्च आध्यात्मिक गुणों वाले रुद्राक्ष।

आकार में होने वाले प्राकृतिक बदलाव

एक बात हमेशा याद रखें—

9 मुखी से आगे के रुद्राक्षों का धीरे-धीरे अंडाकार होना बिल्कुल स्वाभाविक और प्राकृतिक है।

जैसे-जैसे रुद्राक्ष **13 मुखी और उससे ऊपर** पहुँचता है, उसका आकार और अधिक लंबा तथा अंडाकार हो जाता है। (इसका चित्र आगे के अध्यायों में दिया गया है।)

ऐसा इसलिए होता है क्योंकि जैसे-जैसे मुखियों की संख्या बढ़ती है, वैसे-वैसे उसके अंदर बने खंडों की संख्या भी बढ़ जाती है।

इन खंडों के लिए उपलब्ध जगह कम होती जाती है, इसलिए रुद्राक्ष का गोल आकार धीरे-धीरे बदलने लगता है।

लेकिन यदि उसका अंडाकार आकार दोनों ओर से संतुलित और समरूप है, तो वह रुद्राक्ष अब भी सर्वोच्च गुणवत्ता का माना जाता है।

4. आंतरिक संरचना (एक्स-रे द्वारा बीजों की संख्या की जाँच)

यही सबसे अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण परीक्षण है।

रुद्राक्ष की आंतरिक संरचना को देखने के लिए **एक्स-रे** किया जाता है।

जैसा कि हमने पहले भी समझा है, रुद्राक्ष वास्तव में **"बीज के भीतर बीज"** है।

इसके अंदर बने प्रत्येक खंड में सूक्ष्म बीज मौजूद होते हैं।

यही सूक्ष्म बीज वास्तव में रुद्राक्ष की ऊर्जा के मुख्य स्रोत होते हैं।

स्वाभाविक रूप से, जितने अधिक और जितने बेहतर विकसित बीज होंगे, रुद्राक्ष की गुणवत्ता भी उतनी ही अच्छी मानी जाएगी।

लेकिन यहाँ एक रोचक बात सामने आती है।

जैसे-जैसे हम **9 मुखी और उससे ऊपर** के रुद्राक्षों की ओर बढ़ते हैं, उनके अंदर प्रत्येक खंड का आकार काफ़ी छोटा होने लगता है।

बीज बनने के लिए जगह कम होने के कारण, अक्सर **9 मुखी रुद्राक्ष** के अंदर पूरे **9 विकसित बीज** नहीं मिलते।

इसका यह अर्थ बिल्कुल नहीं है कि वह रुद्राक्ष कम प्रभावी है।

ऐसी स्थिति में उसकी शक्ति मुख्य रूप से उसके लकड़ी जैसे बाहरी खोल की परिपक्वता, घनत्व और वजन पर निर्भर करती है।

मेरे अनुभव के अनुसार **9 मुखी से ऊपर** के केवल लगभग **5% से 10%** उच्च गुणवत्ता वाले रुद्राक्षों में ही मुखियों के बराबर संख्या में पूरी तरह विकसित बीज पाए जाते हैं।

इसी कारण ऐसे रुद्राक्ष अत्यंत दुर्लभ होते हैं।

अनुभवी संग्राहक इन्हें प्राप्त करने के लिए कई बार एक्स-रे करवाते हैं और इनके लिए बहुत अधिक कीमत भी चुकाते हैं।

यदि आप पहली बार **1 मुखी से 12 मुखी** तक का रुद्राक्ष खरीद रहे हैं, तो अंदर मौजूद बीजों की संख्या को लेकर अधिक चिंता करने की आवश्यकता नहीं है।

इसे खरीदने का मुख्य आधार न बनाएँ।

लेकिन **14 मुखी और उससे ऊपर** के रुद्राक्ष खरीदते समय यह जाँच अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

जब आप इतने उच्च श्रेणी के रुद्राक्ष पर बड़ी राशि खर्च कर रहे हों (आमतौर पर ₹50,000 या उससे अधिक / **यूएसडी 500** या उससे अधिक), तब उसकी आंतरिक संरचना की जाँच अवश्य करनी चाहिए।

इसके अलावा, इस स्तर के उच्च मुखी रुद्राक्ष का आकार **24 मिमी से अधिक** होना सर्वोत्तम परिणामों के लिए उपयुक्त माना जाता है।

लेखक के अनुसार, www.rudrasamrat.com से इस विशेष उच्च श्रेणी के रुद्राक्ष खरीदने वाले अनेक साधकों ने अपने जीवन में तेज़ और आश्चर्यजनक सकारात्मक परिवर्तन का अनुभव साझा किया है।

नेपाल से 7 मुखी



कम्पार्टमेंट्स के अंदर
बीज

अध्याय 6:

नकली रुद्राक्षों की सच्चाई

नमः शिवाय

रुद्राक्ष की दुनिया के उस पहलू में आपका स्वागत है, जिसके बारे में बहुत कम लोग खुलकर बात करते हैं।

असली और उच्च गुणवत्ता वाले नेपाली रुद्राक्ष बहुत दुर्लभ होते हैं और उनमें अत्यधिक आध्यात्मिक महत्व माना जाता है। यही कारण है कि उनका मूल्य भी बहुत अधिक होता है।

और जहाँ किसी वस्तु का मूल्य अधिक होता है, वहाँ नकली सामान का बाज़ार भी तेज़ी से बढ़ता है।

पिछले अध्याय में हमने समझा कि रुद्राक्ष खरीदते समय उसकी **गुणवत्ता** सबसे महत्वपूर्ण होती है।

लेकिन उससे पहले खुद को नकली रुद्राक्षों से बचाना भी उतना ही ज़रूरी है।

आज ठग पहले से कहीं अधिक चालाक हो चुके हैं।

वे ऐसी जगहों पर नकली रुद्राक्ष तैयार करते हैं जहाँ सस्ती लकड़ी या कम गुणवत्ता वाले दानों को काटकर, तराशकर, जोड़कर और रंगकर असली जैसा बना दिया जाता है, ताकि भोले-भाले लोगों से बड़ी रकम वसूली जा सके।

इस अध्याय में हम रुद्राक्ष बाज़ार में होने वाले सबसे बड़े धोखों का पर्दाफाश करेंगे, सबसे अधिक नकली बनाए जाने वाले रुद्राक्षों के बारे में जानेंगे, पीढ़ियों से चली आ रही कई गलत धारणाओं को समझेंगे और यह भी सीखेंगे कि असली रुद्राक्ष की पहचान वैज्ञानिक तरीके से कैसे की जाए।

भाग 1: सबसे ज़्यादा नकली बनाए जाने वाले रुद्राक्ष

यदि आप नीचे बताए गए किसी भी रुद्राक्ष को खरीदने जा रहे हैं, तो आपको सबसे अधिक सावधानी बरतनी चाहिए।

1. एकमुखी रुद्राक्ष का भ्रम

(दुनिया का सबसे अधिक नकली बनाया जाने वाला रुद्राक्ष)

शिव पुराण में एकमुखी रुद्राक्ष को सबसे श्रेष्ठ और सबसे शक्तिशाली रुद्राक्ष बताया गया है।

स्वाभाविक रूप से, इसी प्रतिष्ठा के कारण यह दुनिया का सबसे अधिक नकली बनाया जाने वाला रुद्राक्ष बन गया है।

सबसे पहले एक बड़ी गलतफहमी को दूर कर लेते हैं—

कलियुग में पूरी तरह गोल, प्राकृतिक नेपाली एकमुखी रुद्राक्ष प्रकृति में उपलब्ध नहीं है।

ऐसा माना जाता है कि इतनी शक्तिशाली ऊर्जा के दुरुपयोग से बचाने के लिए प्रकृति ने इसे अत्यंत दुर्लभ बना दिया है।

इसलिए यदि कोई आपको पूरी तरह गोल नेपाली एकमुखी रुद्राक्ष बेचने की कोशिश करे, तो तुरंत सावधान हो जाइए।

आइए देखें कि बाज़ार में "एकमुखी रुद्राक्ष" के नाम पर वास्तव में क्या-क्या बेचा जाता है।

- **अधूरा विकसित एकमुखी**

कुछ किसान पेड़ों की शाखाओं पर कलम बाँधना और अन्य तकनीकों का उपयोग करके ऐसा रुद्राक्ष उगाने की कोशिश करते हैं, जिसकी बाहरी सतह पर केवल एक ही मुखी दिखाई दे।

लेकिन हमारी सबसे महत्वपूर्ण बात याद रखिए—

रुद्राक्ष की पहचान उसकी बाहरी रेखाओं से नहीं, बल्कि उसकी आंतरिक संरचना से होती है।

कई बार किसी प्राकृतिक कारण से बाहर केवल एक ही रेखा दिखाई देती है, लेकिन उसके अंदर 3, 4 या 5 पूरी तरह विकसित खंड मौजूद होते हैं।

ऐसी स्थिति में वह रुद्राक्ष वास्तव में **3 मुखी, 4 मुखी या 5 मुखी** की तरह ही कार्य करेगा।

इसलिए केवल बाहरी रूप देखकर उसे अत्यधिक कीमत पर खरीदना उचित नहीं है।

ऐसी स्थिति में बेहतर होगा कि आप उसी राशि में उच्च गुणवत्ता वाला 3, 4 या 5 मुखी संग्रहणीय श्रेणी का रुद्राक्ष खरीदें।

- **इंडोनेशियन एकमुखी**

प्राकृतिक रूप से मिलने वाला इंडोनेशियन एकमुखी रुद्राक्ष वास्तव में अस्तित्व में है।

लेकिन यह गोल नहीं होता।

यह आकार में बहुत छोटा (लगभग **4 मिमी से 10 मिमी**) और अधिक अंडाकार होता है।

इसके प्रभाव को अनुभव करने के लिए सामान्यतः एक साथ कई दाने धारण किए जाते हैं।

- **हरिद्वार/सिक्किम की प्रजाति (एलिओकार्पस सिक्किमेन्सिस)**

यह रुद्राक्ष, जिसे अक्सर **भद्राक्ष** भी कहा जाता है, आधे चाँद के आकार का होता है।

तीर्थस्थलों पर इसे अक्सर नेपाली एकमुखी रुद्राक्ष बताकर बेचा जाता है।

ठग इसके ऊपर आकर्षक सोने जैसी जड़ाई लगाकर इसकी कीमत लाखों रुपये तक बता देते हैं, जबकि वनस्पति विज्ञान की दृष्टि से इसकी वास्तविक कीमत लगभग ₹10 के आसपास होती है।

लेखक के अनुसार, इसे एकमुखी नेपाली रुद्राक्ष समझकर धारण नहीं करना चाहिए।

- **"एकमुखी सवार"**

गणेश रुद्राक्ष वह रुद्राक्ष होता है जिसमें प्राकृतिक रूप से सूँड़ जैसी उभरी हुई आकृति बनी होती है।

कभी-कभी इस उभरे हुए भाग पर एक मुखी की एक रेखा दिखाई देती है।

कुछ लोग इसी हिस्से को मूल रुद्राक्ष से तोड़कर उसे **"एकमुखी सवार"** के नाम से बेच देते हैं।

भारत में इसे मज़ाक में **"जुगाड़"** कहा जा सकता है।

लेकिन आध्यात्मिक दृष्टि से यह बिल्कुल उचित नहीं माना जाता।

जब किसी रुद्राक्ष को जानबूझकर तोड़ा जाता है, तो वह **खंडित** माना जाता है।

ऐसा रुद्राक्ष धारण नहीं करना चाहिए।

2. चिपकाया हुआ गौरीशंकर और "नेपाल जाकर खरीदने" का भ्रम

असली **गौरीशंकर रुद्राक्ष** प्रकृति का एक अत्यंत दुर्लभ चमत्कार है।

इसमें दो रुद्राक्ष प्राकृतिक रूप से आपस में जुड़े हुए होते हैं और यह भगवान शिव तथा माता पार्वती के दिव्य मिलन का प्रतीक माना जाता है।

चूँकि इसकी कीमत अधिक होती है, इसलिए कई ठग दो अलग-अलग रुद्राक्ष—जैसे एक **4 मुखी** और एक **5 मुखी**—लेते हैं।

फिर दोनों के एक-एक हिस्से को घिसकर समतल करते हैं और औद्योगिक गोंद की सहायता से उन्हें जोड़ देते हैं।

इसके बाद इसे **9 मुखी गौरीशंकर** बताकर उसकी वास्तविक कीमत से कई गुना अधिक दाम पर बेचते हैं।

"नेपाल जाकर खरीदेंगे तो असली मिलेगा" — एक बड़ा भ्रम

बहुत से लोग मानते हैं कि यदि वे सीधे नेपाल जाकर रुद्राक्ष खरीदेंगे, तो उन्हें कम कीमत में सबसे शुद्ध और सबसे असली रुद्राक्ष मिल जाएगा।

लेकिन वास्तविकता कई बार इससे बिल्कुल अलग होती है।

यदि किसी व्यक्ति को रुद्राक्ष की सही पहचान नहीं है, तो उसके लिए नकली और असली में अंतर करना बहुत कठिन होता है।

उच्च गुणवत्ता वाले रुद्राक्षों का बड़ा हिस्सा नेपाल से भारत, चीन और अन्य देशों में निर्यात कर दिया जाता है।

ऐसा इसलिए होता है क्योंकि अंतरराष्ट्रीय थोक व्यापारी गुणवत्ता को लेकर बहुत सख्त होते हैं।

निर्यात करने वालों को अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने और लगातार बड़े ऑर्डर प्राप्त करने के लिए सर्वोत्तम गुणवत्ता वाले रुद्राक्ष ही विदेश भेजने पड़ते हैं।

इसके विपरीत, कम गुणवत्ता वाले या कृत्रिम रूप से जोड़े गए रुद्राक्ष अक्सर स्थानीय बाज़ारों में रह जाते हैं और अनजान पर्यटकों को बेच दिए जाते हैं।

इसलिए केवल नेपाल जाकर खरीद लेना इस बात की गारंटी नहीं है कि आपको सर्वोत्तम गुणवत्ता वाला रुद्राक्ष ही मिलेगा। सही पहचान और विश्वसनीय स्रोत, दोनों उतने ही महत्वपूर्ण हैं।

3. 14 मुखी रुद्राक्ष की नक्काशी

14 मुखी रुद्राक्ष को भगवान शिव के तीसरे नेत्र से जुड़ा हुआ माना जाता है। इसे अत्यंत शक्तिशाली और अत्यंत दुर्लभ रुद्राक्ष माना जाता है। एक पूरे फसल सीज़न में ऐसे केवल कुछ सौ रुद्राक्ष ही प्राप्त होते हैं।

चूँकि इसकी माँग बहुत अधिक होती है, इसलिए कुछ कुशल कारीगर साधारण **12 मुखी** रुद्राक्ष लेकर उस पर बारीकी से दो अतिरिक्त रेखाएँ (मुखियाँ) उकेर देते हैं। इसके लिए वे पतले और नुकीले औज़ारों का उपयोग करते हैं।

कुछ लोग तो सुपारी या लकड़ी के टुकड़े पर ही 14 मुखी जैसी आकृति बनाकर उसे असली रुद्राक्ष बताकर बेचते हैं।

इनकी कारीगरी कई बार इतनी बारीक होती है कि सामान्य आँखों से असली और नकली में अंतर कर पाना बहुत कठिन हो जाता है।

4. मंदिरों के बाहर होने वाले धोखे

बड़े तीर्थस्थलों और मंदिरों के बाहर स्थित दुकानों से रुद्राक्ष खरीदते समय विशेष सावधानी रखें।

अक्सर वहाँ आपको ऐसे रुद्राक्ष देखने को मिलेंगे जो बिल्कुल **शिवलिंग** के आकार के होंगे, या जिन पर "ॐ" का चिन्ह उभरा हुआ दिखाई देगा।

कई बार बिल्कुल चपटे चक्र जैसे या पूरी तरह गोल, कॉर्क की गेंद जैसे रुद्राक्ष भी बेचे जाते हैं।

अधिकांश मामलों में ये प्लास्टिक के साँचे, राल या तराशी हुई लकड़ी से बनाए जाते हैं।

प्रकृति स्वयं रुद्राक्ष के बीज पर इस प्रकार का पूर्ण "ॐ" चिन्ह नहीं बनाती।

भाग 2: नकली पहचानने के प्रचलित लेकिन गलत परीक्षण

कई वर्षों से लोगों को कुछ ऐसे "पारंपरिक परीक्षण" बताए जाते रहे हैं, जो वैज्ञानिक दृष्टि से सही नहीं हैं।

• पानी में डुबोकर जाँचने का तरीका

एक आम धारणा है कि असली रुद्राक्ष पानी में डूब जाएगा और नकली तैरने लगेगा।

यह पूरी तरह सही नहीं है।

यदि कोई असली रुद्राक्ष पूरी तरह परिपक्व नहीं है या समय के साथ उसके अंदर की नमी कम हो गई है, तो वह भी पानी पर तैर सकता है। दूसरी ओर, ठग अपने नकली 14 मुखी जैसे महंगे रुद्राक्षों को भारी दिखाने के लिए उनके अंदर सीसा भर देते हैं, ताकि वे पानी में डूब जाएँ। इसलिए केवल पानी में डूबना या तैरना यह सिद्ध नहीं करता कि रुद्राक्ष असली है।

- **ताँबे के सिक्कों वाला परीक्षण**

एक और प्रचलित धारणा है कि यदि रुद्राक्ष को दो ताँबे के सिक्कों के बीच रखा जाए, तो वह अपनी ऊर्जा के कारण अपने-आप घूमने लगेगा।

यह परीक्षण भी पूरी तरह विश्वसनीय नहीं है।

यह सही है कि असली रुद्राक्ष में डायामैग्नेटिक गुण और द्विध्रुवीय विद्युत-चुंबकीय ऊर्जा पाई जाती है।

लेकिन सिक्कों के बीच उसका घूमना मुख्य रूप से उसकी असमान सतह, घर्षण और बलाघूर्णजैसे भौतिक कारणों से होता है।

इतना ही नहीं, कोई भी पूरी तरह गोल वस्तु—जैसे प्लास्टिक का मनका या कोई गोल रत्न—भी दो सिक्कों के बीच घूम सकती है।

इसलिए यह परीक्षण भी असली और नकली की अंतिम पहचान नहीं है।

- **चावल की बोरी वाला परीक्षण**

एक और अजीब धारणा यह है कि यदि असली रुद्राक्ष को चावल की बोरी में दबा दिया जाए, तो वह अपने-आप ऊपर आ जाएगा।

इस बात का न तो कोई वैज्ञानिक आधार है और न ही इसका कोई प्रमाण उपलब्ध है।

भाग 3: असली रुद्राक्ष की 100% विश्वसनीय पहचान

यदि पानी, सिक्के और चावल वाले सभी परीक्षण भरोसेमंद नहीं हैं, तो फिर असली रुद्राक्ष की पहचान कैसे की जाए?

इसका सबसे विश्वसनीय तरीका केवल एक है—

बारीकी से की गई भौतिक जाँच और एक्स-रे।

भौतिक जाँच

एक अनुभवी विशेषज्ञ उच्च क्षमता वाले लेंस या सूक्ष्मदर्शी की सहायता से रुद्राक्ष की मुखियों की जाँच करता है।

प्राकृतिक मुखियाँ त्वचा की स्वाभाविक सिलवटों या बंद होंठों जैसी अंदर की ओर मुड़ी हुई दिखाई देती हैं।

जबकि कृत्रिम रूप से बनाई गई मुखियाँ चाकू या धारदार औज़ार से काटी गई सीधी और खुरदरी रेखाओं जैसी दिखाई देती हैं।

एक्स-रे परीक्षण

असली पहचान के लिए **एक्स-रे** सबसे भरोसेमंद तरीका माना जाता है।

बाहरी सतह को कुशल कारीगर बदल सकते हैं, लेकिन रुद्राक्ष के भीतर की संरचना को छिपाना आसान नहीं होता।

एक्स-रे से यह स्पष्ट हो जाता है कि—

- क्या अंदर बने खंडों की संख्या बाहरी मुखियों की संख्या से पूरी तरह मेल खाती है।
- क्या उन खंडों के भीतर वास्तविक बीज मौजूद हैं।
- क्या किसी नकली गौरीशंकर रुद्राक्ष में गोंद, धातु की कील या सीसा जैसी कोई कृत्रिम चीज़ छिपाई गई है।

जब आप उच्च गुणवत्ता वाले या महंगे रुद्राक्ष खरीदने जाएँ, तो पानी, ताँबे के सिक्के या चावल जैसे पारंपरिक परीक्षणों पर भरोसा करने के बजाय अनुभवी विशेषज्ञों की जाँच, सूक्ष्मदर्शी द्वारा निरीक्षण और एक्स-रे प्रमाणन पर विश्वास करें।

यही तरीका आपको जागरूक, आत्मविश्वासी और सही निर्णय लेने वाला रुद्राक्ष साधक बनाता है।

भाग 4: रुद्राक्ष खरीदने से पहले जानने योग्य सबसे महत्वपूर्ण बातें

अब जबकि आप नकली रुद्राक्ष की पहचान करना सीख चुके हैं, तो यह भी समझना ज़रूरी है कि रुद्राक्ष एक प्राकृतिक फल है और इसे खरीदते समय कुछ व्यवहारिक बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।

किसी भी विक्रेता को अपनी मेहनत की कमाई देने से पहले इन चार स्वर्णिम नियमों को हमेशा याद रखें।

1. यदि संभव हो, तो हमेशा नेपाली रुद्राक्ष को प्राथमिकता दें

यदि आपका बजट अनुमति देता है, तो हमेशा इंडोनेशियन (जावा) रुद्राक्ष की बजाय नेपाली रुद्राक्ष चुनें।

वनस्पति विज्ञान और ऊर्जा—दोनों दृष्टियों से नेपाली रुद्राक्ष अधिक घने होते हैं। उनका आकार और वजन का अनुपात बेहतर होता है तथा उनके अंदर बने प्राकृतिक खंड अधिक गहरे और स्पष्ट होते हैं।

इसी संरचनात्मक विशेषता के कारण वे अधिक शक्तिशाली जैव-विद्युत और चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न कर पाते हैं।

फलस्वरूप, इन्हें धारण करने वाले व्यक्ति को शारीरिक और आध्यात्मिक स्तर पर अपेक्षाकृत जल्दी और अधिक स्पष्ट परिणाम अनुभव हो सकते हैं।

2. रंग का भ्रम: रंग गुणवत्ता का प्रमाण नहीं होता

रुद्राक्ष खरीदते समय बहुत से लोग उसके रंग को लेकर भ्रमित हो जाते हैं और एक ही रंग के दाने खोजने लगते हैं।

यह बात पूरी तरह स्पष्ट कर लें—

रुद्राक्ष का रंग उसकी गुणवत्ता का मापदंड नहीं है।

प्राकृतिक रूप से प्राप्त रुद्राक्ष का रंग हल्के अखरोट जैसे भूरे रंग से लेकर हल्के शहद के रंग और गहरे शहद जैसे भूरे रंग तक अलग-अलग हो सकता है।

क्योंकि रुद्राक्ष पूरी तरह प्राकृतिक वनस्पति उत्पाद है, इसलिए उसका रंग कई बातों पर निर्भर करता है, जैसे—

- वह किस वृक्ष से प्राप्त हुआ है,
- किस भौगोलिक क्षेत्र में उगा है,
- और फसल के समय वहाँ का मौसम कैसा था।

इसके अलावा, जब आप रुद्राक्ष धारण करते हैं, तो वह धीरे-धीरे आपके शरीर की गर्मी, प्राकृतिक तेल और पसीने को अपने भीतर ग्रहण करता है।

समय के साथ उसका रंग स्वाभाविक रूप से गहरा होकर महोगनी या लगभग काला भी हो सकता है।

यह पूरी तरह सामान्य प्रक्रिया है और इसे एक जीवंत रुद्राक्ष का स्वाभाविक परिवर्तन माना जाता है।

इसके विपरीत, यदि किसी विक्रेता के पास एक जैसी कतार में बिल्कुल एक ही रंग के अत्यधिक गहरे भूरे रुद्राक्ष हों, तो सावधान हो जाइए।

अक्सर ऐसे रुद्राक्षों को कृत्रिम रूप से रंगा जाता है या तेल में पकाकर उन्हें पुराना और अधिक मूल्यवान दिखाने की कोशिश की जाती है।

यदि रुद्राक्ष **4-स्तरीय गुणवत्ता जाँच प्रणाली** पर खरा उतरता है, तो उसके रंग की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है।

3. बाहरी छिलके के अवशेष को लेकर भ्रम

जब रुद्राक्ष पहली बार पेड़ से तोड़ा जाता है, तब उसके ऊपर नीले-हरे रंग का एक मोटा बाहरी छिलका होता है।

इसे साफ़ करने के लिए सामान्यतः रुद्राक्ष को पानी में भिगोया जाता है और फिर मजबूत इस्पाती तार वाले ब्रश से रगड़कर उसका पूरा छिलका हटाया जाता है।

लेकिन कई बार आपको उच्च गुणवत्ता वाले रुद्राक्ष भी ऐसे मिलेंगे जिनकी गहरी मुखियों के बीच सूखे हुए छिलके के छोटे-छोटे अवशेष रह जाते हैं।

इसे गंदगी या अशुद्धि नहीं समझना चाहिए।

वास्तव में, कई पारंपरिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण रखने वाले विक्रेता रुद्राक्ष पर कठोर इस्पाती तार वाले ब्रश का उपयोग ही नहीं करते।

उनका मानना है कि रुद्राक्ष भगवान शिव का दिव्य स्वरूप है और उस पर कठोर लोहे के ब्रश का प्रयोग करना उचित नहीं है।

इसलिए वे उन्हें हाथ से बहुत सावधानीपूर्वक साफ़ करते हैं।

एक खरीदार के रूप में आपको इन छोटे-छोटे छिलकों की चिंता नहीं करनी चाहिए।

आपका ध्यान केवल इन बातों पर होना चाहिए—

- रुद्राक्ष का संतुलित आकार,
- उसकी स्पष्ट और गहरी मुखियाँ,
- तथा उसका उचित वजन।

4. समझदारी से बजट तय करें: 3 मुखी से 12 मुखी तक का चयन सबसे व्यावहारिक है

यह मत सोचिए कि भगवान शिव की कृपा प्राप्त करने के लिए आपको बहुत महँगा **14 मुखी** या कोई दुर्लभ संग्रहणीय श्रेणी का रुद्राक्ष ही धारण करना होगा।

यदि आपका बजट इसकी अनुमति नहीं देता, तो केवल दिखावे के लिए महँगा रुद्राक्ष खरीदने का प्रयास न करें।

3 मुखी से 12 मुखी तक के रुद्राक्ष भी आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक स्तर पर अत्यंत प्रभावशाली माने जाते हैं।

चूँकि ये अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में उपलब्ध होते हैं, इसलिए इनकी कीमत भी सामान्यतः सभी की पहुँच में होती है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इनके बाज़ार मूल्य में कृत्रिम बढ़ोतरी बहुत कम होती है।

इसलिए अपने बजट के अनुसार **उच्च गुणवत्ता वाला, घना और पर्याप्त वजन वाला 5 मुखी या 7 मुखी रुद्राक्ष** खरीदना कहीं अधिक समझदारी है,

बजाय इसके कि केवल प्रतिष्ठा के लिए कम गुणवत्ता वाला उच्च मुखी रुद्राक्ष खरीद लिया जाए।

जब आप पानी, ताँबे के सिक्कों और रंग जैसी भ्रांतियों को छोड़कर केवल संरचना, घनत्व और एक्स-रे प्रमाणन पर भरोसा करते हैं, तब कोई भी व्यक्ति आपको आसानी से धोखा नहीं दे सकता।

इस प्रकार आप सुनिश्चित करते हैं कि आपके हृदय के पास धारण किया गया रुद्राक्ष वास्तव में असली, बिना किसी छेड़छाड़ के और अत्यंत प्रभावशाली है।

प्रमाणपत्र का भ्रम: वास्तव में आपके रुद्राक्ष की जाँच कौन करता है?

सन् 2020 में कोविड-19 महामारी के बाद रुद्राक्ष की माँग में अचानक बहुत तेज़ वृद्धि हुई।

लोग आध्यात्मिक और मानसिक सहारे की तलाश में बड़ी संख्या में रुद्राक्ष खरीदने लगे।

इसी बढ़ती माँग के साथ एक नया व्यवसाय भी तेज़ी से फैलने लगा—**रुद्राक्ष परीक्षण प्रयोगशालाएँ।**

सबसे सामान्य प्रश्न जो लोग पूछते हैं, वह है—

"क्या यह रुद्राक्ष किसी सरकारी प्रयोगशाला से प्रमाणित है?"

इसका स्पष्ट उत्तर है—

रुद्राक्ष की जाँच के लिए किसी भी सरकारी मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला का अस्तित्व नहीं है।

इसी प्रकार, किसी सरकारी संस्था ने अब तक रुद्राक्ष की जाँच के लिए कोई मानक परीक्षण प्रक्रिया भी निर्धारित नहीं की है।

रुद्राक्ष की वास्तविक जाँच केवल उसकी प्राकृतिक वनस्पति संरचना के आधार पर ही की जा सकती है।

इसी कमी का लाभ उठाकर देश के कई हिस्सों—विशेषकर **करोल बाग (दिल्ली)** जैसे व्यापारिक क्षेत्रों—में अनेक निजी परीक्षण केंद्र खुल गए हैं।

ये प्रयोगशालाएँ अपने नाम के साथ **डीजीएल, सीजीएल, जीएल** जैसे आधिकारिक लगने वाले संक्षिप्त नाम जोड़कर प्रमाणपत्र जारी करती हैं।

लेकिन यहाँ एक मूलभूत समस्या है—**रत्न विशेषज्ञ रुद्राक्ष की जाँच करने के विशेषज्ञ नहीं होते।**

जेमोलॉजिस्ट का प्रशिक्षण रत्नों, खनिजों और पत्थरों का अध्ययन करने के लिए होता है।

उनकी शिक्षा में वनस्पति विज्ञान या बीजों की जैविक संरचना का अध्ययन शामिल नहीं होता।

फिर भी वे रुद्राक्ष की जाँच करके प्रमाणपत्र जारी कर रहे हैं, जिन पर अनजान लोग आसानी से विश्वास कर लेते हैं।

लेखक के अनुसार, ऐसी प्रयोगशालाओं की कार्यप्रणाली पारदर्शी नहीं होती और वे अपनी परीक्षण प्रक्रिया या मानकों को सार्वजनिक रूप से साझा भी नहीं करतीं।

चूँकि रुद्राक्ष एक **वनस्पति बीज** है, इसलिए उसकी वैज्ञानिक जाँच करने के लिए सबसे उपयुक्त व्यक्ति **वनस्पति वैज्ञानिक** या **कृषि एवं उद्यानिकी** के विशेषज्ञ होते हैं।

यही वे वैज्ञानिक हैं जो बीज की कोशिकीय संरचना, उसकी प्राकृतिक रेखाओं और आंतरिक खंडों को सही ढंग से समझ सकते हैं।

लेखक के अनुसार, इसी उद्देश्य से खोज करते हुए उन्हें उत्तराखंड के हरिद्वार स्थित **शिवप्रिया लैब्स** तथा **आरजीटीएल (रुद्राक्ष एंड जेम्स टेस्टिंग लेबोरेटरी)** जैसी प्रयोगशालाएँ मिलीं।

इन प्रयोगशालाओं का संचालन उद्यानिकी और वनस्पति विज्ञान के विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है।

ये रुद्राक्ष की जैविक संरचना की जाँच और प्रमाणन के लिए विशेष रूप से विकसित आधुनिक उपकरणों का उपयोग करती हैं।

लेखक के अनुसार, www.rudrasamrat.com पर उपलब्ध प्रत्येक रुद्राक्ष—विशेषकर **14 मुखी और उससे ऊपर** के रुद्राक्ष—की प्रामाणिकता सुनिश्चित करने के लिए केवल **शिवप्रिया लैब्स** और **आरजीटीएल लैब्स** की सेवाएँ ली जाती हैं, ताकि प्रत्येक रुद्राक्ष जैविक, संरचनात्मक और ऊर्जा के स्तर पर पूरी तरह प्रमाणित हो।

अध्याय 7:

ब्रह्मांडीय शक्ति का भंडार — 1 से 21

मुखी रुद्राक्ष का रहस्य

नमः शिवाय

अब तक हमने यह समझा कि रुद्राक्ष मानव शरीर पर किस प्रकार वैज्ञानिक रूप से कार्य करता है और उसकी गुणवत्ता तथा प्रामाणिकता की सही पहचान कैसे की जाए।

अब हम इस दिव्य बीज के सबसे रोचक और महत्वपूर्ण पहलू पर पहुँचते हैं—**मुखियों का विज्ञान**।

भगवान शिव ने केवल एक प्रकार का रुद्राक्ष नहीं बनाया।

वे जानते थे कि मनुष्य जीवन में अनेक प्रकार की शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और आध्यात्मिक बाधाओं का सामना करता है।

इसीलिए उन्होंने अलग-अलग प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए अलग-अलग प्रकार के रुद्राक्ष प्रदान किए—मानो हर समस्या के लिए एक अलग **ब्रह्मांडीय "चाबी"**।

रुद्राक्ष की **मुखियों की संख्या** (अर्थात् उसकी बाहरी रेखाएँ, जो उसके अंदर बने प्राकृतिक खंडों से मेल खाती हैं) यह निर्धारित करती है कि वह रुद्राक्ष किस प्रकार की विशिष्ट **विद्युत-चुंबकीय आवृत्ति** उत्पन्न करेगा।

हर मुखी की अपनी अलग ऊर्जा होती है।

यह ऊर्जा अलग-अलग चक्रों, अधिष्ठाता देवता और अधिपति ग्रहों के साथ सामंजस्य स्थापित करती है।

एक महत्वपूर्ण बात

शास्त्रों में कहा गया है कि रुद्राक्ष धारण करने से मनुष्य अपने पापों से मुक्ति की ओर बढ़ता है।

लेकिन इसका यह अर्थ बिल्कुल नहीं है कि रुद्राक्ष पहनकर कोई व्यक्ति जानबूझकर गलत कर्म करता रहे।

रुद्राक्ष धारण करने का वास्तविक अर्थ है—

व्यक्ति अपने द्वारा किए गए कर्मों को स्वीकार करे, उनके प्रति पश्चाताप का भाव रखे और आत्मिक सुधार के मार्ग पर चलने का संकल्प ले।

रुद्राक्ष केवल एक आभूषण नहीं है।

यह आत्म-परिवर्तन, आत्म-स्वीकार और आध्यात्मिक जागृति का प्रतीक है।

अब आगे के भागों में हम 1 मुखी से लेकर 21 मुखी रुद्राक्ष तक का विस्तार से अध्ययन करेंगे।

इसमें प्रत्येक रुद्राक्ष के बारे में शास्त्रों में वर्णित जानकारी, उसके अधिष्ठाता देवता, संबंधित ग्रह, उससे जुड़ी आध्यात्मिक मान्यताएँ तथा वर्तमान समय में उसके व्यावहारिक उपयोग—इन सभी विषयों को सरल और विस्तारपूर्वक समझेंगे।

1 मुखी रुद्राक्ष: परम चेतना का प्रतीक (सभी रुद्राक्षों का राजा)

॥ एक वक्त्रः शिवः साक्षाद् भुक्ति मुक्ति फलप्रदः ॥

अर्थ: "एकमुखी रुद्राक्ष स्वयं भगवान शिव का स्वरूप है। यह धारण करने वाले को सांसारिक सुखों के साथ-साथ जन्म-मरण के बंधन से मुक्ति भी प्रदान करता है।" (शिव पुराण, अध्याय 25, श्लोक 64)

- अधिष्ठाता देवता: भगवान शिव
- अधिपति ग्रह: सूर्य

- **बीज मंत्र:** ॐ ह्रीं नमः

एकमुखी रुद्राक्ष को सभी रुद्राक्षों का राजा या प्रधान माना जाता है।

यह सबसे रहस्यमय और सबसे अधिक चर्चा में रहने वाला रुद्राक्ष है।

यह स्वयं भगवान शिव का प्रत्यक्ष स्वरूप माना जाता है। शास्त्रों के अनुसार, जो व्यक्ति इसे धारण करता है, वह भगवान शिव के तेज़ और आभा का भागी बनता है तथा उच्चतम चेतना और आध्यात्मिक मुक्ति की ओर अग्रसर होता है।

इसी कारण इसकी प्रसिद्धि और माँग दोनों अत्यधिक हैं।

लेकिन दुर्भाग्य से, इसी प्रसिद्धि का सबसे अधिक दुरुपयोग भी किया जाता है।

आज रुद्राक्ष के नाम पर होने वाले अधिकांश बड़े धोखे और गलत दावे इसी एकमुखी रुद्राक्ष से जुड़े हुए हैं।

व्यावहारिक लाभ

एकमुखी रुद्राक्ष इंद्रियों पर नियंत्रण रखने और मन को दृढ़ बनाने में अत्यंत सहायक माना जाता है।

यदि कोई व्यक्ति शराब, धूम्रपान या अन्य गंभीर व्यसनो से बाहर निकलना चाहता है, तो यह रुद्राक्ष उसे आवश्यक इच्छाशक्ति प्रदान करने वाला माना जाता है।

उच्च नेतृत्व की भूमिकाओं में कार्य करने वाले लोगों—जैसे राजनीतिज्ञ, सरकारी अधिकारी, बड़ी कंपनियों के **मुख्य कार्यकारी अधिकारी** या निदेशक मंडल के सदस्य—के लिए भी इसे विशेष रूप से उपयुक्त माना जाता है।

ज्योतिष के अनुसार सूर्य का संबंध दाहिनी आँख, यकृत, हड्डियों और हृदय से माना जाता है।

इसी कारण इसे हृदय संबंधी रोगों, उच्च रक्तचाप तथा तंत्रिका तंत्र से जुड़ी समस्याओं में भी लाभकारी माना जाता है।

बाज़ार की सच्चाई

इस बात को हमेशा याद रखें—

कलियुग में पूरी तरह गोल, प्राकृतिक नेपाली एकमुखी रुद्राक्ष उपलब्ध नहीं है।

मेरे वर्षों के अनुभव ने मुझे एक कठोर सच्चाई सिखाई है—

जितना अधिक कोई व्यक्ति गोल नेपाली एकमुखी रुद्राक्ष की तलाश करता है, उसके धोखा खाने की संभावना उतनी ही बढ़ जाती है।

आज भी अनेक विक्रेता पूरे विश्वास के साथ दावा करते हैं कि वे लाखों रुपये में गोल नेपाली एकमुखी रुद्राक्ष उपलब्ध करा सकते हैं।

लेकिन स्वयं से एक सरल प्रश्न पूछिए—

यदि वास्तव में गोल नेपाली एकमुखी इतना दुर्लभ, इतना शक्तिशाली और जीवन में सर्वोच्च सफलता देने वाला है, तो उसे बेचने वाला व्यक्ति स्वयं उसे धारण क्यों नहीं करता?

एकमुखी रुद्राक्ष को लेकर कई ऐसी लोककथाएँ प्रचलित हैं जिनका कोई प्रमाणित ऐतिहासिक आधार उपलब्ध नहीं है।

अक्सर यह कहा जाता है कि इंदिरा गांधी, अमिताभ बच्चन, नेपाल के राजा जैसे अत्यंत सफल लोगों ने एकमुखी रुद्राक्ष धारण किया था।

ऐसी अप्रमाणित कहानियों के कारण लोग इसे प्राप्त करने के लिए अत्यधिक उत्साहित हो जाते हैं।

इसी का लाभ उठाकर आज वैश्विक बाज़ार में बिकने वाले नकली रुद्राक्षों में लगभग **60–70%** केवल नकली **एकमुखी** होते हैं।

यदि कोई व्यक्ति आपको गोल नेपाली एकमुखी बेच रहा है, तो अधिकांश मामलों में वह वास्तव में ऐसा रुद्राक्ष बेच रहा होता है जो आनुवंशिक परिवर्तन या अधूरे विकास के कारण बाहर से केवल एक मुखी जैसा दिखाई देता है, जबकि उसके भीतर **3, 4 या 5 मुखी** की संरचना होती है।

जैसा कि पिछले अध्यायों में बताया गया है, उसकी वास्तविक पहचान उसकी आंतरिक संरचना से होती है, केवल बाहरी रेखाओं से नहीं।

गोल एकमुखी होना वनस्पति विज्ञान के अनुसार संभव क्यों नहीं?

इस बात को एक बार फिर स्पष्ट रूप से समझ लें—

पूरी तरह गोल प्राकृतिक नेपाली एकमुखी रुद्राक्ष प्रकृति में उपलब्ध नहीं है।

वनस्पति विज्ञान और ज्यामिति दोनों के अनुसार किसी भी रुद्राक्ष का बाहरी आकार उसके अंदर बने प्राकृतिक खंडों पर निर्भर करता है।

उदाहरण के लिए—

- **5 मुखी** का आकार पंचकोणीय होता है।
- **4 मुखी** का आकार लगभग चौकोर होता है।
- **3 मुखी** शंकु जैसा होता है।
- **2 मुखी** लंबा होता है।

इसी प्राकृतिक सिद्धांत के अनुसार यदि कभी वास्तविक नेपाली एकमुखी रुद्राक्ष होता, तो उसका आकार पूरी तरह गोल नहीं हो सकता।

उसका आकार भगवान शिव के **तीसरे नेत्र** जैसा होता।

रेगमाल वाला धोखा

कुछ ठग असली **5 मुखी नेपाली रुद्राक्ष** (या सस्ते इंडोनेशियन रुद्राक्ष) लेकर उनकी चार मुखियों को रेगमाल या अन्य औज़ारों से घिस देते हैं।

इसके बाद बाहर केवल एक ही रेखा दिखाई देती है और उसे एकमुखी रुद्राक्ष बताकर बेच दिया जाता है।

ऐसे धोखों से हमेशा सावधान रहें।

बाज़ार में एकमुखी के नाम पर मिलने वाले विकल्प

1. हरिद्वार/देहरादून की प्रजाति (एलिओकार्पस सिक्किमेन्सिस)

यह भद्राक्ष परिवार का रुद्राक्ष है।

इसका आकार चपटा और आँख जैसा होता है तथा इसमें प्राकृतिक रूप से बीच में छेद नहीं होता।

इसकी वास्तविक बनावट छिपाने के लिए कई विक्रेता इसे सोने या चाँदी की भारी जड़ार्ई में लगाकर बहुत ऊँची कीमत पर बेचते हैं।

2. इंडोनेशियन (जावा) एकमुखी

यह वास्तव में प्राकृतिक एकमुखी रुद्राक्ष है। लेकिन यह गोल नहीं होता।

इसका आकार लगभग **3-4 मिमी से 10 मिमी** तक का छोटा, अंडाकार या बेलनाकार होता है।

इतना छोटा होने के कारण इसके भीतर बने खंड भी छोटे होते हैं, इसलिए यह अकेले धारण करने पर अपेक्षाकृत कम प्रभाव देता है।

इसी कारण इसे सामान्यतः कई दानों के साथ पहनने की सलाह दी जाती है।

इसकी ऊँची कीमत और अपेक्षाकृत कम व्यक्तिगत प्रभाव के कारण यह बहुत लोकप्रिय नहीं है।

3. "एकमुखी सवार"

कभी-कभी किसी बहुमुखी रुद्राक्ष—जैसे गणेश रुद्राक्ष—पर सूँड़ जैसी प्राकृतिक आकृति बन जाती है।

यदि उस उभरे हुए भाग पर एक मुखी की रेखा हो, तो कुछ लोग उसे तोड़कर अलग बेच देते हैं और उसे "एकमुखी सवार" कहते हैं।

आध्यात्मिक और वैज्ञानिक—दोनों दृष्टियों से यह उचित नहीं माना जाता।

रुद्राक्ष को जानबूझकर तोड़ने पर वह **खंडित** हो जाता है।

ऐसे रुद्राक्ष को धारण नहीं करना चाहिए।

इसके विपरीत, यदि वही **सवार रुद्राक्ष** बिना तोड़े, अपने मूल रूप में धारण किया जाए, तो उसे भगवान शिव, माता गौरी और भगवान गणेश—तीनों की कृपा का प्रतीक माना जाता है।

इसी कारण इसे प्राकृतिक रूप से उपलब्ध सबसे श्रेष्ठ विकल्पों में से एक माना जाता है।

4. सर्वोत्तम विकल्प: काजू दाना (एलिओकार्पस ट्यूबरकुलेटस)

यदि एकमुखी का सबसे उपयुक्त और व्यापक रूप से स्वीकार किया गया विकल्प माना जाए, तो वह **काजू दाना रुद्राक्ष** है।

यह भी **भद्राक्ष परिवार** से संबंधित है और प्राकृतिक रूप से आधे चाँद या काजू जैसी आकृति में विकसित होता है।

बाज़ार में सामान्यतः इसका आकार **20–25 मिमी** तक होता है।

जबकि उत्कृष्ट संग्रहणीय श्रेणी के रुद्राक्ष 30–33 मिमी से शुरू होते हैं और कुछ विशेष रुद्राक्ष 40–42 मिमी तक भी पहुँचते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण नियम

काजू दाना रुद्राक्ष में कभी भी छेद नहीं करवाना चाहिए।

यदि इसमें ड्रिल करके छेद किया जाता है, तो उसके अंदर का प्राकृतिक खंड क्षतिग्रस्त हो जाता है और उसकी ऊर्जा प्रभावित होती है।

इसे विशेष धातु के पिंजरे या चाँदी/सोने के तार की सहायता से बाहर से पकड़कर ही धारण करना चाहिए।

विक्रेताओं से सावधान रहें

हरिद्वार सहित कई स्थानों पर कुछ विक्रेता स्वयं को वर्षों पुराना विशेषज्ञ बताते हैं।

लेकिन लेखक के अनुसार, उनमें से अनेक लोग इस महत्वपूर्ण नियम से परिचित नहीं होते क्योंकि उन्होंने स्वयं शास्त्रों का अध्ययन नहीं किया होता।

उनके लिए रुद्राक्ष मुख्यतः व्यापार का साधन होता है।

इसलिए यदि कोई काजू दाना रुद्राक्ष में छेद करने की सलाह दे, तो उसे स्वीकार न करें।

धारण करने से पहले शुद्धिकरण

चूँकि यह सामान्य नेपाली रुद्राक्ष से अलग वनस्पति परिवार से संबंधित है, इसलिए इसमें हल्का प्राकृतिक विषाक्त तत्व माना जाता है।

इसी कारण इसे धारण करने से पहले **पंचामृत** से शुद्ध करके उसकी दिव्य ऊर्जा को जागृत करने की परंपरा बताई जाती है।

अंतिम बात

एकमुखी रुद्राक्ष जैसे दुर्लभ रुद्राक्ष के मामले में केवल आँखों से देखकर या भावनात्मक कहानियों पर विश्वास करके निर्णय न लें।

लेखक के अनुसार, इसकी सही पहचान के लिए आधुनिक वैज्ञानिक परीक्षण—जैसे **एक्स-रे, विशिष्ट घनत्व और उन्नत चालकता परीक्षण**—सबसे विश्वसनीय माध्यम हैं।

इन्हीं के आधार पर रुद्राक्ष की आंतरिक संरचना और उसकी वास्तविक गुणवत्ता की पुष्टि की जा सकती है।



2 मुखी रुद्राक्ष: सामंजस्य का प्रतीक

॥ द्विवक्त्रस्तु मुनिश्रेष्ठ अर्धनारीश्वरी भवेत् ॥

अर्थ: "हे श्रेष्ठ मुनि नारद! दो मुखी रुद्राक्ष स्वयं अर्धनारीश्वर का स्वरूप है।"
(श्रीमद् देवी भागवत, अध्याय 7, श्लोक 24)

- अधिष्ठाता देवता: अर्धनारीश्वर (भगवान शिव एवं माता पार्वती)
- अधिपति ग्रह: चंद्र
- बीज मंत्र: ॐ नमः

1 से 21 मुखी रुद्राक्षों की श्रृंखला में 2 मुखी सबसे छोटा रुद्राक्ष है।

लेकिन इसके छोटे आकार को देखकर इसकी शक्ति का अनुमान नहीं लगाया जा सकता।

1 से 14 मुखी की श्रेणी में यह 14 मुखी के बाद दूसरा सबसे महंगा नेपाली रुद्राक्ष माना जाता है।

यह भगवान शिव और माता पार्वती के संयुक्त स्वरूप अर्धनारीश्वर का प्रतीक है।

अर्धनारीश्वर की कथाएँ

2 मुखी रुद्राक्ष की शक्ति दो प्रमुख पौराणिक कथाओं से जुड़ी हुई मानी जाती है। दोनों कथाएँ यह समझाती हैं कि यह रुद्राक्ष विरोधी ऊर्जाओं में संतुलन और एकता कैसे स्थापित करता है।

• असुर आदि की कथा

एक बार आदि नाम का एक असुर माता पार्वती का रूप धारण करके कैलाश पर्वत पहुँच गया।

जब वास्तविक माता पार्वती ने भगवान शिव के पास अपने ही समान रूप वाली दूसरी स्त्री को देखा, तो वे अत्यंत क्रोधित हो गईं।

क्रोध में उनका वर्ण काला हो गया और उन्होंने माँ काली का उग्र रूप धारण कर लिया।

वे अपने प्राण त्यागने का भी विचार करने लगीं।

तभी भगवान ब्रह्मा ने हस्तक्षेप किया, उन्हें शांत किया और वरदान दिया कि अब वे कभी भगवान शिव से अलग नहीं होंगी।

इसी वरदान से भगवान शिव और माता पार्वती का संयुक्त स्वरूप **अर्धनारीश्वर** प्रकट हुआ।

- **ऋषि भृंगी की कथा**

ऋषि **भृंगी** भगवान शिव के अत्यंत भक्त थे।

वे जब भी कैलाश जाते हैं, केवल भगवान शिव की पूजा करते हैं और माता पार्वती की उपेक्षा कर देते।

उन्हें यह समझाने के लिए भगवान शिव माता पार्वती के बिल्कुल पास बैठ गए।

लेकिन भृंगी अपनी जिद पर अड़े रहे।

उन्होंने सर्प का रूप धारण किया और दोनों के बीच से निकलकर केवल भगवान शिव की ही परिक्रमा कर ली।

अगली बार भगवान शिव ने माता पार्वती को अपनी गोद में बैठा लिया। तब भी भृंगी नहीं माने। उन्होंने एक छोटे से भँवरे का रूप लिया और केवल भगवान शिव के सिर की परिक्रमा कर ली।

अंततः भगवान शिव ने माता पार्वती को अपने शरीर में समाहित कर लिया और **अर्धनारीश्वर** रूप धारण किया।

तब भृंगी को यह समझ आया कि माता पार्वती के बिना भगवान शिव की उपासना अधूरी है।

यहीं से यह सिद्ध हुआ कि सृष्टि में स्त्री और पुरुष—दोनों ऊर्जाएँ समान रूप से आवश्यक हैं।

जैसे आधुनिक विज्ञान यह बताता है कि पुरुषों में भी स्त्री हार्मोन होते हैं और स्त्रियों में भी पुरुष हार्मोन पाए जाते हैं, उसी प्रकार यह रुद्राक्ष शरीर के भीतर मौजूद स्त्री और पुरुष दोनों प्रकार की ऊर्जाओं में संतुलन स्थापित करने का प्रतीक माना जाता है।

व्यावहारिक लाभ

- **संबंधों में सामंजस्य**

2 मुखी रुद्राक्ष को संबंधों में मधुरता और संतुलन लाने वाला सर्वोत्तम रुद्राक्ष माना जाता है।

यह पति-पत्नी, भाई-भाई, सास-बहू, व्यापारिक साझेदारों तथा खरीदार और विक्रेता जैसे संबंधों में आपसी समझ और सामंजस्य बढ़ाने में सहायक माना जाता है।

- **मानसिक स्वास्थ्य और चंद्र ग्रह**

चंद्रमा का संबंध पृथ्वी के जल और मनुष्य की भावनाओं से माना जाता है।

चूँकि 2 मुखी का अधिपति ग्रह **चंद्र** है, इसलिए इसे मन के उतार-चढ़ाव, गहरी उदासी और चिंता जैसी समस्याओं में विशेष रूप से लाभकारी माना जाता है।

विशेष सुझाव: लेखक के अनुसार, गंभीर अवसाद की स्थिति में **तीन 2 मुखी रुद्राक्ष** साथ में धारण करना अधिक प्रभावी माना जाता है।

- **स्वास्थ्य और पारिवारिक जीवन**

यह रुद्राक्ष पेट और गुर्दों से जुड़ी समस्याओं में भी उपयोगी माना जाता है।

इसके अलावा, जिन दंपतियों को संतान प्राप्ति या गर्भधारण में कठिनाई होती है, उनके लिए भी इसे शुभ और सहायक माना जाता है।

- **अंक ज्योतिष**

यह रुद्राक्ष विशेष रूप से उन लोगों के लिए शुभ माना जाता है जिनका जन्म किसी भी महीने की **2, 11, 20 या 29** तारीख को हुआ हो।

आकार और विशेषताएँ

असली नेपाली **2 मुखी रुद्राक्ष** पूरी तरह गोल नहीं होता।

इसका आकार हल्का लंबा और दोनों सिरों की ओर थोड़ा पतला होता है।

सामान्य बाज़ार में मिलने वाला आकार

- 13 मिमी से 15 मिमी
- सामान्यतः वजन 1 ग्राम से कम

त्कृष्ट संग्रहणीय श्रेणी

- 16 मिमी से 20 मिमी
- वजन 1 से 1.25 ग्राम या उससे अधिक होना चाहिए।

बाज़ार की सच्चाई (नकली से कैसे बचें)

उच्च गुणवत्ता वाला नेपाली **2-मुखी** अत्यंत दुर्लभ और महँगा होता है।

इसी कारण बाज़ार में इसके नाम पर कई प्रकार के विकल्प और भ्रामक दावे किए जाते हैं।

1. हरिद्वार / देहरादून वाला भ्रम

कम कीमत पर मिलने वाले अधिकांश **2 मुखी** वास्तव में हरिद्वार या देहरादून क्षेत्र में मिलने वाले **भद्राक्ष** होते हैं।

ये चपटे, लकड़ी जैसे होते हैं और इनमें प्राकृतिक रूप से बीच में छेद भी नहीं होता।

कई विक्रेता इन्हें नेपाली रुद्राक्ष बताकर बेचते हैं, जबकि वे वास्तव में नेपाल के नहीं होते।

2. कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों का भ्रम

कई बार कोई 2 मुखी देखने में नेपाली रुद्राक्ष जैसा लगता है।

लेकिन उसके आकार से अधिक महत्वपूर्ण उसका **भौगोलिक स्रोत** होता है।

भारत-नेपाल सीमा के कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में भी 2 मुखी रुद्राक्ष प्राप्त होते हैं।

यद्यपि वे उसी क्षेत्र से आते हैं, लेकिन उनकी घनता, विशिष्ट घनत्व और वजन अपेक्षाकृत कम होता है। इसके कारण उनकी जैव-विद्युत क्षमता भी कम मानी जाती है।

इसलिए 2 मुखी खरीदते समय हमेशा उसके स्रोत के बारे में जानकारी लें और जहाँ तक संभव हो, उच्च हिमालयी क्षेत्रों में उगे हुए रुद्राक्ष को प्राथमिकता दें।

लेखक के अनुसार, बाज़ार में इसी प्रकार की गलत बिक्री और गुणवत्ता से समझौता किए जाने के कारण www.rudrasamrat.com पर केवल उच्च घनत्व वाले, प्रमाणित नेपाली 2 मुखी रुद्राक्ष ही उपलब्ध कराए जाते हैं, ताकि साधकों को बिना किसी भ्रम या समझौते के सर्वोत्तम गुणवत्ता प्राप्त हो सके।

3 मुखी रुद्राक्ष: अग्नि द्वारा शुद्धि का प्रतीक

त्रिमुखश्चैव रुद्राक्षोऽप्यग्नित्रयस्वरूपकः ।

अग्निस्तस्य प्रतुष्टः स्यात् त्रिमुखस्य धारणात् ॥

अर्थ: "तीन मुखी रुद्राक्ष तीनों प्रकार की अग्नियों का स्वरूप है। जो व्यक्ति तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करता है, उस पर अग्निदेव प्रसन्न होकर अपनी कृपा बरसाते हैं।" (श्रीमद् देवी भागवत, अध्याय 6, श्लोक 26)

- **अधिष्ठाता देवता:** अग्निदेव / ब्रह्मा, विष्णु और महेश
- **अधिपति ग्रह:** मंगल
- **बीज मंत्र:** ॐ क्लीं नमः

जिस प्रकार अग्नि हर वस्तु को जलाकर भी स्वयं शुद्ध रहती है, उसी प्रकार **3 मुखी रुद्राक्ष** व्यक्ति के पिछले पापों, कर्मों के बोझ और मन में छिपे अपराधबोध को दूर करने का प्रतीक माना जाता है।

व्यावहारिक लाभ

- **ऊर्जा और प्रेरणा**

मंगल ग्रह ऊर्जा, साहस, उत्साह और कर्म का ग्रह माना जाता है।

यदि आपको हमेशा आलस्य महसूस होता है, किसी काम को करने का मन नहीं करता या हर काम टालने की आदत है, तो 3 मुखी रुद्राक्ष को इस सुस्ती को दूर करने वाला माना जाता है।

लेखक अपने व्यक्तिगत अनुभव का उल्लेख करते हुए बताते हैं कि 3 मुखी रुद्राक्ष धारण करने के लगभग **10 दिनों के भीतर** उन्होंने नियमित रूप से व्यायाम करना शुरू कर दिया।

- **डर पर विजय और आत्मविश्वास**

यदि आप आत्मविश्वास की कमी, चिंता या अवसाद जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं, तो यह रुद्राक्ष मन में साहस, आत्मविश्वास और आंतरिक शक्ति विकसित करने में सहायक माना जाता है।

यह भय को कम करके व्यक्ति को अधिक निडर और ऊर्जावान बनाता है।

इसी कारण इसे पुलिसकर्मियों, सेना के जवानों और खिलाड़ियों के लिए विशेष रूप से उपयुक्त माना जाता है।

- **बच्चों की सुरक्षा**

3 मुखी रुद्राक्ष को **मांगलिक दोष** के लिए अत्यंत प्रभावी माना जाता है। इसके साथ ही इसे दुर्घटनाओं से सुरक्षा देने वाला रुद्राक्ष भी माना जाता है।

लेखक के अनुसार, यदि किसी बच्चे को बार-बार चोट लगती हो या छोटी-बड़ी दुर्घटनाएँ होती रहती हों, तो उसे छोटे आकार का **3 मुखी रुद्राक्ष** काले या लाल धागे में गले में पहनाने की सलाह दी जाती है।

ऐसा माना जाता है कि इससे बच्चे की सुरक्षा में सहायता मिलती है।

स्वास्थ्य संबंधी लाभ

3 मुखी रुद्राक्ष को हृदय तथा शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए अत्यंत लाभकारी माना जाता है।

चूँकि इसका संबंध मंगल ग्रह से है, इसलिए इसे—

- रक्ताल्पता (रक्त की कमी),

- रक्त संचार,
 - तथा शरीर में रक्त प्रवाह को बेहतर बनाने में सहायक माना जाता है।
- इसे हृदय संबंधी गंभीर समस्याओं, बाईपास सर्जरी के बाद की स्वास्थ्य-लाभ, रक्त कैंसर तथा घाव जैसी स्थितियों में भी उपयोगी माना जाता है।

लेखक के अनुसार, नेपाली **3 मुखी रुद्राक्षों की पूरी कंठी** धारण करना विशेष रूप से हृदय स्वास्थ्य और उच्च रक्तचाप से जूझ रहे लोगों के लिए लाभकारी माना जाता है।

अंक ज्योतिष और पेशे

• अंक 9

यदि आपकी जन्मतिथि में **9 अंक दो से अधिक बार** आता है, तो अंक ज्योतिष के अनुसार 3 मुखी रुद्राक्ष धारण करना विशेष रूप से लाभकारी माना जाता है।

• किन लोगों के लिए विशेष रूप से उपयुक्त

लेखक के अनुसार यह रुद्राक्ष विशेष रूप से इन लोगों के लिए लाभकारी माना जाता है—

- शल्य चिकित्सक
 - उच्च तकनीकी शिक्षा करने वाले विद्यार्थी
 - आग या अत्यधिक ताप से जुड़े कार्य करने वाले लोग (जैसे बॉयलर, बेकरी आदि)
 - पुलिस और सेना के कर्मचारी
- #### • भूमि और अचल संपत्ति
- मंगल ग्रह का संबंध भूमि और संपत्ति से माना जाता है।

इसी कारण लेखक के अनुसार कई अचल संपत्तिव्यवसायी **3 मुखी रुद्राक्ष की 54 दानों वाली कंठी** धारण करते हैं, ताकि रुके हुए भूमि विवाद सुलझें और संपत्ति से जुड़े कार्य पूरे हो सकें।

हृदय और आभामंडल के लिए विशेष संयोजन

लेखक के अनुसार यदि—

- 1 मुखी (काजू दाना)
- 3 मुखी
- 5 मुखी

— इन तीनों को एक साथ धारण किया जाए, तो यह एक अत्यंत प्रभावशाली ऊर्जा कवच बनाता है।

इसे विशेष रूप से—

- हृदय संबंधी समस्याओं में,
- तथा व्यक्ति के आभामंडल को मजबूत और शुद्ध करने के लिए लाभकारी माना जाता है।

आकार, विशेषताएँ और बाज़ार की सच्चाई

असली नेपाली 3 मुखी रुद्राक्ष का आकार 2 मुखी की तरह नहीं होता।

यह हल्का पिरामिड जैसा और अंडाकार होता है तथा इसका बीच वाला भाग अपेक्षाकृत मोटा होता है।

उच्च गुणवत्ता वाले नेपाली 3 मुखी रुद्राक्ष सामान्यतः **15 मिमी से 20 मिमी** के बीच मिलते हैं।

हरिद्वार और नेपाली 3 मुखी में अंतर

जैसा कि पहले बताया गया है, हरिद्वार और देहरादून क्षेत्र में मिलने वाला **भद्राक्ष (एलिओकार्पस सिक्किमेन्सिस)** प्राकृतिक रूप से बीच में छेद नहीं रखता।

इसे पहनने योग्य बनाने के लिए उसमें कृत्रिम रूप से छेद करना पड़ता है।

लेखक के अनुसार, कुछ लोग 2 मुखी रुद्राक्ष के मामले में इसकी कीमत बहुत अधिक होने के कारण हरिद्वार वाले विकल्प पर विचार कर सकते हैं।

लेकिन **3 मुखी रुद्राक्ष** के मामले में ऐसा करने का कोई विशेष कारण नहीं है।

निष्कर्ष

हरिद्वार के 3 मुखी और असली नेपाली 3 मुखी की कीमत में बहुत अधिक अंतर नहीं होता।

साथ ही, उच्च गुणवत्ता वाला नेपाली 3 मुखी बाज़ार में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध भी है।

इसलिए लेखक के अनुसार कृत्रिम रूप से छेद किए गए हरिद्वार वाले विकल्प को लेने के बजाय हमेशा **प्राकृतिक नेपाली 3 मुखी रुद्राक्ष** ही चुनना चाहिए, ताकि उसकी ऊर्जा और प्रभाव का सर्वोत्तम लाभ प्राप्त किया जा सके।

4 मुखी रुद्राक्ष: सृजन और बुद्धि का प्रतीक

चतुर्बक्त्रः स्वयं ब्रह्मा यस्य देहे प्रतिष्ठितः।

स भवेत् सर्वशास्त्रज्ञो द्विजो वेदविदां वरः॥

अर्थ: "चार मुखी रुद्राक्ष स्वयं भगवान ब्रह्मा का स्वरूप है। जो व्यक्ति इसे धारण करता है, वह वेदों तथा अन्य सभी शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने योग्य बनता है।" (*पद्म पुराण, अध्याय 57, श्लोक 48*)

- **अधिष्ठाता देवता:** भगवान ब्रह्मा (तथा माता सरस्वती)
- **अधिपति ग्रह:** बुध
- **बीज मंत्र:** ॐ ह्रीं नमः

4 मुखी रुद्राक्ष भगवान ब्रह्मा के चार मुखों, चारों दिशाओं तथा मानव जीवन के चार आश्रमों—**ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास**—का प्रतीक माना जाता है।

इसी कारण इसे बुद्धि, ज्ञान और सृजनात्मक क्षमता का सबसे महत्वपूर्ण रुद्राक्ष माना जाता है।

चूँकि यह जीवन के सभी चरणों का प्रतिनिधित्व करता है, इसलिए शास्त्रों के अनुसार इसे किसी भी आयु में धारण किया जा सकता है। रुद्राक्ष धारण करने के लिए कोई आयु सीमा निर्धारित नहीं की गई है।

ऐसा माना जाता है कि 4 मुखी रुद्राक्ष धारण करने से व्यक्ति को चारों दिशाओं से सफलता और अवसर प्राप्त होते हैं।

इस रुद्राक्ष की पहचान तीन मुख्य गुणों से की जाती है—

बुद्धिमत्ता, रचनात्मकता और प्रभावशाली वाणी।

व्यावहारिक लाभ

- **वाणी की शक्ति (वाक् सिद्धि)**

4 मुखी रुद्राक्ष व्यक्तित्व विकास के लिए सबसे प्रभावशाली रुद्राक्षों में से एक माना जाता है।

ऐसा माना जाता है कि इसे धारण करने से **वाक् सिद्धि** प्राप्त होती है, अर्थात व्यक्ति की वाणी में स्पष्टता, प्रभाव और आकर्षण आता है।

इसी कारण इसे विशेष रूप से निम्न लोगों के लिए उपयोगी माना जाता है—

- शिक्षक
- प्रशिक्षक
- विपणन और विक्रय से जुड़े लोग
- नेतृत्व की भूमिका निभाने वाले व्यक्ति
- तथा वे सभी लोग, जिन्हें अपने शब्दों के माध्यम से दूसरों को प्रभावित करना होता है।

- **विद्यार्थियों का सबसे अच्छा साथी**

4 मुखी रुद्राक्ष को स्मरण शक्ति, एकाग्रता और विश्लेषणात्मक क्षमता बढ़ाने वाला माना जाता है।

विशेष रूप से उन विद्यार्थियों के लिए इसे उपयोगी माना जाता है जो पढ़ने के कुछ समय बाद ही सीखी हुई बातें भूल जाते हैं।

- **बोलने और ध्यान की समस्याओं में**

जिन बच्चों को—

- हकलाने,
- तुतलाने,
- या ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई होती है,

उनके लिए भी यह रुद्राक्ष लाभकारी माना जाता है।

लेखक के अनुसार, तीसरे दिन की विशेष "दुग्धोपचार" के साथ इसका उपयोग अच्छे परिणाम दे सकता है।

शिक्षा में एकाग्रता बढ़ाने के लिए लेखक जिस "विद्या बंध" का उल्लेख करते हैं, उसमें **दो 4 मुखी** और **एक 6 मुखी** रुद्राक्ष का संयोजन प्रयोग किया जाता है।

स्वास्थ्य संबंधी लाभ

लेखक के अनुसार 4 मुखी रुद्राक्ष के परावैद्युत गुण मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र को सक्रिय करने में सहायता करते हैं।

इसे निम्न स्थितियों में लाभकारी माना जाता है—

- मनोभ्रंश
- मिर्गी
- लकवा
- अल्ज़ाइमर

ज्योतिष और अंक ज्योतिष

- **यदि जन्मतिथि में 5 अंक नहीं है**

बहुत से लोग पूछते हैं कि यदि उनकी जन्मतिथि में **5 अंक बिल्कुल नहीं हैं**, तो क्या करना चाहिए।

लेखक के अनुसार, ऐसी स्थिति में **4 मुखी रुद्राक्ष** धारण करना उपयुक्त माना जाता है।

- **बुध ग्रह को संतुलित करने के लिए**

यदि किसी व्यक्ति की कुंडली में **बुध ग्रह** कमजोर हो या अशुभ स्थिति में हो, तब भी लेखक के अनुसार 4 मुखी रुद्राक्ष बिना किसी संकोच के धारण किया जा सकता है।

उनका मत है कि रुद्राक्ष कुंडली के साथ किसी प्रकार का नकारात्मक टकराव उत्पन्न नहीं करता और इसके कोई दुष्प्रभाव नहीं होते।

आकार, विशेषताएँ और बाज़ार की सच्चाई

4 मुखी से आगे नेपाली रुद्राक्षों का आकार सामान्यतः पहले की तुलना में बड़ा होने लगता है।

- **खेती से जुड़ी वास्तविकता**

4 मुखी रुद्राक्षों में ऐसे दाने बड़ी संख्या में मिलते हैं जिन्हें अधिक समय तक पेड़ पर रहने दिया जाता है ताकि उनका आकार बड़ा हो जाए।

लेखक इन्हें **औषधीय रुद्राक्ष** कहकर संबोधित करते हैं।

ऐसे बड़े आकार वाले रुद्राक्षों की मुखियाँ कई बार छोटे रुद्राक्षों की तुलना में उतनी गहरी और स्पष्ट दिखाई नहीं देती।

यह खेती और प्राकृतिक परिस्थितियों का परिणाम हो सकता है।

- **सामान्य और उच्च आकार**

सामान्य बाज़ार में मिलने वाले 4 मुखी रुद्राक्ष का आकार लगभग—

- 17 मिमी से 19 मिमी
- तथा वजन लगभग 2.5 ग्राम होता है।

लेखक के अनुसार **20 मिमी या उससे बड़े** रुद्राक्ष ऊर्जा के बेहतर संचार के लिए अधिक उपयुक्त माने जाते हैं।

24 मिमी से बड़े 4 मुखी रुद्राक्ष अत्यंत दुर्लभ होते हैं।

• खरीदते समय क्या चुनें?

चूँकि 4 मुखी रुद्राक्ष सबसे अधिक मात्रा में उपलब्ध और अपेक्षाकृत सस्ते रुद्राक्षों में से एक है, इसलिए लेखक सलाह देते हैं कि सामान्य आकार पर संतुष्ट न हों।

यदि संभव हो, तो बेहतर गुणवत्ता वाला बड़ा रुद्राक्ष चुनें।

उनके अनुसार आदर्श रूप से—

- आकार 23 मिमी या उससे अधिक हो,
- तथा वजन 3.9 से 4 ग्राम या उससे अधिक हो।

ऐसे उच्च गुणवत्ता वाले रुद्राक्ष को मानसिक क्षमता, स्मरण शक्ति और बौद्धिक विकास के लिए अधिक प्रभावी माना जाता है।

5 मुखी: श्रेष्ठ मनका

पञ्चवक्त्रः स्वयं रुद्रः कालाग्निर्नामतः प्रभुः ।

सर्वमुक्तिप्रदश्चैव सर्वकामफलप्रदः ॥

"5 मुखी रुद्राक्ष अच्छे स्वास्थ्य और मन की शांति के लिए उत्तम माना जाता है और असमय मृत्यु से रक्षा करता है।" (शिव पुराण, अध्याय 25, श्लोक 69)

- अधिष्ठाता देव: कालाग्नि रुद्र
- स्वामी ग्रह: बृहस्पति
- बीज मंत्र: ॐ ह्रीं नमः

दुनिया भर में मिलने वाले कुल रुद्राक्षों में लगभग **65% से 70% हिस्सा 5 मुखी रुद्राक्ष का होता है।** यही वजह है कि इसे रुद्राक्ष की दुनिया का सबसे बुनियादी और महत्वपूर्ण रुद्राक्ष माना जाता है।

यह भगवान शिव के पाँच स्वरूपों—**सद्योजात, ईशान, तत्पुरुष, अघोर और वामदेव**—का प्रतिनिधित्व करता है। साथ ही यह जीवन के पाँच मूल तत्वों यानी **पंचमहाभूतों** के संतुलन का भी प्रतीक है:

- पृथ्वी
- जल

- अग्नि
- वायु
- आकाश

इसे "श्रेष्ठ मनका" क्यों कहा जाता है?

मैं इसे "श्रेष्ठ मनका" इसलिए कहता हूँ क्योंकि इसे जीवन की अलग-अलग समस्याओं के लिए एक सार्वभौमिक समाधान माना जाता है। अगर आप पहली बार रुद्राक्ष पहन रहे हैं, आपको बिल्कुल समझ नहीं आ रहा कि कौन-सा रुद्राक्ष चुनें, या आप जीवन में किसी भी तरह की समस्या का सामना कर रहे हैं, तो आप बिना अपनी ज्योतिषीय कुंडली दिखाए भी सीधे 5 मुखी रुद्राक्ष से शुरुआत कर सकते हैं।

विशेष सलाह: अगर आप अगले 45 दिनों के भीतर अपने जीवन में वास्तविक और साफ़ दिखाई देने वाला प्रभाव देखना चाहते हैं, तो **उत्कृष्ट गुणवत्ता का 5 मुखी संग्रहणीय श्रेणी का मनका** पहनें, जो **www.rudrasamrat.com** पर उपलब्ध है। इसका हर तरह से सकारात्मक प्रभाव ही वह कारण है, जिसकी वजह से मैं इसे सभी रुद्राक्षों का "श्रेष्ठ मनका" कहता हूँ।

इसके व्यावहारिक प्रभाव

• पूरे स्वास्थ्य के लिए:

यह रक्तचाप पर नज़र रखने और उसे संतुलित रखने में सक्रिय रूप से मदद करता है। साथ ही हृदय से जुड़ी समस्याओं में भी काफ़ी राहत देता है।

• "जलोपचार" का असर:

एक प्रसिद्ध और बेहद प्रभावशाली उपाय है कि रात में **तीन 5 मुखी रुद्राक्ष** एक गिलास पानी में भिगोकर रखे जाएँ और अगली सुबह वह पानी पिया जाए। यह उपाय उच्च रक्तचाप से लड़ने में प्रभावी माना जाता है और शरीर की मूल रोग प्रतिरोधक क्षमता को काफ़ी बढ़ाता है।

- **सुरक्षा और सामंजस्य:**

यह काले जादू और बुरी नज़र से बचाने वाले सुरक्षा कवच की तरह काम करता है। इसके अलावा, तनाव या वैवाहिक जीवन में परेशानियों का सामना कर रही महिलाओं के लिए भी इसे विशेष रूप से धारण करने की सलाह दी जाती है।

- **प्रभावशाली संयोजन:**

हृदय की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करने के लिए **1 + 3 + 5 मुखी** रुद्राक्ष का संयोजन पहनें। गंभीर हृदय रोगों में इसे खास तौर पर **1 मुखी रुद्राक्ष** के साथ पहनने से एक बेहद मजबूत ऊर्जात्मक सुरक्षा कवच बनता है।

इतना लोकप्रिय क्यों है 5 मुखी?

आपने जहाँ भी किसी व्यक्ति को रुद्राक्ष पहने देखा होगा, बहुत संभावना है कि वह **5 मुखी रुद्राक्ष** ही रहा हो।

हाल ही में हुए महाकुंभ में आपने जिन साधु-संतों को बड़ी-बड़ी मालाएँ और सैकड़ों रुद्राक्ष पहने देखा होगा, उनमें भी 5 मुखी रुद्राक्ष ही थे।

अगर कभी किसी गुरु या योगी ने आपको प्रसाद के रूप में अभिमंत्रित रुद्राक्ष दिया है, तो इस बात की बहुत अधिक संभावना है कि वह भी **5 मुखी रुद्राक्ष** रहा हो।

आकार, विशेषताएँ और बाज़ार की सच्चाई

5 मुखी रुद्राक्ष बड़ी मात्रा में उपलब्ध होता है, इसलिए जहाँ तक संभव हो, **इंडोनेशियन रुद्राक्ष की जगह शुद्ध नेपाली 5 मुखी रुद्राक्ष** को प्राथमिकता देनी चाहिए।

हालाँकि, अच्छी गुणवत्ता का इंडोनेशियन 5 मुखी रुद्राक्ष ब्रेसलेट भी बहुत अच्छा काम करता है। ऐसे कई लोगों के अनुभव मौजूद हैं, जिन्होंने इसे पहनने के बाद बेहतरीन परिणाम महसूस किए हैं।

- **सामान्य आकार:**

बाज़ार में इसका सामान्य और मानक आकार लगभग **15 मिमी से 18 मिमी** होता है। इस आकार में मिलने वाले अधपके या पूरी तरह विकसित न हुए **औषधीय मनके** से खास तौर पर सावधान रहें।

- **उच्च विकल्प:**

विशेषज्ञों के अनुभव और निष्कर्षों के आधार पर, **20 मिमी से बड़े और 3.5 ग्राम से अधिक वजन वाले रुद्राक्ष** ऊर्जा के संचार के लिए काफ़ी बेहतर माने जाते हैं।

- **सबसे बेहतर विकल्प:**

अगर आप सबसे बेहतर और साफ़ दिखाई देने वाले परिणाम चाहते हैं, तो 25 मिमी से बड़े उत्कृष्ट संग्रहणीय श्रेणी के मनके पहनने की विशेष रूप से सलाह दी जाती है।

6 मुखी: बुद्धि, साहस और ऐश्वर्य का रुद्राक्ष

॥ पद्म पुराण (अध्याय 57, श्लोक 62) ॥

वाग्मी धीरः सभायां च नृपवेश्मनि संसदि ।

न च कातरतामेति नैव भंगो भवेद्ध्रुवम् ॥

"6 मुखी रुद्राक्ष धारण करने वाला व्यक्ति प्रभावशाली वक्ता बनता है। वह किसी सभा या दरबार में कभी घबराता नहीं और उसका आत्मविश्वास कभी नहीं टूटता।" (पद्म पुराण, अध्याय 57, श्लोक 62)

- **अधिष्ठाता देव:** भगवान कार्तिकेय (स्कंद)
- **स्वामी ग्रह:** शुक्र
- **बीज मंत्र:** ॐ ह्रीं हुं नमः

यह रुद्राक्ष भगवान शिव और माता पार्वती के वीर पुत्र भगवान कार्तिकेय का स्वरूप माना जाता है। वे देवताओं की सेना के सर्वोच्च सेनापति हैं।

भगवान कार्तिकेय का दिव्य जन्म और छह कृत्तिका माताएँ

जब भगवान शिव का दिव्य अग्रिमय तेज़ इतना प्रबल था कि कोई भी देवता उसे धारण नहीं कर सका, तब उसे गंगा नदी में प्रवाहित किया गया। बाद में वह शरवण (सरकंडों के घने वन) में पहुँचा। वहीं छह कृत्तिका बहनों ने उस तेजस्वी बालक को पाया। ये छह बहनें सप्तऋषियों में से छह ऋषियों की पत्नियाँ थीं।

बालक ने किसी एक माता को ठुकराए बिना, सभी छह माताओं का दूध एक साथ ग्रहण करने के लिए चमत्कारिक रूप से छह मुख धारण कर लिए। इसी कारण उन्हें **षण्मुख** (छह मुख वाले) और **कार्तिकेय** (कृत्तिकाओं के पुत्र) कहा गया।

ये छह माताएँ आकाश में दिखाई देने वाले **प्लीएडीज़ (कृत्तिका) तारामंडल** के छह प्रमुख तारों से जुड़ी मानी जाती हैं। प्रत्येक माता ने बालक कार्तिकेय को एक विशेष दिव्य गुण प्रदान किया।

- **शिवा:** यह कृत्तिका समूह का सबसे चमकीला तारा और सबसे बड़ी कृत्तिका मानी जाती है। "शिवा" का अर्थ है "कल्याणकारी"। इन्होंने भगवान कार्तिकेय को शुभता और मंगल का गुण प्रदान किया।
- **सम्भूति:** "सम्भूति" का अर्थ है "श्रेष्ठ उत्पत्ति" या "साथ में जन्मी"। यह सृजन की शक्ति का प्रतीक है। इन्होंने भगवान कार्तिकेय को रचनात्मकता का वरदान दिया।
- **माला:** "माला" का अर्थ है पुष्पमाला। यह पूजा, भक्ति और समर्पण का प्रतीक है। इन्होंने भगवान कार्तिकेय को भक्ति का गुण प्रदान किया।
- **अनसूया:** "अनसूया" का अर्थ है "जिसमें ईर्ष्या न हो"। हिन्दू परंपरा में वे आदर्श पतिव्रता के रूप में पूजनीय हैं। इन्होंने भगवान कार्तिकेय को पवित्रता और ईर्ष्या से मुक्त रहने का गुण दिया।
- **प्रभा:** "प्रभा" का अर्थ है "तेज" या "प्रकाश"। यह दिव्य ज्योति और अग्नि का प्रतीक है। इन्होंने भगवान कार्तिकेय को दिव्य तेज़ प्रदान किया।
- **चण्डा:** "चण्डा" का अर्थ है "उग्र" या "प्रचंड"। इन्होंने भगवान कार्तिकेय को वह वीरता और युद्ध कौशल दिया जिसकी सहायता से उन्होंने आगे चलकर तारकासुर का वध किया।

इसका गहरा ज्योतिषीय संबंध

वैदिक ज्योतिष में **कृत्तिका** को पहला नक्षत्र माना जाता है और इसका स्वामी स्वयं **अग्निदेव** हैं। यही कारण है कि भगवान कार्तिकेय का जन्म भी दिव्य अग्नि से हुआ और उनका कृत्तिका माताओं से सीधा संबंध स्थापित होता है।

इसी गहरे संबंध के कारण **छह** संख्या भगवान कार्तिकेय के स्वरूप का आधार बनती है। उनके छह मुख हैं, वे छह हाथों में शस्त्र धारण करते हैं और छहों दिशाओं पर उनका पूर्ण अधिकार माना जाता है।

भगवान कार्तिकेय इन छह माताओं से मिले सभी दिव्य गुणों—**शुभता, रचनात्मकता, भक्ति, पवित्रता, तेज और अदम्य साहस**—का पूर्ण रूप हैं।

इसके व्यावहारिक लाभ

- **एकाग्रता और अभिव्यक्ति (कलाकारों का रुद्राक्ष)**

6 मुखी रुद्राक्ष पर माता सरस्वती की विशेष कृपा मानी जाती है और यह एकाग्रता बढ़ाने में सहायक माना जाता है। इसलिए अभिनेता, कलाकार, विद्यार्थी और थिएटर से जुड़े लोगों के लिए इसे विशेष रूप से उपयोगी माना जाता है।

जैसा कि शास्त्रों में भी बताया गया है, यह मंच पर होने वाली घबराहट और झिझक को दूर करने में सहायक माना जाता है। इसलिए जिन लोगों का काम प्रभावशाली बोलने पर निर्भर करता है—जैसे नेता, वक्ता या सार्वजनिक जीवन से जुड़े लोग—उनके लिए भी इसे लाभकारी माना जाता है।

- **जीवनशैली और ऐश्वर्य**

इस रुद्राक्ष का स्वामी ग्रह **शुक्र** है। इसलिए इसे जीवनशैली में सुधार, व्यक्तिगत आकर्षण बढ़ाने और प्रभावशाली लोगों से अच्छे संबंध बनाने के लिए एक उत्कृष्ट रुद्राक्ष माना जाता है।

- **वैवाहिक जीवन**

जिन पुरुषों के वैवाहिक जीवन में परेशानियाँ चल रही हों या जिनके विवाह में लंबे समय से बाधाएँ आ रही हों, उनके लिए 6 मुखी रुद्राक्ष धारण करना विशेष रूप से लाभकारी माना जाता है।

- **स्वास्थ्य संबंधी लाभ**

स्वास्थ्य की दृष्टि से 6 मुखी रुद्राक्ष का संबंध मुख्य रूप से शरीर के निचले भाग से माना जाता है। इसे मूत्र संबंधी और यौन रोगों में लाभकारी बताया गया है।

इसके अलावा, विशेष रूप से **32 मनकों वाली 6 मुखी कंठी** धारण करने पर यह मधुमेह के रोगियों में रक्त शर्करा को संतुलित और कम करने में भी लाभकारी माना गया है।

- **कैसे धारण करें**

शास्त्रों में 6 मुखी रुद्राक्ष को दाहिने हाथ में ब्रेसलेट के रूप में पहनने की अनुमति दी गई है।

मैंने स्वयं एक उच्च गुणवत्ता वाला 6 मुखी रुद्राक्ष ब्रेसलेट पहनकर इसके प्रभाव को परखा। मुझे इसके इतने अच्छे परिणाम मिले कि पिछले कई वर्षों से मैं इसे लगातार पहन रहा हूँ।

हालाँकि, सबसे तेज़ और सर्वोत्तम परिणामों के लिए इसे गले में माला (कंठी) के रूप में पहनना हमेशा अधिक प्रभावी माना जाता है। इसके अलावा, आप सर्वोत्तम परिणामों के लिए 6 मुखी संग्रहणीय श्रेणी का मनका भी धारण कर सकते हैं।

आकार, गुणवत्ता और बाज़ार की सच्चाई

- **भरपूर उपलब्धता**

प्राकृतिक रूप से मिलने वाले 4 मुखी, 5 मुखी और 6 मुखी रुद्राक्ष काफ़ी मात्रा में उपलब्ध होते हैं। इसलिए इन तीनों की कीमत सामान्यतः लगभग एक ही श्रेणी में रहती है।

- **आकार की सलाह**

बाज़ार में आमतौर पर 17 मिमी से 19 मिमी तक के 6 मुखी रुद्राक्ष आसानी से मिल जाते हैं। लेकिन जब कीमत में बहुत ज़्यादा अंतर नहीं होता, तो सामान्य आकार का रुद्राक्ष लेने की बजाय **20 मिमी से बड़ा** रुद्राक्ष चुनना बेहतर माना जाता है।

- **उच्च विकल्प**

यदि आपका उद्देश्य शुक्र ग्रह से जुड़े अधिकतम ऐश्वर्य, आकर्षण और श्रेष्ठ लाभ प्राप्त करना है, तो सामान्य आकार के रुद्राक्ष की बजाय 24 मिमी या 25 मिमी (या उससे बड़े) **संग्रहणीय श्रेणी के मनके** में निवेश करना बेहतर विकल्प माना जाता है।

7 मुखी: अनंत — समृद्धि को आकर्षित करने वाला रुद्राक्ष

॥ सप्तवक्त्रो महेशानि ह्यनंगो नाम नामतः ।

धारणात्तस्य देवेशि दरिद्रोऽपीश्वरो भवेत् ॥

"हे महेशानी (माता पार्वती), सात मुख वाला रुद्राक्ष 'अनंग' (कामदेव) के नाम से जाना जाता है। हे देवेशि, इसे धारण करने से निर्धन व्यक्ति भी धन-धान्य और ऐश्वर्य से संपन्न ईश्वर (स्वामी) के समान बन जाता है।"

(शिव पुराण, अध्याय 25, श्लोक 72)

- **अधिष्ठाता देव:** माता महालक्ष्मी एवं सप्तऋषि
- **स्वामी ग्रह:** शनि
- **बीज मंत्र:** ॐ हुं नमः

विस्तृत शोध और उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर, 7 मुखी को एकल अंकों वाले रुद्राक्षों में सबसे शक्तिशाली रुद्राक्षों में से एक माना जाता है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि सभी 18 प्राचीन शास्त्रों में सबसे अधिक बार इसी मुखी का उल्लेख मिलता है। मैं इस रुद्राक्ष को हर व्यक्ति के लिए सुझाता हूँ, चाहे उसकी जन्मतिथि कुछ भी हो या उसकी कुंडली कैसी भी हो।

अनंत की कथा (असीम और अनंत)

पुराणों के अनुसार, एक बार भगवान ब्रह्मा और भगवान विष्णु के बीच यह विवाद हुआ कि सृष्टि का सर्वोच्च रचयिता कौन है। उसी समय उनके सामने दिव्य प्रकाश का एक विशाल और अनंत स्तंभ प्रकट हुआ।

भगवान विष्णु उसकी जड़ खोजने के लिए नीचे की ओर गए, लेकिन बहुत प्रयास करने के बाद भी उन्हें उसका अंत नहीं मिला। लौटकर उन्होंने ईमानदारी से स्वीकार कर लिया कि वे उसे नहीं खोज पाए।

भगवान ब्रह्मा ऊपर की ओर गए, लेकिन उन्हें भी उसका शिखर नहीं मिला। फिर भी उन्होंने केतकी के फूल को साक्षी बनाकर झूठा दावा कर दिया कि वे शिखर तक पहुँच गए थे।

उनके अहंकार और असत्य के कारण भगवान शिव ने ब्रह्मा को श्राप दिया, जबकि भगवान विष्णु की सत्यनिष्ठा की प्रशंसा की।

इसी असीम और अनंत स्वरूप को **अनंत** कहा जाता है, और यही 7 मुखी रुद्राक्ष से जुड़ा हुआ है। **अनंत** ऐसा भाव है जो संपूर्ण त्रिमूर्ति—ब्रह्मा, विष्णु और शिव—को समाहित करता है। इसलिए माना जाता है कि इस रुद्राक्ष को धारण करने वाला व्यक्ति सार्वभौमिक शक्ति प्राप्त करता है और उसे अनंत देवताओं का आशीर्वाद मिलता है।

इसके अलावा, यह भगवान विष्णु के सात दिव्य नागों का भी प्रतीक है, जो धारण करने वाले को हर प्रकार के "विष" से ऊर्जा स्तर पर सुरक्षा प्रदान करते हैं—चाहे वह वास्तविक विष हो या जीवन की नकारात्मकता और विषाक्त परिस्थितियाँ।

दिव्य संबंध: धन और ज्ञान

ऐसी मान्यता है कि इस रुद्राक्ष के सातों मुखों में **सप्तऋषियों** का निवास होता है। साथ ही इसमें माता लक्ष्मी के सात स्वरूपों का भी वास माना जाता है।

इसी दिव्य उपस्थिति के कारण कहा जाता है कि जो व्यक्ति 7 मुखी रुद्राक्ष धारण करता है, वह अजेय बनता है और अपने जीवन में कभी गरीबी या दिवालियापन का सामना नहीं करता।

इसके व्यावहारिक लाभ

- **धन को आकर्षित करने वाला रुद्राक्ष**

जो लोग अपने जीवन स्तर को बेहतर बनाना चाहते हैं और आर्थिक स्थिति में बड़ा सुधार चाहते हैं, उनके लिए यह रुद्राक्ष अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

यह भारी कर्ज़ से बाहर निकलने, आय के कई नए स्रोत बनाने और आपकी मेहनत का उचित फल दिलाने में सहायक माना जाता है।

यदि आप उन लोगों में हैं जो हमेशा यह शिकायत करते हैं कि बहुत मेहनत करने के बावजूद अपेक्षित परिणाम नहीं मिलते, तो यह रुद्राक्ष आपके लिए विशेष रूप से उपयुक्त माना जाता है।

विशेष सुझाव: कई सफल लोग दीपावली के दिन अपने कैश बॉक्स या तिजोरी में एक या दो 7 मुखी रुद्राक्ष भी रखते हैं।

- **शनि के लिए सर्वोत्तम उपाय**

7 मुखी का स्वामी ग्रह **शनि** है। इसलिए इसे शनि महादशा या शनि अंतरदशा के अशुभ प्रभावों को कम करने के सबसे प्रभावी उपायों में से एक माना जाता है।

बहुत से लोग नीलम रत्न पहनने से डरते हैं क्योंकि वह हर व्यक्ति को अनुकूल नहीं होता और कई बार विपरीत परिणाम भी दे सकता है। वहीं 7 मुखी रुद्राक्ष को ऐसा माना जाता है कि यह नीलम के सभी सकारात्मक लाभ प्रदान करता है, लेकिन उसके किसी भी नकारात्मक प्रभाव के बिना।

यदि कुंडली में शनि की स्थिति अत्यंत चुनौतीपूर्ण हो, तो 32 या 54 मनकों वाली पूरी कंठी धारण करने की सलाह दी जाती है।

- **कानूनी मामलों और करियर में सफलता**

यह रुद्राक्ष वकीलों और अन्य पेशेवर लोगों के बीच विशेष रूप से लोकप्रिय माना जाता है क्योंकि इसे छिपे हुए शत्रुओं पर विजय दिलाने और रोज़मर्रा के कठिन कार्यों को आसान बनाने में अत्यंत प्रभावी माना जाता है।

- **स्वास्थ्य संबंधी लाभ**

शनि का संबंध शरीर की हड्डियों से माना जाता है। इसलिए 7 मुखी रुद्राक्ष को हड्डियों की समस्याओं, अस्थि-सुषिरता, गठिया और गहरे मांसपेशियों के दर्द में लाभकारी बताया गया है।

45 दिनों में बदलाव

7 मुखी रुद्राक्ष आध्यात्मिक और भौतिक, दोनों प्रकार की उन्नति का द्वार माना जाता है।

www.rudrasamrat.com के अनेक धारणकर्ताओं के अनुभवों के अनुसार, केवल 45 दिनों के भीतर लोगों ने अपने जीवन में स्पष्ट बदलाव महसूस किए हैं, जैसे बेहतर नींद, मन की गहरी शांति और रोज़मर्रा के कामों में अधिक सहजता।

मेरे अनुभव में, जो भी व्यक्ति उच्च गुणवत्ता वाला 7 मुखी रुद्राक्ष धारण करता है, वह बाद में अपने संग्रह में अधिक मुखी वाले रुद्राक्ष भी जोड़ता है, क्योंकि वह इसके सकारात्मक प्रभावों को स्वयं अनुभव कर चुका होता है।

यदि आप वास्तव में अपने जीवन में बड़ा बदलाव लाना चाहते हैं, तो **उत्कृष्ट गुणवत्ता वाला संग्रहणीय श्रेणी का 7 मुखी रुद्राक्ष** या पूरी माला में निवेश करें। मैं हमेशा 20 मिमी या उससे बड़े रुद्राक्ष पहनने की सलाह देता हूँ। यदि संभव हो, तो **25 मिमी या उससे बड़े संग्रहणीय श्रेणी के मनकों** को प्राथमिकता दें।

8 मुखी: विघ्नों को दूर करने वाला रुद्राक्ष

अष्टवक्त्रो महासेन साक्षाद्देवो विनायकः ।

सर्वे विघ्नाः प्रणश्यन्ति सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥

"हे महासेन, आठ मुख वाला रुद्राक्ष स्वयं भगवान गणेश (विनायक) का स्वरूप है। इसे धारण करने से सभी विघ्न पूरी तरह नष्ट हो जाते हैं और धारण करने वाला सभी पापों से मुक्त हो जाता है।" (*श्रीमद् देवी भागवत, स्कंध 11, अध्याय 3, श्लोक 31*)

- **अधिष्ठाता देव: भगवान गणेश (विघ्नहर्ता)**

- **स्वामी ग्रह:** राहु
- **बीज मंत्र:** ॐ हूं नमः

(ध्यान दें: 8 मुखी से आप उच्च श्रेणी के रुद्राक्षों में प्रवेश करते हैं। बाज़ार में 8 मुखी से लेकर 12 मुखी तक के रुद्राक्षों की कीमत में उल्लेखनीय वृद्धि देखने को मिलती है।)

"विघ्नहर्ता" का सिद्धांत

भगवान गणेश को पूरे विश्व में **विघ्नहर्ता**, अर्थात् सभी बाधाओं को दूर करने वाले देवता के रूप में पूजा जाता है।

यदि आपको लगता है कि जीवन में सब कुछ रुका हुआ है, या बिना किसी स्पष्ट कारण के आपकी तरक्की, धन, समृद्धि या अवसर बार-बार अटक रहे हैं, तो 8 मुखी रुद्राक्ष उस रुकावट को दूर करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम माना जाता है।

यह सफलता के रास्ते में आने वाली बाधाओं को हटाने और आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक माना जाता है। साथ ही, इसका संबंध **ऋद्धियों (समृद्धि)** और **सिद्धियों (आध्यात्मिक शक्तियों)** की प्राप्ति से भी माना जाता है।

इसके व्यावहारिक लाभ

- **तीव्र विश्लेषण क्षमता**

भगवान गणेश सर्वोच्च बुद्धि और विवेक के प्रतीक हैं। इसलिए 8 मुखी रुद्राक्ष व्यक्ति को एकाग्र, गहराई से सोचने वाला और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण प्रदान करने वाला माना जाता है।

इसी कारण इसे आँकड़ा वैज्ञानिक, चार्टर्ड लेखाकार (सीए), सूचना प्रौद्योगिकी विकासकर्ता और सॉफ्टवेयर अभियंता जैसे पेशों से जुड़े लोगों के लिए विशेष रूप से उपयोगी माना जाता है।

- **राहु का प्रभाव (वीज़ा और इंटरनेट)**

इसका स्वामी ग्रह **राहु** है, जिसे वैदिक ज्योतिष में विदेश, विदेशी अवसरों और अदृश्य डिजिटल नेटवर्क (इंटरनेट) का कारक माना जाता है।

इसी वजह से आधुनिक समय में यह रुद्राक्ष ऑनलाइन पहचान और लोकप्रियता बढ़ाने के लिए भी व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। इसे **इंस्टाग्राम** और अन्य सोशल मीडिया मंच पर प्रसिद्धि प्राप्त करने तथा **वीज़ा** या **पीआर** से जुड़ी लगातार आने वाली बाधाओं को दूर करने में भी प्रभावी माना जाता है।

- **व्यापार में रुका हुआ धन**

जिन व्यापारियों का पैसा बार-बार बाज़ार में फँस जाता है या भुगतान समय पर नहीं मिल पाता, उनके लिए 8 मुखी रुद्राक्ष धन के प्रवाह को सुचारु और तेज़ बनाने में सहायक माना जाता है।

- **आध्यात्मिक साधना**

जो लोग गहन ध्यान करना चाहते हैं या **मंत्र सिद्धि** प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं, उनके लिए **108 मनकों वाली 8 मुखी इंडोनेशियन माला** पर जप करना सर्वोत्तम आध्यात्मिक परिणाम देने वाला माना जाता है।

- **स्वास्थ्य संबंधी लाभ**

स्वास्थ्य की दृष्टि से 8 मुखी रुद्राक्ष को **तंत्रिका तंत्र, पौरुष ग्रंथि, पित्ताशय और थायरॉयड** के लिए लाभकारी बताया गया है।

प्रभावशाली संयोजन

- **लक्ष्मी-गणेश बंध**

यदि **6 मुखी, 7 मुखी और 8 मुखी** रुद्राक्षों को एक साथ धारण किया जाए, तो यह धन वृद्धि और जीवन की बाधाओं को दूर करने के लिए अत्यंत प्रभावशाली संयोजन माना जाता है।

(इस बंध का तैयार संयोजन www.rudrasamrat.com पर उपलब्ध है।)

आकार, गुणवत्ता और बाज़ार की सच्चाई

यह समझना महत्वपूर्ण है कि प्राकृतिक रूप से **8 मुखी और 9 मुखी** रुद्राक्ष, **10 से 12 मुखी** रुद्राक्षों की तुलना में आकार में छोटे होते हैं और इनकी प्राकृतिक उपलब्धता भी काफी कम होती है।

- **बाज़ार की सच्चाई (नकली रुद्राक्ष से सावधान)**

7 मुखी और 8 मुखी रुद्राक्ष की कीमत में बड़ा अंतर होने के कारण कई बेईमान विक्रेता—विशेषकर नेपाल के पर्यटन बाज़ारों में—7 मुखी रुद्राक्ष पर कृत्रिम रूप से आठवीं रेखा बनाकर उसे 8 मुखी के रूप में बेचने की कोशिश करते हैं।

इसलिए हमेशा किसी विश्वसनीय विक्रेता से ही रुद्राक्ष खरीदें। यदि संभव हो, तो आवर्धक शीशे (आवर्धक शीशा) से उसकी रेखाओं की जाँच अवश्य करें, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे प्राकृतिक हैं और कृत्रिम रूप से नहीं बनाई गई हैं।

- **आकार की सलाह**

असली 8 मुखी रुद्राक्ष का सामान्य बाज़ार आकार लगभग **18 मिमी से 20 मिमी** के बीच होता है।

- **बेहतर विकल्प**

यदि आप इसके प्रभाव को स्पष्ट रूप से अनुभव करना चाहते हैं, तो **22 मिमी से 24 मिमी** आकार का रुद्राक्ष धारण करना बेहतर माना जाता है।

- **सर्वोत्तम विकल्प**

यदि संभव हो, तो 24 मिमी से 26 मिमी आकार का उत्कृष्ट संग्रहणीय श्रेणी का रुद्राक्ष चुनें और यह भी सुनिश्चित करें कि उसका वजन कम से कम 3.5 ग्राम हो।

9 मुखी: माँ दुर्गा का सुरक्षा कवच

नववक्तो भैरवः स्यात्कपिलस्तु मुनिश्च सः ।
दुर्गा वाधिष्ठात्री देवी नवरूपा महेश्वरी ॥
तं धारयेद्द्वामहस्ते रुद्राक्षं भक्तितत्परः ।
सर्वेश्वरो भवेन्नूनं मम तुल्यो न संशयः ॥

"नौ मुख वाला रुद्राक्ष भगवान् भैरव और महर्षि कपिल का स्वरूप है। इसकी अधिष्ठात्री देवी नौ रूपों वाली महेश्वरी माँ दुर्गा हैं। जो भक्तिभाव से इस रुद्राक्ष को अपने बाएँ हाथ में धारण करता है, वह निस्संदेह सर्वेश्वर बनता है और मेरे (भगवान् शिव) के समान हो जाता है—इसमें कोई संदेह नहीं।" (शिव पुराण, अध्याय 25, श्लोक 74-75)

- **अधिष्ठाता देवी:** माँ दुर्गा (नवदुर्गा)
- **स्वामी ग्रह:** राहु (हालाँकि 1970 के दशक की कुछ ज्योतिष पुस्तकों में इसे केतु से जोड़ा गया है, लेकिन गहन शोध के अनुसार माँ दुर्गा की उग्र और बाधाओं को नष्ट करने वाली शक्ति का सीधा संबंध राहु से माना जाता है।)
- **बीज मंत्र:** ॐ ह्रीं हुं नमः

9 मुखी रुद्राक्ष को महिलाओं के लिए सबसे प्रिय और सबसे अधिक अनुशंसित रुद्राक्ष माना जाता है, क्योंकि इस पर आदिशक्ति माँ दुर्गा की विशेष कृपा मानी जाती है। हालाँकि, यह एक ऐसा शक्तिशाली रुद्राक्ष है जिसे स्त्री और पुरुष—दोनों समान रूप से धारण कर सकते हैं।

इसका सिद्धांत: अहंकार का नाश (महिषासुर और राहु)

9 मुखी रुद्राक्ष को समझने के लिए उस असुर को समझना ज़रूरी है जिसका अंत माँ दुर्गा ने किया था।

माँ दुर्गा ने महिषासुर का वध करके अपनी दिव्य महिमा प्राप्त की। **महिष** का अर्थ भैंसा होता है, जो प्रतीकात्मक रूप से आलस्य, सुस्ती, संकीर्ण सोच और जड़ता का प्रतिनिधित्व करता है। यही वे आंतरिक दोष हैं जो हमारी आध्यात्मिक और भौतिक उन्नति में सबसे बड़ी बाधा बनते हैं।

इसी प्रकार, राहु को असुर स्वरभानु का अमर, कटा हुआ सिर माना जाता है। यह व्यक्ति के भीतर यह भ्रम पैदा करता है कि जीवन की संतुष्टि केवल बाहरी उपलब्धियों, नियंत्रण और भौतिक वस्तुओं से ही मिल सकती है। परिणामस्वरूप व्यक्ति सफल होने के बावजूद भीतर से असंतुष्ट रहता है।

9 मुखी रुद्राक्ष इस भ्रम को तोड़ने वाला माना जाता है। यह धारण करने वाले को निर्भयता, शक्ति और आगे बढ़ने का साहस देता है, जिससे वह बाधाओं, पुरानी आदतों और जीवन की अप्रत्याशित परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर सके।

इसके व्यावहारिक लाभ

- **सर्वोत्तम ऊर्जा सुरक्षा कवच**

9 मुखी रुद्राक्ष धारण करने वाले के चारों ओर एक शक्तिशाली सुरक्षात्मक ऊर्जा कवच बनने की मान्यता है।

इसे विशेष रूप से **तांत्रिक साधकों, टैरो विशेषज्ञ, ज्योतिषियों और स्फटिक उपचारक** के लिए अत्यंत उपयोगी माना जाता है, ताकि वे अपने ग्राहक के साथ होने वाले **"ऊर्जा विनिमय"** के दौरान नकारात्मक ऊर्जा को अपने भीतर ग्रहण करने से बच सकें।

- **सार्वजनिक जीवन और आकर्षण**

यह रुद्राक्ष छिपे हुए शत्रुओं और अज्ञात भय से सुरक्षा प्रदान करने वाला माना जाता है।

इसी कारण इसे अभिनेता, राजनेता और सार्वजनिक जीवन में सक्रिय प्रभावशाली लोगों के लिए विशेष रूप से लाभकारी माना जाता है। यह सामाजिक आकर्षण (करिश्मा) बढ़ाने और व्यक्ति को आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने में सहायक माना जाता है।

- **भय पर विजय**

काल भैरव (यमराज) की कृपा प्राप्त होने से यह रुद्राक्ष अकाल या दुर्घटनाजन्य मृत्यु से सुरक्षा प्रदान करने वाला माना जाता है और मन से भय को दूर करने में सहायक बताया गया है।

सहस्रार चक्र और "बाएँ हाथ" का महत्व

9 मुखी रुद्राक्ष का सीधा संबंध **सहस्रार चक्र** से माना जाता है, जो सिर के सबसे ऊपरी भाग में स्थित होता है। इसे परम चेतना और ईश्वर से जुड़ने का द्वार माना जाता है।

- **बाएँ हाथ में धारण करने का महत्व**

ऊपर दिए गए श्लोक के अनुसार **शिव महापुराण** में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि 9 मुखी रुद्राक्ष को **बाएँ हाथ** में धारण करना चाहिए।

बायाँ हाथ दाएँ मस्तिष्क, रचनात्मक सोच, आंतरिक चेतना और व्यक्तित्व की **यिन (स्त्रैण, ग्रहणशील ऊर्जा)** का प्रतिनिधित्व करता है।

यद्यपि सामाजिक मान्यताओं में कई बार बाएँ हाथ को "अशुद्ध" माना जाता है, लेकिन यह नियम रुद्राक्ष या रत्न धारण करने पर लागू नहीं होते।

- **"ब्रह्मांडीय यूनियन" बंध**

सहस्रार चक्र को अधिक प्रभावी रूप से सक्रिय करने के लिए 9 मुखी रुद्राक्ष को अक्सर **1 मुखी रुद्राक्ष** (जो भगवान शिव का स्वरूप माना जाता है) के साथ धारण किया जाता है।

स्वास्थ्य संबंधी लाभ

- **मानसिक और तंत्रिका तंत्र**

9 मुखी रुद्राक्ष को **चक्कर आना, बार-बार चक्कर महसूस होना और गंभीर मानसिक विकारों** में लाभकारी माना गया है।

इसे **सिज़ोफ्रेनिया, मनोभ्रंश, ओसीडी, मतिभ्रम, एडीएचडी, नींद संबंधी समस्याओं और अवसाद** में भी सहायक बताया गया है।

- **शारीरिक स्वास्थ्य**

इसे गर्भपात की संभावना कम करने, हृदय और फेफड़ों से जुड़ी समस्याओं में लाभकारी तथा **सोरायसिस, खुजली, सफेद दाग और चेचक** जैसे पुराने त्वचा रोगों में राहत देने वाला भी माना गया है।

आकार और गुणवत्ता

- **आकार की सलाह**

असली 9 मुखी रुद्राक्ष का सामान्य बाज़ार आकार लगभग **18 मिमी से 20 मिमी** के बीच होता है।

- **बेहतर विकल्प**

यदि आप इसके प्रभाव को स्पष्ट रूप से अनुभव करना चाहते हैं, तो **22 मिमी से 24 मिमी** आकार का रुद्राक्ष धारण करना बेहतर माना जाता है।

- **सर्वोत्तम विकल्प**

यदि संभव हो, तो 24 मिमी से 26 मिमी आकार का उत्कृष्ट संग्रहणीय श्रेणी का रुद्राक्ष चुनें और यह भी सुनिश्चित करें कि उसका वजन कम से कम 3.5 ग्राम हो।

10 मुखी: परम रक्षक और सर्वोच्च सुरक्षा कवच

ग्रहाश्च पिशाचाश्च वेताला ब्रह्मराक्षसाः ।

पन्नगाश्चोपशाम्यन्ति दशवक्त्रस्य धारणात् ॥

"10 मुखी रुद्राक्ष धारण करने से अशुभ ग्रहों के दुष्प्रभाव, भूत, प्रेत, वेताल, ब्रह्मराक्षस तथा सर्पों से होने वाले सभी कष्ट शांत हो जाते हैं।"
(श्रीमद् देवी भागवत, स्कंध 11, अध्याय 4, श्लोक 23)

- **अधिष्ठाता देव:** भगवान विष्णु / भगवान श्रीकृष्ण / दश दिक्पाल (दसों दिशाओं के रक्षक देवता) / यमराज
- **स्वामी ग्रह:** कोई नहीं (यह सभी नौ ग्रहों को नियंत्रित और शांत करने वाला माना जाता है।)
- **बीज मंत्र:** ॐ ह्रीं नमः (या) ॐ क्लीं कृष्णाय नमः

दो अंकों वाले रुद्राक्षों का महत्वपूर्ण नियम

9 मुखी के बाद जब आप **10 से 21 मुखी** रुद्राक्षों की श्रेणी में प्रवेश करते हैं, तो उनकी ऊर्जा का स्तर पूरी तरह बदल जाता है। दो अंकों वाले रुद्राक्ष, एक

अंकों वाले रुद्राक्षों की तुलना में कहीं अधिक शक्तिशाली और विशेष उद्देश्य वाले माने जाते हैं।

यदि आप अपने आध्यात्मिक और भौतिक जीवन को अगले स्तर पर ले जाना चाहते हैं, तो अपने रुद्राक्ष संयोजन में कम से कम **एक दो अंकों वाला रुद्राक्ष** अवश्य शामिल करें।

इसका सिद्धांत: श्रीकृष्ण का सार और अहंकार का अंत

10 मुखी रुद्राक्ष का गहरा संबंध भगवान श्रीकृष्ण के जीवन और उनके संदेश से माना जाता है।

इसे समझने के लिए श्रीकृष्ण के जन्म की कथा को समझना आवश्यक है।

उनकी माता **देवकी** हमारे भौतिक शरीर का प्रतीक हैं, पिता **वसुदेव** प्राणशक्ति (प्राण) का प्रतिनिधित्व करते हैं और अत्याचारी राजा **कंस** अहंकार का प्रतीक है।

वहीं भगवान श्रीकृष्ण उस **आंतरिक आनंद (आनंद)** का प्रतीक हैं, जो अंततः अहंकार के बंधनों से मुक्त होकर प्रकट होता है।

माना जाता है कि 10 मुखी रुद्राक्ष धारण करने से व्यक्ति उसी अटूट आंतरिक शांति से जुड़ता है।

भगवान श्रीकृष्ण को प्रेम से **माखन चोर** भी कहा जाता है। आध्यात्मिक दृष्टि से दूध हमारे जीवन की रोज़मर्रा की परिस्थितियों का प्रतीक है और माखन उन अनुभवों से निकले सार या सीख का।

10 मुखी रुद्राक्ष व्यक्ति को जीवन के अनुभवों से सीख ग्रहण करने में सहायता करता है, बिना अनावश्यक संघर्षों में उलझे।

इसके अतिरिक्त, इस रुद्राक्ष पर **दश दिक्पालों** (दसों दिशाओं के देवता) और **यमराज** का भी आशीर्वाद माना जाता है।

यमराज का आशीर्वाद भ्रम और मिथ्या धारणाओं के अंत का प्रतीक है, जबकि दिक्पाल धारण करने वाले के चारों ओर चारों दिशाओं से एक अभेद्य सुरक्षा कवच बनाने वाले माने जाते हैं।

इसके व्यावहारिक लाभ

10 मुखी रुद्राक्ष को सार्वभौमिक सुरक्षा प्रदान करने वाले सबसे बहुउपयोगी और शक्तिशाली रुद्राक्षों में से एक माना जाता है। यदि कोई व्यक्ति केवल एक ऐसा रुद्राक्ष धारण करना चाहता है जो हर प्रकार की सुरक्षा प्रदान करे, तो इसे एक उत्कृष्ट विकल्प माना जाता है।

- **सर्वोच्च ऊर्जा सुरक्षा कवच**

यह रुद्राक्ष आनंद और सकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव फैलाने वाला माना जाता है।

इसे काला जादू, नज़र दोष, भूत-प्रेत, नकारात्मक शक्तियों तथा दुर्भावना रखने वाले लोगों के प्रभाव को शांत करने के लिए अत्यंत प्रभावी माना जाता है।

ऐसी मान्यता है कि इसका प्रभाव केवल धारण करने वाले तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि उसकी **सात पीढ़ियों** तक सुरक्षा प्रदान करता है।

- **कानूनी मामलों में सफलता और कर्ज़ से राहत**

गंभीर मुकदमों, लंबे समय तक चलने वाले कोर्ट केस, जटिल ज़मीन संबंधी विवाद और कारावास जैसी परिस्थितियों में इसे अत्यंत प्रभावशाली उपाय माना जाता है।

(गंभीर कानूनी समस्याओं में 10 मुखी रुद्राक्षों का विशेष संयोजन धारण करने की सलाह दी जाती है।)

इसे बढ़ते हुए कर्ज़ और भारी आर्थिक नुकसान से राहत दिलाने वाला भी माना जाता है।

- **ज्योतिष का सर्वोच्च उपाय**

भगवान श्रीकृष्ण को सम्पूर्ण ब्रह्मांड का संचालक माना जाता है। इसी कारण 10 मुखी रुद्राक्ष को सभी **नौ ग्रहों** के अशुभ प्रभावों को एक साथ संतुलित और शांत करने वाला माना जाता है।

जब इसे **8 मुखी और 9 मुखी** रुद्राक्ष के साथ धारण किया जाता है, तब इसे **कालसर्प दोष** के प्रभाव को शांत करने के लिए विशेष रूप से उपयोगी माना जाता है।

- **श्रेष्ठ वास्तु सुधार**

यदि 10 मुखी रुद्राक्ष को घर या कार्यालय के ठीक मध्य भाग में स्थापित किया जाए, तो माना जाता है कि यह सकारात्मक ऊर्जा का शक्तिशाली क्षेत्र बनाता है और गहरे वास्तु दोषों को दूर करने में सहायक होता है।

- **मानसिक स्थिरता**

यह मन की गहरी उलझन, लगातार चिंता और मानसिक अस्थिरता को कम करने में सहायक माना जाता है तथा व्यक्ति को उसके वास्तविक, आत्मविश्वासी स्वरूप से दोबारा जोड़ने में मदद करता है।

स्वास्थ्य संबंधी लाभ

10 मुखी रुद्राक्ष का संबंध **स्वाधिष्ठान चक्र** से माना जाता है।

- **शारीरिक स्वास्थ्य**

इसे लंबे समय से रहने वाले कमर के निचले हिस्से के दर्द, मांसपेशियों के दर्द तथा आँतों से जुड़ी समस्याओं में लाभकारी बताया गया है।

साथ ही, यह शरीर में भोजन और पोषक तत्वों के बेहतर अवशोषण में भी सहायक माना जाता है।

- **मातृत्व**

महिलाओं के लिए इसे गर्भावस्था के दौरान गर्भ की सुरक्षा प्रदान करने वाला शक्तिशाली ऊर्जा कवच माना जाता है। साथ ही, गर्भधारण से जुड़ी समस्याओं में भी इसे सहायक बताया गया है।

आकार, गुणवत्ता और बाज़ार की सच्चाई

- **प्राकृतिक आकार**

10 मुखी तक के रुद्राक्ष प्राकृतिक रूप से सामान्यतः गोल आकार के होते हैं।

- **उपलब्धता और आकार**

यदि संभव हो, तो 24 मिमी से 26 मिमी आकार का उत्कृष्ट संग्रहणीय श्रेणी का रुद्राक्ष चुनें और यह भी सुनिश्चित करें कि उसका वजन कम से कम 3.5 ग्राम हो।

- **धारण करने का तरीका**

10 मुखी रुद्राक्ष का उपयोग विशेष रूप से **वैष्णव परंपरा** के अनुयायियों तथा भगवान विष्णु और भगवान श्रीकृष्ण के भक्तों द्वारा किया जाता है।

लगातार और सर्वोत्तम सुरक्षा के लिए इसे प्रतिदिन, दिन-रात धारण करने की सलाह दी जाती है। इसे धागे, चाँदी या सोने—किसी भी माध्यम में पहन सकते हैं।

11 मुखी: अजेयता का रुद्राक्ष

॥ पद्म पुराण (अध्याय 57, श्लोक 78–79) ॥

अश्वमेधसहस्राणि यज्ञकोटिशतानि च ।
गवां शतसहस्रस्य सम्यग्दत्तस्य यत्फलम् ॥
तत्फलं शीघ्रमाप्नोति वक्त्रैकादशधारणात् ।
हरस्य सदृशो लोके पुनर्जन्म न विद्यते ॥

"हजारों अश्वमेध यज्ञ, करोड़ों अन्य यज्ञ और एक लाख गायों का विधिपूर्वक दान करने से जो महान आध्यात्मिक फल प्राप्त होता है, वही फल केवल 11 मुखी रुद्राक्ष धारण करने से शीघ्र प्राप्त हो जाता है। ऐसा धारण करने वाला इस संसार में स्वयं भगवान शिव के समान हो जाता है और जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाता है।" (पद्म पुराण, अध्याय 57, श्लोक 78–79)

- **अधिष्ठाता देव:** 11 रुद्र (जिनकी व्यापक रूप से भगवान हनुमान के एकादश रुद्र अवतार के रूप में पूजा की जाती है।)
- **स्वामी ग्रह:** सभी ग्रह / बृहस्पति (विशुद्ध चक्र से संबंधित)

नोट: भगवान हनुमान और उनकी प्रबल ऊर्जा से गहरे संबंध के कारण, 11 मुखी को 3 मुखी रुद्राक्ष की मंगल ऊर्जा को और अधिक शक्तिशाली बनाने वाला सर्वोत्तम रुद्राक्ष माना जाता है।

- **बीज मंत्र:** ॐ ह्रीं हुं नमः (या) ॐ नमो भगवते रुद्राय

कथा: स्वर्ग की पुनः प्राप्ति

जब देवताओं से स्वर्ग असुरों ने छीन लिया—जो प्रतीकात्मक रूप से हमारे अज्ञान और नकारात्मक विचारों का प्रतिनिधित्व करते हैं—तब महर्षि कश्यप ने काशी में कठोर तपस्या की।

उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उन्हें आशीर्वाद दिया। इसके बाद महर्षि कश्यप की पत्नी **सुरभि** से **11 रुद्रों** का जन्म हुआ।

इन दिव्य योद्धाओं ने असुरों का संहार करके देवताओं को पुनः स्वर्ग दिलाया।

इस रुद्राक्ष का आध्यात्मिक महत्व अत्यंत महान माना गया है। प्राचीन ग्रंथों के अनुसार, 11 मुखी धारण करने से वही आध्यात्मिक पुण्य प्राप्त होता है जो **एक लाख गायों का दान** और **1,000 अश्वमेध यज्ञ** करने से मिलता है।

इसका सिद्धांत: विष को शक्ति में बदलना

11 मुखी रुद्राक्ष को समझने के लिए भगवान शिव के **नीलकंठ** स्वरूप को समझना आवश्यक है।

जब समुद्र मंथन से निकला घातक **हलाहल विष** पूरी सृष्टि के लिए संकट बन गया, तब भगवान शिव ने उसे स्वयं ग्रहण करके संसार की रक्षा की।

जीवन में भी हमें अनेक प्रकार के "विष" मिलते हैं—जैसे विषाक्त वातावरण, विश्वासघात, अत्यधिक तनाव और नकारात्मक ऊर्जा।

11 मुखी रुद्राक्ष व्यक्ति को ऐसी परिस्थितियों को सकारात्मक शक्ति में बदलने की आंतरिक बुद्धि प्रदान करने वाला माना जाता है।

इसका संबंध **विशुद्ध चक्र** से माना जाता है, जो शरीर में शुद्धिकरण, आकाश तत्व और अभिव्यक्ति का केंद्र है।

11 रुद्र मन और दस प्राणों (वे जीवन शक्तियाँ जो हमारी श्वास, नसों और मांसपेशियों को सक्रिय रखती हैं) के संतुलन का भी प्रतीक हैं।

इसी कारण इसे साहस, वीरता, शारीरिक शक्ति और मानसिक दृढ़ता प्रदान करने वाला माना जाता है, जो भगवान हनुमान के गुणों से जुड़े हैं।

आभामंडल और ब्रह्मांडीय ऊर्जा

(6 फुट ऊर्जा क्षेत्र का सिद्धांत)

मान्यता है कि प्रत्येक व्यक्ति के चारों ओर प्राकृतिक रूप से लगभग 6 फुट का एक ऊर्जा क्षेत्र होता है।

उन्नत साधक कुंडलिनी जागरण के माध्यम से इस ऊर्जा क्षेत्र को और अधिक शक्तिशाली बनाते हैं, जबकि सामान्य व्यक्ति का आभामंडल कई कारणों से कमजोर हो सकता है।

अत्यधिक आलस्य, गंभीर नशे की आदतें, शराब का सेवन या अत्यधिक तामसिक भोजन जैसी कम ऊर्जा वाली जीवनशैली इस ऊर्जा कवच को कमजोर और खंडित कर सकती है।

जब आभामंडल कमजोर हो जाता है, तो व्यक्ति की ब्रह्मांडीय ऊर्जा ग्रहण करने की क्षमता भी कम हो जाती है और वह नकारात्मक ऊर्जा, काले जादू, मानसिक आक्रमण तथा शारीरिक रोगों के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकता है।

11 मुखी रुद्राक्ष को इस ऊर्जा क्षेत्र को सशक्त बनाने वाला माना जाता है।

ऐसी मान्यता है कि यह मस्तिष्क के दाएँ भाग को सक्रिय करने में सहायता करता है, जिससे भावनात्मक बुद्धिमत्ता, तार्किक सोच और निर्णय लेने की क्षमता बेहतर होती है।

इसे दृढ़ इच्छाशक्ति विकसित करने, बुरी आदतों को छोड़ने, ऊर्जा क्षेत्र को पुनः मजबूत करने तथा नकारात्मक ऊर्जाओं से सुरक्षा प्रदान करने वाला भी माना जाता है।

इसके व्यावहारिक लाभ

- **सर्वोत्तम संवाद क्षमता**

11 मुखी रुद्राक्ष आत्मविश्वास बढ़ाने, प्रभावशाली शब्दावली विकसित करने और समस्याओं का तेज़ी से समाधान खोजने की क्षमता बढ़ाने वाला माना जाता है।

यह मंच पर होने वाली घबराहट, झिझक और स्वयं की दूसरों से तुलना करने की आदत को कम करने में भी सहायक माना जाता है।

- **नेतृत्व और कॉर्पोरेट जीवन**

इसे मुख्य कार्यकारी अधिकारी, निदेशक, व्यावसायिक रणनीतिकार, बाज़ार विश्लेषक और सार्वजनिक वक्ताओं के लिए विशेष रूप से उपयोगी माना जाता है, जिन्हें लगातार दबाव वाली परिस्थितियों में निर्णय लेने होते हैं।

- **शनि की कृपा**

कथा के अनुसार, भगवान हनुमान ने रावण की कैद से **शनि देव** को मुक्त कराया था।

इसी कारण 11 मुखी रुद्राक्ष को शनि की कृपा प्राप्त करने और उनके अशुभ प्रभावों से सुरक्षा देने वाला माना जाता है।

इसे अकाल या दुर्घटनाजन्य मृत्यु से सुरक्षा देने वाला भी माना गया है। साथ ही, तांत्रिक साधकों और गूढ़ विद्याओं से जुड़े लोगों के लिए इसे विशेष रूप से उपयोगी बताया गया है।

स्वास्थ्य संबंधी लाभ

ऐसी मान्यता है कि 11 मुखी धारण करने वाले को **नियोगी काया** अर्थात् रोगमुक्त शरीर का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

- **शारीरिक स्वास्थ्य**

इसे हृदय संबंधी गंभीर समस्याओं, रक्तचाप को संतुलित रखने और मधुमेह के प्रबंधन में लाभकारी बताया गया है।

- **श्वसन और गले का स्वास्थ्य**

विशुद्ध चक्र से गहरे संबंध के कारण इसे **दमा, श्वसनी-शोथ** तथा **थायरॉयड ग्रंथि** के संतुलित कार्य में सहायक माना जाता है।

साथ ही, यह शरीर की समग्र रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में भी लाभकारी माना गया है।

आकार, गुणवत्ता और बाज़ार की सच्चाई

- **प्राकृतिक आकार**

दो अंकों वाले रुद्राक्ष होने के कारण 11 मुखी प्राकृतिक रूप से सुंदर **अंडाकार** आकार में विकसित होता है।

- **उपलब्धता और आकार**

नेपाल के रुद्राक्ष वृक्षों से प्रत्येक मौसम में औसतन लगभग **6,000** 11 मुखी रुद्राक्ष प्राप्त होते हैं।

नेपाल के उच्च और अत्यंत प्रभावशाली 11 मुखी रुद्राक्ष सामान्यतः **20 मिमी से 34 मिमी** तक के होते हैं।

अच्छे परिणामों के लिए सामान्यतः **24 मिमी से 26 मिमी** आकार का रुद्राक्ष, जिसका वजन लगभग **4 से 4.5 ग्राम** हो, धारण करने की सलाह दी जाती है।

- **धारण करने का तरीका**

अधिकतम ऊर्जा संतुलन के लिए 11 मुखी रुद्राक्ष को लगातार धारण करने की सलाह दी जाती है। बेहतर माना जाता है कि यह सीधे त्वचा को स्पर्श करता रहे, ताकि इसकी ऊर्जा निरंतर धारण करने वाले तक पहुँचती रहे।

12 मुखी: सूर्य का तेज

रुद्राक्षं द्वादशास्यं यः कण्ठदेशे तु धारयेत् ।
आदित्यस्तोषमायाति तस्य नित्यं न संशयः ॥
न व्याधिर्बाधते तस्य सुखैश्वर्यमवाप्नुयात् ।

"जो व्यक्ति 12 मुखी रुद्राक्ष को अपने गले में धारण करता है, उससे भगवान आदित्य (सूर्य देव) सदा प्रसन्न रहते हैं—इसमें कोई संदेह नहीं। उसे कोई रोग परेशान नहीं करता और वह सुख एवं ऐश्वर्य प्राप्त करता है।" (पद्म पुराण, अध्याय 57, श्लोक 80-82)

- अधिष्ठाता देव: भगवान सूर्य / भगवान विष्णु
- स्वामी ग्रह: सूर्य
- बीज मंत्र: ॐ क्रौं क्षौं रौं नमः

दो अंकों वाले रुद्राक्षों में 12 मुखी मेरा सबसे पसंदीदा रुद्राक्ष है। अधिक मुख वाले रुद्राक्षों में भी मैंने 12 मुखी के कुछ बेहद गहरे और जीवन में बड़े बदलाव लाने वाले प्रभाव लगातार देखे हैं।

इसका सिद्धांत: भीतर के सूर्य और मणिपुर चक्र को जागृत करना

12 मुखी को समझने के लिए सबसे पहले सूर्य की ब्रह्मांड में भूमिका को समझना ज़रूरी है।

सूर्य ऊर्जा का सबसे बड़ा स्रोत है, ब्रह्मांडीय व्यवस्था का संचालक और हमारे सौरमंडल का गुरुत्वाकर्षण केंद्र है। सब कुछ सूर्य के चारों ओर घूमता है।

जब आप 12 मुखी रुद्राक्ष धारण करते हैं, तो इसकी ऊर्जा सीधे **मणिपुर चक्र** को सक्रिय करने वाली मानी जाती है। यह चक्र शरीर में अग्नि तत्व, व्यक्तिगत शक्ति और दृढ़ महत्वाकांक्षा का केंद्र माना जाता है।

यह रुद्राक्ष व्यक्ति की सोच में एक बड़ा बदलाव लाता है। आप जीवन में केवल परिस्थितियों के अनुसार चलने के बजाय अपने जीवन की कमान खुद संभालना शुरू करते हैं।

यह खुद को परिस्थितियों का शिकार समझने की मानसिकता, बेबसी, संदेह और कम आत्मसम्मान को दूर करने वाला माना जाता है। दूसरों की अपेक्षाओं

और माँगों से दबने या अत्यधिक प्रभावित होने के बजाय आप अपने जीवन के स्वयं "सूर्य" बनते हैं—जहाँ दुनिया और उसमें मौजूद अवसर आपके इर्द-गिर्द घूमने लगते हैं।

इसके व्यावहारिक लाभ: नेतृत्व और लगातार उन्नति

12 मुखी धारण करने वाले व्यक्ति में सूर्य जैसा तेज, आकर्षण और ऊर्जा आने की मान्यता है।

- **सर्वोच्च नेतृत्व क्षमता**

राजनेताओं, उच्च पदों पर कार्यरत अधिकारियों, महत्वाकांक्षी व्यापारियों और बड़े स्तर पर लोगों को प्रभावित करने वाले व्यक्तियों के लिए इसे अत्यंत महत्वपूर्ण रुद्राक्ष माना जाता है।

यह स्वाभाविक रूप से मजबूत नेतृत्व क्षमता, अत्यधिक आत्मविश्वास तथा व्यापक स्तर पर **नाम, प्रसिद्धि और सम्मान** दिलाने वाला माना जाता है।

- **करियर और कानूनी मामलों में सफलता**

चाहे आप किसी बड़ी पदोन्नति की कोशिश कर रहे हों, व्यापार को तेज़ी से बढ़ाना चाहते हों, आर्थिक सफलता की तलाश में हों या किसी जटिल कानूनी मामले से गुजर रहे हों—12 मुखी व्यक्ति को परिस्थितियों को स्पष्ट रूप से देखने और दृढ़ता से अपने पक्ष में हल करने की क्षमता देने वाला माना जाता है।

- **दूसरों पर अत्यधिक निर्भरता से मुक्ति**

यह उन लोगों के लिए विशेष रूप से उपयोगी माना जाता है जो **परावलंबी रिश्तों** में फँसे हुए हैं या हमेशा दूसरों की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेने लगते हैं।

यह दूसरों के दबाव और अपेक्षाओं के बंधन को तोड़कर व्यक्ति में स्वतंत्रता और अपने जीवन पर नियंत्रण की भावना विकसित करने में सहायक माना जाता है।

शक्तिशाली संयोजन: वृद्धि बंध और अन्य विकल्प

12 मुखी अपने आप में बेहद शक्तिशाली माना जाता है, लेकिन सही रुद्राक्षों के साथ इसका संयोजन करने पर इसका प्रभाव कई गुना बढ़ सकता है।

- **वृद्धि बंध**

यदि आप पूरी **1 से 14 मुखी समृद्धि माला** नहीं ले सकते, तो मैं **5, 6, 7, 8 और 12 मुखी** रुद्राक्षों का संयोजन धारण करने की सलाह देता हूँ।

यह विशेष संयोजन एक संपूर्ण सुरक्षा कवच और उन्नति के माध्यम के रूप में काम करता है। इसे **स्वास्थ्य, रिश्तों, धन, भाग्य और नेतृत्व**— इन सभी क्षेत्रों के लिए लाभकारी माना जाता है।

- **धन और विस्तार का संयोजन**

मैं हमेशा 12 मुखी के साथ **7 मुखी** रुद्राक्ष जोड़ने की कोशिश करता हूँ, जिसे अधिक समृद्धि आकर्षित करने वाला माना जाता है।

इसके अलावा, 12 मुखी को इसके दुर्लभ **12 मुखी गौरीशंकर** स्वरूप के साथ भी जोड़ा जा सकता है, जिसके बारे में आगे के अध्यायों में विस्तार से बताया जाएगा। यह संयोजन धन और उन्नति के लिए अत्यंत शक्तिशाली माना जाता है।

स्वास्थ्य संबंधी लाभ

- **पाचन और शरीर की आंतरिक अग्नि**

मणिपुर चक्र से संबंध होने के कारण 12 मुखी को पाचन तंत्र के लिए अत्यंत प्रभावशाली माना जाता है। इसे पेट और यकृत से जुड़ी पुरानी समस्याओं में लाभकारी बताया गया है।

शरीर की भोजन को पचाने की क्षमता को बेहतर करने के साथ-साथ, प्रतीकात्मक रूप से इसे जीवन के कठिन अनुभवों को मानसिक रूप से **"पचाने" और स्वीकार करने** की क्षमता से भी जोड़ा जाता है।

- **पूरे शरीर के लिए लाभ**

इसे गंभीर हृदय संबंधी समस्याओं में सहायक, मधुमेह को नियंत्रित करने में लाभकारी और हड्डियों से जुड़ी समस्याओं में उपयोगी माना गया है।

साथ ही, यह थके हुए मन और शरीर में दोबारा ऊर्जा और स्फूर्ति लाने वाला माना जाता है।

आकार, गुणवत्ता और बाज़ार की सच्चाई

- **प्राकृतिक आकार**

दो अंकों वाला रुद्राक्ष होने के कारण 12 मुखी प्राकृतिक रूप से एक अलग और सुंदर **अंडाकार** आकार में पाया जाता है।

- **उपलब्धता और आकार**

नेपाल के उच्च रुद्राक्ष वृक्षों से हर मौसम में औसतन लगभग **5,000** 12 मुखी रुद्राक्ष प्राप्त होते हैं।

नेपाल के अधिक प्रभावशाली 12 मुखी रुद्राक्ष सामान्यतः **20 मिमी से 32 मिमी** के आकार में पाए जाते हैं।

10 से 12 मुखी रुद्राक्षों के लिए सामान्यतः **24 मिमी से 26 मिमी** का आकार धारण करना बेहतर माना जाता है, क्योंकि इस आकार में अच्छे परिणाम मिलते हैं और यह बजट के लिहाज़ से भी उचित रहता है।

- **धारण करने का तरीका**

ज्योतिष में सूर्य की तेज़ गति और जन्म कुंडली में सूर्य के अक्सर प्रभावित होने को देखते हुए, 12 मुखी रुद्राक्ष को लगातार धारण करना सूर्य से जुड़ी बाधाओं को दूर करने वाला माना जाता है।

सूर्य जैसा तेज़ और ऊर्जा लगातार बनाए रखने के लिए इसे नियमित रूप से, बिना लंबे अंतराल के धारण करने की सलाह दी जाती है।

13 मुखी: इच्छाओं को पूरा करने वाला रुद्राक्ष

त्रयोदशमुखं चाक्षं कामदं सिद्धिदं शुभम् ।
तस्य धारणमात्रेण कामदेवः प्रसीदति ॥

"13 मुखी रुद्राक्ष सभी इच्छाओं को पूरा करने वाला, सिद्धियाँ प्रदान करने वाला और अत्यंत शुभ है। इसे केवल धारण करने मात्र से ही भगवान कामदेव (प्रेम और कामना के देवता) अत्यंत प्रसन्न होते हैं।"

(रुद्राक्ष जाबाल उपनिषद्, श्लोक 41)

- **अधिष्ठाता देव:** देवराज इंद्र एवं भगवान कामदेव (यह भगवान विष्णु का भी प्रतिनिधित्व करता है।)
- **स्वामी ग्रह:** शुक्र
- **बीज मंत्र:** ॐ ह्रीं नमः

कथा: स्वर्ग की दोबारा प्राप्ति

प्राचीन कथाओं के अनुसार, एक समय देवराज इंद्र को असुरों के हाथों बहुत बड़ी और अपमानजनक हार का सामना करना पड़ा। उन्होंने अपना सिंहासन और स्वर्ग का सारा वैभव खो दिया।

निराश होकर वे देवताओं के गुरु **बृहस्पति** के पास सलाह लेने पहुँचे। बृहस्पति ने इंद्र को अपना खोया हुआ तेज़ और प्रभावशाली शक्ति वापस पाने के लिए **13 मुखी रुद्राक्ष** धारण करने की सलाह दी।

इसे धारण करने के बाद इंद्र ने न केवल अपना राज्य वापस प्राप्त किया, बल्कि उन्हें स्वर्ग का वैभव, सुख-सुविधाएँ और शक्ति भी दोबारा प्राप्त हुई।

इसका सिद्धांत: इंद्र और कामदेव का आकर्षण

13 मुखी को समझने के लिए इसके अधिष्ठाता देवों—**इंद्र और कामदेव**—को समझना ज़रूरी है।

दोनों ही अत्यधिक ऐश्वर्य, आकर्षण और भौतिक सुखों के प्रतीक माने जाते हैं। जहाँ कई रुद्राक्षों का मुख्य उद्देश्य मोह से दूरी और आध्यात्मिक उन्नति

होता है, वहीं 13 मुखी की विशेषता यह है कि इसका संबंध **भौतिक संसार में सफलता और सुख-सुविधाओं की प्राप्ति** से माना जाता है।

इसे जागृत और धारण करने पर यह एक शक्तिशाली चुंबक की तरह काम करने वाला माना जाता है, जो व्यक्ति के जीवन में उसकी इच्छानुसार सुख-सुविधाओं को आकर्षित करता है।

प्राचीन शास्त्रों के अनुसार, यह धारण करने वाले को **धन, उच्च सम्मान, सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति और आठ रहस्यमयी सिद्धियों (अष्ट सिद्धियों)** की प्राप्ति का आशीर्वाद देता है।

इसके व्यावहारिक लाभ: आभा, करिश्मा और आकर्षण

13 मुखी रुद्राक्ष के प्रभाव को तीन शब्दों में समझा जा सकता है—**आभा, करिश्मा और आकर्षण**।

- **आकर्षण का शक्तिशाली केंद्र**

इस रुद्राक्ष की सबसे प्रमुख विशेषता धारण करने वाले के **आभामंडल** को अत्यधिक प्रभावशाली बनाना माना जाता है।

यह व्यक्ति को आकर्षक व्यक्तित्व, तेज़ बुद्धि और ऐसा प्रभावशाली अंदाज़ देने वाला माना जाता है जिससे लोग स्वाभाविक रूप से उसकी ओर आकर्षित होते हैं।

मान्यता है कि यह लोगों, नए अवसरों और धन को धारण करने वाले की ओर आकर्षित करता है।

- **प्रसिद्धि और सुखियाँ**

13 मुखी का स्वामी **शुक्र** है, जो सौंदर्य, कला और ऐश्वर्य का ग्रह माना जाता है। इसलिए जिन लोगों की सफलता काफ़ी हद तक उनकी सार्वजनिक छवि और लोगों पर पड़ने वाले प्रभाव पर निर्भर करती है, उनके लिए इसे बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है।

इसी कारण इसकी माँग अभिनेताओं, प्रसिद्ध कलाकारों और विलासिता, आतिथ्य तथा आभूषण क्षेत्र के उच्च स्तर के पेशेवरों में विशेष रूप से देखी जाती है।

- **प्रभावशाली संवाद क्षमता**

यदि कोई व्यक्ति राजनीति, रंगमंच और फ़िल्म उद्योग, कैमरे के सामने किए जाने वाले काम, भाषण कला या बड़े स्तर के विपणन में सर्वोच्च स्थान तक पहुँचना चाहता है, तो उसके लिए 13 मुखी रुद्राक्ष अत्यंत उपयोगी माना जाता है।

यह व्यक्ति की बातचीत और अपनी बात रखने की क्षमता को अधिक प्रभावशाली बनाता है, जिससे वह लोगों का ध्यान आसानी से अपनी ओर खींच सके और उन्हें प्रभावित कर सके।

विवाह और रिश्तों में सामंजस्य

जिन पुरुषों के वैवाहिक जीवन में लंबे समय से समस्याएँ चल रही हों या जिनके विवाह में बहुत अधिक देरी हो रही हो, उनके लिए 13 मुखी को कमजोर या पीड़ित शुक्र को मजबूत करने वाला एक महत्वपूर्ण ज्योतिषीय उपाय माना जाता है।

यह रिश्तों में लंबे समय से चली आ रही अनबन को दूर करने और आपसी आकर्षण को दोबारा बढ़ाने में सहायक माना जाता है।

रिश्तों से जुड़ी समस्याओं में अधिक प्रभावशाली और तेज़ परिणामों के लिए मैं दुर्लभ **13 मुखी गौरीशंकर** रुद्राक्ष को प्राथमिकता देने की सलाह देता हूँ।

स्वास्थ्य संबंधी लाभ: प्रजनन स्वास्थ्य और शारीरिक ऊर्जा

शुक्र ग्रह से गहरा संबंध होने के कारण 13 मुखी रुद्राक्ष को विशेष रूप से **प्रजनन तंत्र** के स्वास्थ्य और शारीरिक ऊर्जा को बढ़ाने से जोड़ा जाता है।

- **पुरुषों का स्वास्थ्य**

इसे **स्तंभन दोष**, **शीघ्रपतन** और **कम शुक्राणु संख्या** जैसी यौन और मूल संबंधी समस्याओं में अत्यंत प्रभावी माना जाता है।

- **महिलाओं का स्वास्थ्य**

महिलाओं में इसे प्रजनन तंत्र को संतुलित करने तथा **मासिक धर्म से जुड़ी गंभीर समस्याओं और उनसे संबंधित हार्मोनल असंतुलन** में राहत देने वाला माना जाता है।

आकार, गुणवत्ता और बाज़ार की सच्चाई

- **दुर्लभता और कीमत में बदलाव**

जहाँ **3 से 12 मुखी** तक के रुद्राक्ष सामान्यतः अधिकांश लोगों के बजट में उपलब्ध होते हैं, वहीं 13 मुखी से बाज़ार की स्थिति काफ़ी बदल जाती है।

नेपाल में एक सामान्य सीज़न की फसल में केवल लगभग **2,000 से 2,500** 13 मुखी रुद्राक्ष ही प्राप्त होते हैं। इतनी कम उपलब्धता के कारण इसकी कीमत स्वाभाविक रूप से काफ़ी बढ़ जाती है।

हालाँकि, जो व्यक्ति पहले ही **1 से 12 मुखी** रुद्राक्षों के प्रभाव और जीवन में आने वाले बदलावों को अनुभव कर चुका है, उसके लिए 13 मुखी की ओर बढ़ना एक महत्वपूर्ण निवेश माना जाता है।

- **उपलब्धता और आकार**

नेपाल के 13 मुखी रुद्राक्ष सामान्यतः **21 मिमी से 32 मिमी** के आकार में पाए जाते हैं।

सर्वोत्तम ऊर्जा और स्पष्ट परिणामों के लिए मैं **24 मिमी से 26 मिमी** आकार का रुद्राक्ष चुनने की सलाह देता हूँ। साथ ही यह सुनिश्चित करें कि उसका वजन **4 ग्राम से अधिक** हो।

इन मूल मापदंडों से बड़ा रुद्राक्ष चुनना अंततः धारण करने वाले के **बजट और व्यक्तिगत पसंद** पर निर्भर करता है।

14 मुखी: देव मणि — भगवान शिव का सर्वोच्च स्वरूप

चतुर्दशमुखश्चाक्षो रूद्रनेत्र समुदमवः सवर्-व्याधिहरश्चैव सवारीर्य
प्रदायकः ॥

14 मुखी रुद्राक्ष सीधे भगवान रुद्र के नेत्र से उत्पन्न हुआ माना जाता है। यह सभी बाधाओं को दूर करता है और धारण करने वाले को संपूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करता है।" (श्रीमद् देवी भागवत, स्कंध 11, अध्याय 7, श्लोक 39)

चतुर्दशमुखो यो हि रुद्राक्षः परमः शिवः ।
तं धृत्वा मूर्ध्नि भक्त्या तु सर्वरोगैः प्रमुच्यते ॥

"14 मुखी रुद्राक्ष स्वयं परम शिव का स्वरूप है। इसे श्रद्धा के साथ सिर पर धारण करने से व्यक्ति सभी रोगों से मुक्त हो जाता है।" (पद्म पुराण, अध्याय 57)

- अधिष्ठाता देव: भगवान शिव / भगवान हनुमान
- स्वामी ग्रह: शनि / मंगल
- बीज मंत्र: ॐ नमः

कथा: रुद्राक्षों का उपप्रधान और तीसरा नेत्र

नेपाल का प्रसिद्ध, पूरी तरह गोल 1 मुखी रुद्राक्ष आज के समय में लगभग एक मिथक जैसा है। इसलिए रुद्राक्षों की दुनिया में 14 मुखी को उसका "उपप्रधान" कहा जा सकता है। वास्तव में इसे सर्वोच्च रुद्राक्षों में से एक माना जाता है।

इसे देव मणि, यानी "दिव्य रत्न" कहा जाता है, क्योंकि शास्त्रों के अनुसार इसकी उत्पत्ति सीधे भगवान शिव के तीसरे नेत्र से निकले आँसुओं से हुई थी।

इसे जीवन की हर तरह की समस्या के समाधान से जोड़ा जाता है। माना जाता है कि इसमें 1 से 13 मुखी तक सभी रुद्राक्षों की संयुक्त ऊर्जा मौजूद होती है।

इसे धारण करने से दुःख, मन में गहराई तक बैठे डर और पिछले जन्मों के कष्ट दूर होते हैं और उनकी जगह मजबूत आत्मविश्वास, अच्छा स्वास्थ्य और अपार धन-समृद्धि आती है। यह भी कहा जाता है कि इसे धारण करने वाला अपनी इंद्रियों पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर सकता है।

इसके व्यावहारिक लाभ: तीव्र अंतर्ज्ञान और धन

14 मुखी रुद्राक्ष सीधे **आज्ञा चक्र (तीसरा नेत्र)** को सक्रिय करने और मस्तिष्क के दाएँ हिस्से को तेज़ी से सक्रिय करने वाला माना जाता है।

- **निवेश और ट्रेडिंग करने वालों का खास रुद्राक्ष**

यह रुद्राक्ष बेहद तेज़ और लगभग भविष्य का अंदाज़ा लगा सकने जैसी अंतर्ज्ञान शक्ति विकसित करने वाला माना जाता है। इसी कारण इसे शेयर बाज़ार के व्यापारियों, निवेशकों, बड़े अचल संपत्ति कारोबारियों और अधिक जोखिम वाले निवेश करने वालों के लिए सर्वोत्तम रुद्राक्षों में से एक माना जाता है।

यह व्यक्ति की उस "अंतर्मन की अनुभूति" को मजबूत करता है जिसकी मदद से वह कुछ ही पलों में बड़े फैसले ले सके और उनसे भारी आर्थिक लाभ प्राप्त कर सके।

इन क्षेत्रों में अधिकतम प्रभाव के लिए कभी-कभी इसकी **32 मनकों वाली विशेष कंठी** भी पहनी जाती है।

- **सर्वोच्च सुरक्षा कवच**

चाहे आप किसी गंभीर कानूनी विवाद में फँसे हों, आपके खिलाफ छिपे हुए शत्रु साजिश कर रहे हों, भारी कर्ज़ हो या अचानक कोई बड़ा संकट आ गया हो—14 मुखी को इन बाधाओं को दूर करके रास्ता साफ़ करने वाला माना जाता है।

- **ज्योतिषीय शक्ति**

इसे पीड़ित शनि, विशेष रूप से **शनि की साढ़ेसाती या ढैया**, के लिए अत्यंत शक्तिशाली उपाय माना जाता है।

यह मंगल की ऊर्जा को भी संतुलित करने वाला माना जाता है और **पितृ दोष** को पूरी तरह दूर करने के लिए भी इसकी विशेष रूप से सलाह दी जाती है।

स्वास्थ्य संबंधी लाभ

तीसरे नेत्र से संबंध और अत्यधिक ब्रह्मांडीय ऊर्जा के कारण 14 मुखी को एक शक्तिशाली उपचारक माना जाता है।

इसे लंबे समय से चली आ रही **त्वचा संबंधी बीमारियों, पेट या शरीर में परजीवी कीड़ों और गंभीर घाव** में तेज़ राहत देने वाला बताया गया है।

उन्नत वैकल्पिक और आयुर्वेदिक उपचार पद्धतियों में शरीर को **अर्बुद और कैंसर जैसी गंभीर कोशिकीय समस्याओं** से लड़ने में सहायता देने के लिए भी इसकी काफ़ी माँग है।

बाज़ार की सच्चाई और नकली रुद्राक्ष का खतरा

- **एक निवेश के रूप में**

1 से 14 मुखी की श्रेणी में 14 मुखी सबसे महँगा रुद्राक्ष है।

केवल पिछले तीन वर्षों में ही इसकी कीमत लगभग दोगुनी हो चुकी है। इसी कारण उच्च गुणवत्ता वाले 14 मुखी रुद्राक्ष को सोने की तुलना में बेहतर और अधिक तेज़ी से मूल्य बढ़ाने वाला आर्थिक निवेश बताया गया है।

- **उपलब्धता और आकार**

असली 14 मुखी रुद्राक्ष सामान्यतः **17 मिमी से 32 मिमी** तक के आकार में मिलते हैं।

कीमत अधिक होने के कारण खरीदार अक्सर छोटे आकार का रुद्राक्ष लेकर समझौता कर लेते हैं। लेकिन इसके वास्तविक और पूर्ण प्रभाव का अनुभव करने के लिए मेरी स्पष्ट सलाह है कि **24 मिमी से 26 मिमी** आकार के रुद्राक्ष में निवेश करें।

- **नकली रुद्राक्ष से सावधान**

बहुत अधिक कीमत होने के कारण 14 मुखी रुद्राक्ष की नकली प्रतियाँ बड़े स्तर पर बनाई और बेची जाती हैं।

नकली रुद्राक्ष बनाने वाले अक्सर सस्ते **12 या 13 मुखी** रुद्राक्ष पर बहुत बारीकी से एक अतिरिक्त नकली रेखा काटकर उसे 14 मुखी के रूप में बेच देते हैं।

एक ही फसल के मौसम में लगभग **10,000** ऐसे छेड़छाड़ किए हुए रुद्राक्ष बाज़ार में आ जाते हैं।

इसलिए 14 मुखी खरीदते समय बेहद सावधान रहें। इसे हमेशा आवर्धक काँच से जाँचें और आईएसओ-प्रमाणित प्रयोगशाला प्रतिवेदन की माँग करें, जिसमें सख्त चार-बिंदु गुणवत्ता जाँच प्रणाली के माध्यम से यह सुनिश्चित किया गया हो कि किसी भी रेखा को चिपकाया, काटा या किसी अन्य तरीके से परिवर्तित नहीं किया गया है।

गौरीशंकर रुद्राक्ष: शिव और शक्ति का दिव्य मिलन

**गौरीशङ्कररुद्राक्षं शिवशक्त्यात्मकं स्मृतम् ।
तस्य धारणमात्रेण दाम्पत्यं सुखमश्रुते ॥**

"गौरीशंकर रुद्राक्ष शिव और शक्ति के एक रूप का प्रतीक है। इसे केवल धारण करने मात्र से व्यक्ति को सुखी और सामंजस्यपूर्ण वैवाहिक जीवन प्राप्त होता है।"

शिव पुराण और श्रीमद् देवी भागवत जैसे प्रमुख शास्त्रों में मुख्य रूप से **1 से 14 मुखी** रुद्राक्षों का विस्तार से वर्णन मिलता है। वहीं गूढ़ **कात्यायनी तंत्र** में शिव और शक्ति के संयुक्त स्वरूप की विशेष महिमा बताई गई है।

इसी कारण गौरीशंकर रुद्राक्ष दशकों से बेहद लोकप्रिय, पूजनीय और प्रभावशाली माना जाता रहा है।

- **अधिष्ठाता देव:** भगवान शिव और माता पार्वती
- **स्वामी ग्रह:** चंद्रमा *(साथ ही उस गौरीशंकर के संबंधित मुखी का ग्रह)*
- **बीज मंत्र:** ॐ गौरीशंकराय नमः

प्रकृति का चमत्कार और रिश्तों पर प्रभाव

गौरीशंकर वास्तव में प्रकृति का एक अद्भुत चमत्कार है। इसमें **दो अलग-अलग रुद्राक्ष प्राकृतिक रूप से पेड़ पर ही आपस में जुड़ जाते हैं।**

यह **अर्धनारीश्वर**, यानी भगवान शिव और माता पार्वती के एकाकार स्वरूप का प्रतीक माना जाता है।

इसी कारण इसे वैवाहिक जीवन में सामंजस्य लाने, रिश्तों की अनबन दूर करने और अपने लिए अनुकूल जीवनसाथी आकर्षित करने के लिए सबसे शक्तिशाली रुद्राक्षों में से एक माना जाता है।

यह व्यक्ति के जीवन में प्रेम, सहानुभूति और पारिवारिक शांति को बढ़ाने वाला माना जाता है।

2 मुखी का विकल्प और योगियों की पसंद

असली नेपाली 2 मुखी रुद्राक्ष बहुत से लोगों के बजट से बाहर होता है।

गौरीशंकर को इसका बेहतरीन विकल्प माना जाता है क्योंकि इसमें भी वही मूल गुण—**शिव-पार्वती का मिलन और चंद्रमा को शांत करने की शक्ति**—माने जाते हैं, लेकिन इसकी कीमत नेपाली 2 मुखी रुद्राक्ष की कीमत की लगभग **30%** होती है।

अपनी कीमत और प्रभावशाली ऊर्जा के कारण यह रुद्राक्ष प्रेमियों के बीच बेहद लोकप्रिय है।

गहन ध्यान करने वाले साधक, योगी और संन्यासी विशेष रूप से **32 या 54 मनकों वाली गौरीशंकर कंठी** पहनना पसंद करते हैं, ताकि उन्हें लगातार शिव और शक्ति की संतुलित दिव्य ऊर्जा प्राप्त होती रहे।

पैसे बचाने का तरीका और बाज़ार की सच्चाई

यहाँ रुद्राक्ष बाज़ार से जुड़ी एक महत्वपूर्ण बात है, जिसकी जानकारी होने पर आप काफ़ी पैसे बचा सकते हैं और सही रुद्राक्ष चुनकर उसका लाभ भी बढ़ा सकते हैं।

गौरीशंकर केवल दो जुड़े हुए रुद्राक्ष नहीं होते। इनमें भी प्राकृतिक रेखाएँ यानी **मुख** होते हैं, जिनकी संख्या आमतौर पर **8 से 21 मुखी** तक हो सकती है।

आम बाज़ार में विक्रेता अक्सर **8, 9 या 10 मुखी गौरीशंकर** बिना उसकी मुखी संख्या बताए बेच देते हैं। जानकारी की कमी के कारण ग्राहक भी मुखी संख्या नहीं पूछता और विक्रेता के पास जो उपलब्ध होता है, वही उसे दे दिया जाता है।

www.rudrasamrat.com पर हमने सबसे पहले गौरीशंकर को उसकी मुखी संख्या के अनुसार अलग-अलग श्रेणियों में पेश किया, ताकि ग्राहकों को ठीक-ठीक पता हो कि वे क्या खरीद रहे हैं। यही तरीका हम अपने **रुद्राक्ष कोर्स®** में भी सिखाते हैं।

इसका फायदा कैसे उठाएँ?

गौरीशंकर का मुख्य प्रभाव **रिश्तों और सामंजस्य** पर माना जाता है। लेकिन दूसरे स्तर पर यह उस मुखी रुद्राक्ष की तरह भी काम करता है जिसकी मुखी संख्या इसमें मौजूद होती है।

- **दोहरा लाभ**

यदि आपको 11 मुखी के लाभ चाहिए, तो आप सीधे **11 मुखी गौरीशंकर** खरीद सकते हैं।

इससे अलग से 11 मुखी रुद्राक्ष खरीदने का खर्च बच सकता है और आपको **11 मुखी के लाभ के साथ गौरीशंकर से मिलने वाला वैवाहिक सामंजस्य** भी प्राप्त होता है।

- **अधिक मुखी वाले रुद्राक्षों के लिए तरीका**

समझदार खरीदार इस तरीके का इस्तेमाल खासकर महँगे, अधिक मुख वाले रुद्राक्षों—**14 मुखी और उससे ऊपर**—के लिए करते हैं।

उदाहरण के लिए, **14 मुखी गौरीशंकर** एक अलग 14 मुखी रुद्राक्ष की तुलना में काफ़ी सस्ता होता है। इससे आप कम कीमत में अधिक मुखी रुद्राक्ष से जुड़ी शक्तिशाली ऊर्जा का लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

ज्योतिषीय अपवाद

इस तरीके में एक महत्वपूर्ण बात ध्यान रखना आवश्यक है।

यदि आप किसी रुद्राक्ष को केवल **किसी विशेष ग्रह के ज्योतिषीय उपाय** के लिए पहन रहे हैं—उदाहरण के लिए, आपके ज्योतिषी ने मंगल को शांत करने के लिए विशेष रूप से 11 मुखी पहनने को कहा है—तो ऐसी स्थिति में **एकल 11 मुखी रुद्राक्ष** खरीदना बेहतर है, न कि उसका गौरीशंकर स्वरूप।

गौरीशंकर में रिशतों और चंद्रमा से जुड़ी अतिरिक्त ऊर्जा भी होती है। इसलिए यह उस एक विशेष ग्रह पर केंद्रित प्रभाव को कम कर सकती है जिसकी आपको आवश्यकता है।

गर्भ गौरी (गौरी गणेश): मातृत्व का आशीर्वाद

गौरीशंकर परिवार में प्रकृति का एक और अद्भुत और बेहद खास स्वरूप मिलता है, जिसे **गर्भ गौरी** कहा जाता है। यह **गौरी गणेश रुद्राक्ष** के नाम से भी काफ़ी लोकप्रिय है।

सामान्य गौरीशंकर में प्राकृतिक रूप से जुड़े दोनों रुद्राक्ष लगभग बराबर आकार के होते हैं। वहीं गर्भ गौरी में एक रुद्राक्ष दूसरे की तुलना में काफ़ी छोटा होता है—आमतौर पर लगभग **40% छोटा**।

प्रतीकात्मक रूप से बड़ा रुद्राक्ष **माता पार्वती (गौरी)** और छोटा रुद्राक्ष उनके पुत्र **भगवान गणेश** का प्रतिनिधित्व करता है।

इसके व्यावहारिक लाभ: गर्भधारण और गर्भावस्था

इस रुद्राक्ष का एक बहुत विशेष और गहरा उद्देश्य माना जाता है।

जो महिलाएँ गर्भधारण करने की कोशिश कर रही हैं या सुरक्षित और स्वस्थ गर्भावस्था चाहती हैं, उनके लिए इसे एक बेहद शक्तिशाली और कम लोगों को ज्ञात उपाय माना जाता है।

पिछले कई वर्षों में मैंने व्यक्तिगत रूप से ऐसे अनगिनत दंपतियों के अनुभव देखे और सुने हैं, जिन्हें लंबे समय से संतान प्राप्ति में परेशानी हो रही थी,

लेकिन महिला साथी द्वारा गर्भ गौरी धारण करने के बाद उन्हें माता-पिता बनने का सुख प्राप्त हुआ।

यह गर्भ के चारों ओर एक दिव्य ऊर्जा कवच बनाने और नई ज़िंदगी को गर्भ में धारण करने के लिए आवश्यक मातृ ऊर्जा को संतुलित करने वाला माना जाता है। इसी कारण संतान की इच्छा रखने वाली महिलाओं के लिए इसे विशेष आशीर्वाद माना जाता है।

देखभाल, आकार और विशेषताएँ

- **चाँदी का सुरक्षा कवच**

क्योंकि इसमें दो रुद्राक्ष प्राकृतिक जोड़ से आपस में जुड़े होते हैं, इसलिए गिरने या गलत तरीके से संभालने पर यह जोड़ टूट या अलग हो सकता है।

इसी कारण मैं इसे **चाँदी की जड़ाई** में लगवाकर पहनने की सलाह देता हूँ, ताकि इसके प्राकृतिक जोड़ को अतिरिक्त मजबूती और सुरक्षा मिल सके।

- **आकार की सलाह**

असली गर्भ गौरी रुद्राक्ष सामान्यतः **24 मिमी** से शुरू होते हैं।

हालाँकि, बेहतर मजबूती और ऊर्जा के लिए मैं **30 मिमी या उससे बड़ा** रुद्राक्ष लेने की सलाह देता हूँ।

गणेश रुद्राक्ष: सूँड़ का प्राकृतिक चमत्कार

विघ्ननाशकरं देवं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।

गणेशमूर्तिमद्रुद्राक्षं सर्वकामार्थसिद्धये ॥

"भगवान गणेश के साकार स्वरूप वाला रुद्राक्ष सभी विघ्नों को नष्ट करने और सभी सिद्धियाँ प्रदान करने वाला माना जाता है। यह सभी इच्छाओं को पूरा करता है और सर्वोच्च सफलता प्रदान करता है।"
(गणेश स्वरूप की उपासना करने वाली तांत्रिक परंपराओं पर आधारित)

- **अधिष्ठाता देव:** भगवान गणेश

- **स्वामी ग्रह:** राहु (साथ ही उसके संबंधित मुखी का ग्रह)
- **बीज मंत्र:** ॐ गं गणपतये नमः

प्रकृति का अनसुलझा चमत्कार

गणेश रुद्राक्ष प्रकृति का एक और अनोखा चमत्कार है, जो वनस्पति वैज्ञानिकों और वैज्ञानिकों को भी हैरान करता है।

इस रुद्राक्ष की सतह पर प्राकृतिक रूप से एक उभरा हुआ हिस्सा बनता है, जो बिल्कुल **भगवान गणेश की मुड़ी हुई सूँड़** जैसा दिखाई देता है।

पेड़ की आनुवंशिक संरचना किस तरह एक खास जगह पर इस तरह की बिल्कुल अलग आकृति वाली प्राकृतिक बढ़त पैदा करती है, यह आज भी एक अनसुलझा जैविक रहस्य बताया जाता है। आध्यात्मिक रूप से इसे सीधे भगवान गणेश का आशीर्वाद माना जाता है।

8 मुखी का किफायती विकल्प

पारंपरिक नेपाली **8 मुखी रुद्राक्ष**, जो भगवान गणेश का मुख्य रुद्राक्ष माना जाता है, काफ़ी महँगा हो सकता है।

ऐसे में गणेश रुद्राक्ष को उसका काफ़ी किफायती और समान रूप से प्रभावशाली विकल्प माना जाता है।

इसमें 8 मुखी के वही मुख्य गुण माने जाते हैं, इसलिए विद्यार्थियों, पेशेवरों और जीवन में बार-बार रुकावटों का सामना कर रहे लोगों के बीच इसकी काफ़ी माँग है।

इसे धारण करने पर 8 मुखी से जुड़े ये प्रमुख लाभ माने जाते हैं:

- **बाधाओं को दूर करना**

यह करियर, शिक्षा और जीवन में अचानक आने वाली रुकावटों को दूर करने वाला माना जाता है।

- **बुद्धि और विश्लेषण क्षमता**

यह व्यक्ति को बुद्धि, एकाग्रता और विश्लेषण क्षमता प्रदान करने वाला माना जाता है। इसलिए विद्यार्थियों और टेक्नोलॉजी से जुड़े पेशेवरों के लिए इसे विशेष रूप से उपयोगी माना जाता है।

- **राहु को शांत करना**

यह राहु के अशुभ प्रभावों को कम करने, मानसिक भ्रम दूर करने, **वीज़ा या विदेश में स्थायी निवास** मिलने में हो रही देरी को दूर करने और छिपे हुए शत्रुओं से सुरक्षा देने वाला माना जाता है।

"दोहरा लाभ" और दुर्लभ प्रकार

गौरीशंकर की तरह गणेश रुद्राक्ष भी केवल एक ही प्रकार का नहीं होता। इसके भी अपने प्राकृतिक **मुख** होते हैं।

- **आम प्रकार**

यह सबसे अधिक **4, 5 या 6 मुखी गणेश रुद्राक्ष** के रूप में पाया जाता है।

यहाँ भी पैसे बचाने वाला वही तरीका लागू होता है। उदाहरण के लिए, यदि आप **4 मुखी गणेश रुद्राक्ष** खरीदते हैं, तो आपको भगवान ब्रह्मा से जुड़े 4 मुखी की बुद्धि बढ़ाने वाली शक्ति के साथ भगवान गणेश की बाधाएँ दूर करने वाली शक्ति भी मिलती है।

- **बेहद दुर्लभ प्रकार**

सूँड़ जैसी प्राकृतिक आकृति आमतौर पर कम मुख वाले रुद्राक्षों पर पाई जाती है। लेकिन कभी-कभी **9, 10 या यहाँ तक कि 12 मुखी** जैसे अधिक मुख वाले रुद्राक्षों पर भी हल्की प्राकृतिक सूँड़ मिल जाती है।

ऐसे रुद्राक्ष बेहद दुर्लभ होते हैं।

यदि आपको प्राकृतिक गणेश सूँड़ वाला अधिक मुखी रुद्राक्ष मिल जाए, तो इसे बेहद सौभाग्यशाली माना जाता है, क्योंकि इसमें उस मुखी से जुड़ी शक्तिशाली ग्रह ऊर्जा और विघ्नहर्ता भगवान गणेश का सीधा आशीर्वाद—दोनों एक साथ माने जाते हैं।

आकार, विशेषताएँ और माप

- आम बाज़ार में असली गणेश रुद्राक्ष सामान्यतः **18 मिमी से 20 मिमी** के आकार में मिलते हैं।
- बेहतर ऊर्जा और सूँड़ की आकृति स्पष्ट एवं अच्छी तरह विकसित होने के लिए मैं **20 मिमी से बड़ा** रुद्राक्ष चुनने की सलाह देता हूँ।
- **माप से जुड़ी महत्वपूर्ण बात:** जब विक्रेता या प्रयोगशाला गणेश रुद्राक्ष का आकार मिलीमीटर में मापते हैं, तो माप उसके सबसे चौड़े हिस्से से लिया जाता है। इसमें बाहर निकली हुई सूँड़ भी रुद्राक्ष के कुल व्यास में शामिल होती है।

15 मुखी: भगवान पशुपतिनाथ — विशेष उद्देश्यों का रुद्राक्ष

पञ्चदशमुखो रुद्राक्षः साक्षात् पशुपतिनाथः ।

तस्य धारणात् पाशबन्धान्मुच्यते सर्वजीविभिः ॥

"15 मुखी रुद्राक्ष स्वयं भगवान पशुपतिनाथ का स्वरूप है। इसे धारण करने से सभी जीव पशु प्रवृत्तियों के बंधन और सांसारिक दुखों से मुक्त होते हैं।" (मंत्र महार्णव और पारंपरिक तांत्रिक ग्रंथों पर आधारित)

- **अधिष्ठाता देव:** भगवान पशुपतिनाथ (जीवों और आत्माओं के स्वामी)
- **स्वामी ग्रह:** बृहस्पति (गुरु)
- **बीज मंत्र:** ॐ ह्रीं नमः

विशेष रुद्राक्षों की शुरुआत

15 मुखी से आगे हम रुद्राक्षों की एक बेहद विशेष श्रेणी में प्रवेश करते हैं। ये रुद्राक्ष मुख्य रूप से उच्च आध्यात्मिक लक्ष्यों की प्राप्ति और भगवान शिव से सीधा जुड़ाव स्थापित करने के लिए माने जाते हैं।

असल जीवन में **90% से अधिक लोग 3 से 12 मुखी** की सामान्य श्रेणी में ही अपने मनचाहे परिणाम प्राप्त कर लेते हैं। 14 मुखी से आगे रुद्राक्षों की कीमत काफ़ी बढ़ जाने के कारण **5% से भी कम लोग** इस श्रेणी तक जाते हैं।

जो लोग 14 मुखी से आगे बढ़ते हैं, वे आमतौर पर रोज़मर्रा के सामान्य लाभों के बजाय किसी विशेष लक्ष्य के लिए अधिक केंद्रित ऊर्जा चाहते हैं।

चूँकि 15 मुखी भगवान पशुपतिनाथ का स्वरूप माना जाता है, इसलिए इसमें **1 से 14 मुखी तक के सभी रुद्राक्षों की शक्तियाँ और गुण एक साथ मौजूद माने जाते हैं।**

इसके व्यावहारिक लाभ: रुका हुआ धन और भावनात्मक उपचार

यह सामान्य उद्देश्यों के लिए पहना जाने वाला रुद्राक्ष नहीं है, बल्कि इसे विशेष और अत्यंत शक्तिशाली रुद्राक्ष माना जाता है।

- **साधकों की पसंद**

बृहस्पति और आध्यात्मिक उन्नति से गहरा संबंध होने के कारण इसे **गूढ़ विद्याओं के साधकों, ज्योतिषियों, अंक ज्योतिषियों, आध्यात्मिक उपचारक और शिक्षकों** के लिए विशेष रूप से उपयोगी माना जाता है।

ऐसे लोगों को अपने काम में गहरी अंतर्ज्ञान शक्ति और भारी ऊर्जाओं के साथ काम करते समय सुरक्षा की आवश्यकता होती है, जिसके लिए 15 मुखी को आदर्श माना जाता है।

- **भावनात्मक और आर्थिक स्थिति में सुधार**

15 मुखी मुख्य रूप से दो विशेष लाभों के लिए जाना जाता है—**मन में गहराई तक बैठे भावनात्मक घावों को तेज़ी से भरना और रुका, फँसा या खोया हुआ पैसा वापस दिलाने में सहायता करना।**

यदि आपका पैसा गलत निवेश में फँसा हुआ है, किसी को दिया हुआ उधार वापस नहीं मिल रहा या किसी कानूनी विवाद के कारण धन अटका हुआ है, तो यह रुद्राक्ष उस धन की वापसी के रास्ते में आने वाली बाधाओं को दूर करने वाला माना जाता है।

बाज़ार की सच्चाई: खरीदने का बेहतरीन तरीका

रुद्राक्ष बाज़ार में एक दिलचस्प स्थिति है जिसका फायदा सही जानकारी होने पर उठाया जा सकता है।

आमतौर पर रुद्राक्ष बाज़ार का नियम होता है—**"जितना अधिक मुखी, उतनी अधिक कीमत।"** लेकिन 15 मुखी इस नियम का अपवाद है।

14 मुखी की प्रसिद्धि और माँग बहुत अधिक है, जबकि 15 मुखी के बारे में लोगों को तुलनात्मक रूप से कम जानकारी है। इसी कारण कई बार **15 मुखी की कीमत 14 मुखी से भी कम** होती है, जबकि वास्तव में हर साल 15 मुखी की पैदावार 14 मुखी से भी कम होती है।

• खरीदारी का खास फायदा

15 मुखी से जुड़ी एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि इसकी **नकली प्रतियाँ लगभग कभी नहीं बनाई जातीं**। नकली रुद्राक्ष बनाने वाले मुख्य रूप से अधिक माँग वाले 14 मुखी पर ध्यान देते हैं।

15 मुखी के अंदर 15 प्राकृतिक बीज और कक्ष होते हैं। इसके कारण इसमें 14 मुखी की तुलना में अधिक परावैद्युत गुण और धारिता होने का दावा किया जाता है। इसका अर्थ है कि यह धारण करने वाले के तंत्रिका तंत्र तक अधिक मात्रा में जैव-विद्युत ऊर्जा को संचित और संचारित कर सकता है।

मेरी स्पष्ट सलाह: यदि आप अत्यधिक शक्तिशाली रुद्राक्ष चाहते हैं, लेकिन असली, अच्छी गुणवत्ता वाला या आपके बजट में आने वाला 14 मुखी नहीं मिल रहा, तो उसकी तलाश में परेशान होने के बजाय सीधे **15 मुखी** खरीद सकते हैं।

इससे आपका पैसा भी बच सकता है, नकली रुद्राक्ष खरीदने का जोखिम भी काफ़ी हद तक खत्म हो जाता है और आपको अधिक जैव-ऊर्जात्मक क्षमता वाला रुद्राक्ष भी मिलता है।

16 मुखी: भगवान राम — जय रुद्राक्ष

षोडशास्यस्तु रुद्राक्षो रामरूपः प्रकीर्तितः ।

तस्य धारणमात्रेण जयं प्राप्नोति मानवः ॥

"16 मुखी रुद्राक्ष को भगवान राम का स्वरूप माना गया है। इसे केवल धारण करने मात्र से व्यक्ति अपने सभी कार्यों और विरोधियों पर पूर्ण विजय प्राप्त करता है।"

- अधिष्ठाता देव: भगवान राम
- स्वामी ग्रह: राहु
- बीज मंत्र: ॐ ह्रीं हूं नमः

जय रुद्राक्ष और मर्यादा पुरुषोत्तम

प्राचीन ग्रंथों में 16 मुखी को "जय रुद्राक्ष", यानी विजय दिलाने वाला रुद्राक्ष कहा जाता है। इसे ऐसी परिस्थितियों पर विजय पाने के लिए सर्वोत्तम रुद्राक्षों में से एक माना जाता है, जहाँ सफलता लगभग असंभव दिखाई दे रही हो।

यह भगवान राम—**मर्यादा पुरुषोत्तम**—का स्वरूप माना जाता है। इसलिए यह धारण करने वाले में भगवान राम जैसी दृढ़ता, नैतिक साहस और जीवन की सबसे कठिन परिस्थितियों का सामना करके उनसे बाहर निकलने की क्षमता विकसित करने वाला माना जाता है।

इसे विशेष रूप से **कानूनी लड़ाइयों, कोर्ट केस और गंभीर विवादों में विजय** दिलाने के लिए जाना जाता है।

साथ ही, इसका शक्तिशाली सुरक्षा कवच मृत्यु के भय को दूर करने, चोरी से सुरक्षा देने और व्यक्ति के भीतर मजबूत तथा अडिग आत्मसम्मान विकसित करने वाला माना जाता है।

मीडिया और निर्यात-आयात के लिए शक्तिशाली रुद्राक्ष

16 मुखी का स्वामी राहु है, जिसे जनसंचार, जनमाध्यम, विदेश और अचानक होने वाले विस्तार का ग्रह माना जाता है।

इसी कारण कुछ खास पेशों से जुड़े लोगों के लिए 16 मुखी को बेहद शक्तिशाली माना जाता है।

- **अंतरराष्ट्रीय व्यापार**

निर्यात-आयात व्यवसाय से जुड़े लोगों या ऐसे लोगों के लिए, जिन्हें लगातार छिपे हुए शत्रुओं और पीठ पीछे होने वाली साजिशों का सामना करना पड़ता है, इसे सर्वोत्तम रुद्राक्षों में से एक माना जाता है।

- **प्रसिद्धि और कैमरा**

जनमाध्यम, फ़िल्म, दूरदर्शन में काम करने वाले लोगों और सामाजिक माध्यमों के प्रभावशाली व्यक्तियों के लिए यह लोगों का ध्यान आकर्षित करने और प्रसिद्धि के रास्ते में आने वाली बाधाओं को दूर करने वाला माना जाता है।

- **प्रसिद्धि के लिए विशेष संयोजन**

जब **16 मुखी** को **13 मुखी**—जो भगवान कामदेव और शुक से जुड़ा है तथा आभा और आकर्षण बढ़ाने वाला माना जाता है—के साथ पहना जाता है, तो यह एक बेहद शक्तिशाली संयोजन बनता है।

इसे **ऑनलाइन प्रसिद्धि, नाम और बड़े स्तर पर लोगों को प्रभावित करने की क्षमता** के लिए तेज़ और प्रभावशाली परिणाम देने वाला माना जाता है।

वास्तविक उदाहरण: 90 दिनों में बदलाव

16 मुखी की बताई गई शक्ति का प्रभाव वास्तविक जीवन में भी देखने का दावा किया गया है।

उदाहरण के लिए, **www.rudrasamrat.com** के एक ग्राहक के विदेशी व्यापार में एक बेहद जटिल और गंभीर विवाद चल रहा था, जिसके कारण उन्हें भारी आर्थिक नुकसान और मानसिक तनाव हो रहा था।

हमसे सलाह लेने और उच्च गुणवत्ता वाला 16 मुखी रुद्राक्ष धारण करने के बाद, लंबे समय से अटका हुआ वह विवाद केवल **90 दिनों के भीतर उनके पक्ष में हल हो गया**।

बेहतर विकल्प और सही आकार

- राहु के लिए सर्वोच्च उन्नयन

राहु के लिए सामान्यतः **8 मुखी रुद्राक्ष (भगवान गणेश)** को उपाय के रूप में पहना जाता है।

लेकिन यदि आप उसके प्रभाव को काफ़ी अधिक बढ़ाना चाहते हैं—खासकर **कानूनी मामलों में विजय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सफलता** के लिए—तो 16 मुखी को 8 मुखी का सर्वोच्च "उन्नयन" माना जाता है।

- आकार और उपलब्धता

बहुत सीमित पैदावार के कारण 16 मुखी एक **दुर्लभ और महँगा रुद्राक्ष** है।

इसकी दुर्लभता के कारण इसके आकार को लेकर वही सामान्य नियम लागू नहीं किए जाते जो 5 मुखी जैसे आसानी से मिलने वाले रुद्राक्षों पर किए जाते हैं।

असली 16 मुखी रुद्राक्ष **20 मिमी से ऊपर** के आकार में मिलना शुरू होते हैं।

यदि आपका बजट अनुमति देता है, तो मैं **24 मिमी से 26 मिमी** आकार का रुद्राक्ष लेने की सलाह देता हूँ, क्योंकि अधिक बायोमास के कारण इसे अधिक प्रभावशाली ऊर्जा परिणाम देने वाला माना जाता है।

17 मुखी: भगवान विश्वकर्मा — अचानक धन-समृद्धि दिलाने वाला रुद्राक्ष

सप्तदशमुखो रुद्राक्षः साक्षात् विश्वकर्मा स्मृतः ।

तस्य धारणमात्रेण सर्वसम्पत्तिमाप्नुयात् ॥

"17 मुखी रुद्राक्ष को स्वयं भगवान विश्वकर्मा का स्वरूप माना जाता है। इसे केवल धारण करने मात्र से व्यक्ति को हर प्रकार की अपार धन-संपत्ति, साधन और समृद्धि प्राप्त होती है।" (*मंत्र महार्णव और तांत्रिक परंपराओं पर आधारित*)

- **अधिष्ठाता देव:** भगवान विश्वकर्मा (ब्रह्मांड के सर्वोच्च शिल्पकार)
- **स्वामी ग्रह:** शनि
- **बीज मंत्र:** ॐ नमः शिवाय

अचानक आर्थिक उन्नति का शक्तिशाली माध्यम

17 मुखी रुद्राक्ष का संबंध **निर्माण और बड़े स्तर पर विस्तार** से माना जाता है। भगवान विश्वकर्मा का स्वरूप होने के कारण इसे बड़े साम्राज्य खड़े करने और नए व्यवसाय को सफलतापूर्वक शुरू करने की दिव्य शक्ति से जोड़ा जाता है।

आध्यात्मिक रूप से यह सीधे **आज्ञा चक्र** को सक्रिय करने वाला माना जाता है, जिससे तेज़ अंतर्ज्ञान और भविष्य की परिस्थितियों को पहले से समझने की क्षमता विकसित होती है।

भौतिक रूप से इसे खासकर **अचानक और अप्रत्याशित धन प्राप्ति** के लिए जाना जाता है। इसे धारण करने वालों के जीवन में कई बार अचानक बड़े आर्थिक लाभ देखने का दावा किया जाता है—जैसे संपत्ति की कीमत में अचानक भारी बढ़ोतरी, शेयरों की कीमत तेज़ी से बढ़ना, अचानक विरासत में संपत्ति मिलना या किसी अन्य अप्रत्याशित माध्यम से बड़ा आर्थिक लाभ होना।

बाज़ार का जाल और सही तरीके से उन्नयन करने का रास्ता

प्राचीन शास्त्रों में धन आकर्षित करने की इसकी क्षमता का विशेष उल्लेख होने के कारण पिछले कुछ वर्षों में **17 मुखी की माँग लगभग चार गुना** बढ़ी है।

शनि से इसका गहरा संबंध होने के कारण भी यह उन लोगों के बीच काफ़ी लोकप्रिय है जो अपनी आर्थिक स्थिति और भाग्य में बड़ा बदलाव चाहते हैं।

लेकिन इतनी अधिक माँग ने बाज़ार में एक समस्या भी पैदा कर दी है।

मैं आपको साफ़ तौर पर सावधान करना चाहता हूँ कि कई रुद्राक्ष विक्रेता ग्राहकों को केवल अपनी बिक्री और मुनाफा बढ़ाने के लिए 17 मुखी खरीदने की सलाह देते हैं।

बिना सही सलाह के सीधे 17 मुखी धारण करने से आपको वे चमत्कारी परिणाम शायद ही मिलें जिनकी आप उम्मीद कर रहे हैं।

असल में 17 मुखी को एक "उन्नयन" रुद्राक्ष के रूप में तैयार माना जाता है। यह उन लोगों के लिए है जो पहले ही शनि से जुड़े कम मुख वाले रुद्राक्ष—जैसे 7, 11 या 14 मुखी—पहनकर अपने आभामंडल को तैयार कर चुके हैं और अब अधिक शक्तिशाली ऊर्जा को संभालने के लिए तैयार हैं।

इन रुद्राक्षों को किस क्रम में और किस तरह धारण करना चाहिए, इसके बारे में आगे के अध्यायों में विस्तार से बताया जाएगा। लेकिन एक बात हमेशा याद रखें—**अधिक मुख वाले रुद्राक्ष किसी अनुभवी और वास्तविक रुद्राक्ष विशेषज्ञ की सही सलाह के आधार पर ही धारण करने चाहिए।**

खुद सोचें: क्या आपको वास्तव में इसकी ज़रूरत है?

विक्रेताओं की बातों या बाज़ार के प्रचार में आकर बिना सोचे-समझे कोई रुद्राक्ष न खरीदें। हमेशा अपनी ज़रूरत और लक्ष्य को ध्यान में रखकर फैसला करें।

- क्या आपके मौजूदा आर्थिक और करियर से जुड़े लक्ष्य एक उत्कृष्ट संग्रहणीय श्रेणी **7 मुखी** या अत्यंत शक्तिशाली **14 मुखी** से पूरे हो सकते हैं? यदि हाँ, तो वही आपके लिए पर्याप्त है।
- **16 मुखी और उससे ऊपर** के रुद्राक्षों की कोई तय कीमत नहीं होती। इनकी कीमत पूरी तरह माँग और उपलब्धता पर निर्भर करती है। किसी रुद्राक्ष की उचित कीमत उस समय उसकी उपलब्धता, आकार और वास्तविक गुणवत्ता को देखकर ही तय की जा सकती है।

संपूर्ण स्वास्थ्य से जुड़ी विशेष बात

(13 मुखी और उससे ऊपर)

आपने शायद ध्यान दिया होगा कि यहाँ मैंने उन विशेष शारीरिक बीमारियों की सूची नहीं दी है जिन्हें 17 मुखी ठीक करता है।

इसका कारण यह है कि **13 मुखी से ऊपर के सभी रुद्राक्षों में संपूर्ण उपचार के गुण माने जाते हैं।**

13 मुखी की सीमा पार करने के बाद इन रुद्राक्षों में इतनी उच्च आवृत्ति वाला परावैद्युत आवेश उत्पन्न होने का दावा किया जाता है कि यह शरीर के सभी चक्रों और विभिन्न शारीरिक प्रणालियों पर एक साथ काम करता है और धारण करने वाले को पूरी तरह रोगमुक्त बनाने की दिशा में कार्य करता है।

इसी कारण इन उच्च मुखी रुद्राक्षों के लिए अलग-अलग बीमारियों का उल्लेख आवश्यक नहीं माना जाता, क्योंकि इनकी उपचार क्षमता को **संपूर्ण और समग्र** माना गया है।

18 मुखी: भूमिदेवी — स्थिरता और अचल संपत्तिका रुद्राक्ष

अष्टादशमुखो रुद्राक्षो भूमिरूपः प्रकीर्तितः ।

तस्य धारणमात्रेण भूमिप्राप्तिर्ध्रुवं भवेत् ॥

"18 मुखी रुद्राक्ष को स्वयं भूमिदेवी (धरती माता) का स्वरूप माना गया है। इसे केवल धारण करने मात्र से भूमि की प्राप्ति, जीवन में स्थिरता और उत्तम शारीरिक स्वास्थ्य प्राप्त होता है।" (मंत्र महार्णव और तांत्रिक परंपराओं पर आधारित)

- अधिष्ठाता देवी: भूमिदेवी (धरती माता)
- स्वामी ग्रह: मंगल
- मंत्र: ॐ नमः शिवाय और महामृत्युंजय मंत्र

उद्योगपतियों का रुद्राक्ष और अचल संपत्तिका चुंबक

जिस तरह धरती अपने ऊपर बनने वाली हर चीज़ को एक मजबूत आधार देती है, उसी तरह 18 मुखी रुद्राक्ष को जीवन में **मजबूती, स्थिरता और ठोस सफलता** प्रदान करने वाला माना जाता है।

इसे खासकर उन उद्योगपतियों और उद्यमियों के लिए सुझाया जाता है जो बड़े स्तर पर कोई नया परियोजना कार्य शुरू कर रहे हों, जहाँ मजबूत नींव बेहद ज़रूरी हो ताकि वह परियोजना बीच में रुके, देर से पूरी हो या असफल न हो।

लेकिन इसका सबसे खास और केंद्रित उपयोग **अचल संपत्तिके** क्षेत्र में माना जाता है।

भूमिदेवी का स्वरूप होने के कारण इसका सीधा संबंध **ज़मीन और संपत्ति से मिलने वाले धन** से माना जाता है।

इसी कारण इसे **संपत्ति डेवलपर्स, अचल संपत्तिनिवेशकों** और ऐसे लोगों के लिए बेहद शक्तिशाली माना जाता है जिनका मुख्य लक्ष्य कई संपत्ति खरीदना और उन्हें बिना कानूनी या आर्थिक रुकावटों के सफलतापूर्वक संभालना हो।

बेहतर शारीरिक स्वास्थ्य और शरीर की मजबूती

18 मुखी का स्वामी **मंगल** है, जिसे रक्त, शारीरिक ऊर्जा और ताकत का ग्रह माना जाता है।

इसी कारण इसके स्वास्थ्य संबंधी प्रभाव मुख्य रूप से शरीर की बुनियादी संरचना और शारीरिक मजबूती से जुड़े माने जाते हैं।

- **हड्डियों, मांसपेशियों और जोड़ों के लिए**

इसे **हड्डियों, मांसपेशियों और जोड़ों** से जुड़ी स्वास्थ्य समस्याओं के खिलाफ शरीर की क्षमता बढ़ाने वाला माना जाता है।

यह शारीरिक सहनशक्ति बढ़ाने में भी सहायक माना जाता है और शरीर की संरचना से जुड़े पुराने दर्द या कमजोरी से उबरने के लिए इसे एक प्रभावशाली रुद्राक्ष माना जाता है।

- **गर्भावस्था में सुरक्षा**

महिलाओं के स्वास्थ्य के संदर्भ में 18 मुखी का एक विशेष सुरक्षात्मक प्रभाव माना जाता है।

गर्भवती महिलाओं को गर्भावस्था से जुड़ी जटिलताओं से बचाने के लिए इसे विशेष रूप से उपयोगी माना गया है। खास तौर पर इसे **समय से पहले प्रसव** से बचाने वाला ऊर्जा कवच माना जाता है, ताकि शिशु गर्भ में पूरा समय स्वस्थ रूप से विकसित हो सके।

19 मुखी: भगवान विष्णु — राजनीति और व्यापार में सफलता का शक्तिशाली रुद्राक्ष

एकोनविंशतिमुखो रुद्राक्षो विष्णुरूपकः ।

तस्य धारणमात्रेण सर्वकामानवाप्नुयात् ॥

"19 मुखी रुद्राक्ष स्वयं भगवान विष्णु का स्वरूप है। इसे केवल धारण करने मात्र से व्यक्ति की सभी सांसारिक और आध्यात्मिक इच्छाएँ सहज रूप से पूरी होती हैं।" (पारंपरिक तांत्रिक ग्रंथों और मंत्र महार्णव पर आधारित)

- **अधिष्ठाता देव:** भगवान विष्णु (सृष्टि के पालनकर्ता)
- **स्वामी ग्रह:** सूर्य
- **मंत्र:** ॐ नमः शिवाय और महामृत्युंजय मंत्र

व्यापारिक समझ को तेज़ करने वाला रुद्राक्ष

19 मुखी भगवान विष्णु का स्वरूप माना जाता है, जो सृष्टि के पालन और संतुलन के देवता हैं। इसी कारण इस रुद्राक्ष को बड़ी सफलता और सभी सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति से जोड़ा जाता है।

बड़े स्तर पर काम करने वाले **व्यावसायिक संस्थानों के अग्रणी और उद्यमियों** के लिए इसे व्यापारिक समझ और सही फैसले लेने की क्षमता को बेहद तेज़ करने वाला माना जाता है।

यह शरीर के सभी ऊर्जा चक्रों को व्यवस्थित रूप से संतुलित करता है, जिससे व्यक्ति बड़े और अधिक जोखिम वाली परियोजनाओं को भी बिना तनाव के संभाल सके।

इसके अलावा, यह धारण करने वाले के चारों ओर एक मजबूत **ऊर्जा कवच** बनाने वाला माना जाता है, जो सौभाग्य को बढ़ाता है और प्रतिस्पर्धियों की ओर से आने वाली **बुरी नज़र या सफलता से होने वाली ईर्ष्या** के प्रभाव को दूर करता है।

राजनीति के लिए शक्तिशाली रुद्राक्ष

सूर्य से गहरे संबंध के कारण 19 मुखी को **अधिकार, करिश्मा और जनता को अपनी ओर आकर्षित करने की क्षमता** बढ़ाने वाले सबसे शक्तिशाली रुद्राक्षों में से एक माना जाता है।

जो व्यक्ति राजनीति में आगे बढ़ना और अपने क्षेत्र में एक मजबूत स्थान बनाना चाहता है, उसके लिए इसे विशेष रूप से उपयोगी माना जाता है।

यदि सत्ता के ऊँचे स्तर पर देखें, तो ऐसा दावा किया जाता है कि लगभग सभी बड़े राजनेताओं, विधायकों, सांसदों और मंत्रिमंडल मंत्रियों ने अपने करियर के किसी महत्वपूर्ण पड़ाव पर 19 मुखी रुद्राक्ष धारण किया है।

यह धारण करने वाले को सूर्य जैसे गुण प्रदान करने वाला माना जाता है—**तेज, अडिग नेतृत्व क्षमता, जनता को दिशा दिखाने की शक्ति और अपने सहयोगियों व समर्थकों को अपने साथ जोड़े रखने का आकर्षण।**

इसी कारण किसी उभरते हुए राजनेता या कड़े राजनीतिक विरोध का सामना कर रहे नेता के लिए 19 मुखी की सलाह देना बेहद प्रभावशाली रणनीति और उनकी सफलता के लिए लगभग अनिवार्य माना जाता है।

अनाहत चक्र और सूर्य ऊर्जा का अगला स्तर

ऊर्जा के स्तर पर 19 मुखी का सीधा और शक्तिशाली संबंध **अनाहत चक्र** से माना जाता है।

यह भावनात्मक बुद्धिमत्ता और दृढ़ इच्छाशक्ति के बीच संतुलन बनाने में मदद करता है, जिससे व्यक्ति की इच्छाएँ आसानी से वास्तविकता में बदल सकें।

• उन्नयन करने का सही तरीका

19 मुखी की सूर्य ऊर्जा बेहद तीव्र मानी जाती है, इसलिए इसे सीधे धारण करने के बजाय एक **उन्नयन** के रूप में अपनाना बेहतर माना जाता है।

आमतौर पर शुरुआत **1 मुखी या 12 मुखी** से करनी चाहिए, ताकि शरीर और आभामंडल पहले सूर्य तथा नेतृत्व से जुड़ी ऊर्जा को ग्रहण करके उसके साथ संतुलित हो सकें।

जब व्यक्ति का आभामंडल उस ऊर्जा के अनुकूल हो जाए, तब 19 मुखी की ओर बढ़ने से इसकी अत्यधिक शक्तिशाली और जीवन में बड़े बदलाव लाने वाली ऊर्जा को सुरक्षित रूप से संभालने और उसका पूरा लाभ लेने में मदद मिलती है।

20 मुखी: भगवान ब्रह्मा — त्रिदेव और परम शांति का रुद्राक्ष

विंशतिर्वाक्तरुद्राक्षं साक्षाद्ब्रह्मा प्रकीर्तितम् ।

तस्य धारणमात्रेण शान्तिः श्रीरपि वर्धते ॥

"20 मुखी रुद्राक्ष को स्वयं भगवान ब्रह्मा का स्वरूप माना गया है। इसे केवल धारण करने मात्र से व्यक्ति को गहरी आध्यात्मिक शांति प्राप्त होती है और उसकी समृद्धि लगातार बढ़ती है।" (पद्म पुराण और तांत्रिक परंपराओं से लिया गया)

- **अधिष्ठाता देव:** भगवान ब्रह्मा (इसमें त्रिदेव, नौ ग्रहों और दस दिक्पालों की ऊर्जा भी समाहित मानी जाती है।)
- **स्वामी ग्रह:** चंद्रमा
- **मंत्र:** ॐ नमः शिवाय और महामृत्युंजय मंत्र

ब्रह्मांडीय शक्तियों का अद्भुत संगम

20 मुखी बेहद दुर्लभ और अत्यंत शक्तिशाली रुद्राक्ष माना जाता है।

यह केवल सृष्टि के रचयिता भगवान ब्रह्मा का ही प्रतिनिधित्व नहीं करता, बल्कि माना जाता है कि इसके बीस भागों में **त्रिदेव—ब्रह्मा, विष्णु और शिव—तीनों की संयुक्त शक्तियाँ** बेहद प्रबल रूप में मौजूद होती हैं।

इसके अलावा, इसे सभी **नौ ग्रहों (नवग्रह)** और **दस दिक्पालों (दसों दिशाओं के रक्षक देवताओं)** का आशीर्वाद प्राप्त माना जाता है।

सभी दिशाओं और ब्रह्मांडीय शक्तियों से जुड़े होने के कारण इसे ऐसा रुद्राक्ष माना जाता है जो **पीढ़ियों तक चलने वाली धन-संपत्ति** प्रदान कर सकता है और व्यक्ति को इतनी गहरी और अडिग आध्यात्मिक शांति देता है, जिसे अधिकांश लोग अपने पूरे जीवन में भी प्राप्त नहीं कर पाते।

मन पर नियंत्रण और अवसाद से राहत

20 मुखी का स्वामी **चंद्रमा** है, जिसे मन, भावनाओं और अवचेतन मन का कारक माना जाता है। इसी कारण इसे धारण करने वाले को अपने विचारों पर पूर्ण नियंत्रण प्रदान करने वाला माना जाता है।

यदि किसी व्यक्ति की जन्म कुंडली में चंद्रमा कमजोर हो या वह लंबे समय से **तनाव, चिंता या गहरे अवसाद** से जूझ रहा हो, तो 20 मुखी को एक बेहद शक्तिशाली उपाय माना जाता है।

मैं अक्सर लंबे समय से मानसिक बोझ और भारीपन के कारण आगे न बढ़ पाने वाले लोगों को यह रुद्राक्ष सुझाता हूँ। ऐसा माना जाता है कि असली 20 मुखी धारण करने के बाद व्यक्ति की मानसिक ऊर्जा में लगभग तुरंत बदलाव आता है, मन का धुंधलापन दूर होता है और उसकी जगह स्पष्टता और शांति आने लगती है।

बाज़ार की सच्चाई: बेहद कम उपलब्धता और एक्स-रे की चुनौती

इस रुद्राक्ष की दुर्लभता को समझना बेहद ज़रूरी है।

नेपाल में किसी भी एक फसल के वर्ष में **20 से भी कम असली 20 मुखी रुद्राक्ष** प्राप्त होते हैं। इनमें भी **10 से कम** ऐसे होते हैं जिनका आकार, बनावट और गुणवत्ता वास्तव में धारण करने लायक उच्च स्तर की होती है।

माँग और उपलब्धता के बीच इतना बड़ा अंतर होने के कारण 20 मुखी में छेड़छाड़ और नकली रुद्राक्ष बेचने का खतरा बहुत अधिक रहता है।

बेईमान विक्रेता अक्सर **16 या 17 मुखी** रुद्राक्षों पर अतिरिक्त रेखाएँ काटकर उन्हें 20 या 21 मुखी के रूप में बेचने की कोशिश करते हैं।

- **सीटी स्कैन क्यों ज़रूरी हो सकता है?**

20 मुखी के अंदर मौजूद **20 प्राकृतिक कक्ष (बीज/चेंबर्स)** कई बार इतने छोटे और एक-दूसरे के इतने करीब होते हैं कि सामान्य डिजिटल **एक्स-रे** उन्हें साफ़-साफ़ अलग करके नहीं दिखा पाता।

ऐसी स्थिति में 20 मुखी की सही पहचान के लिए **एक्स-रे** के बजाय रुद्राक्ष का पूरा सीटी स्कैन करवाना पड़ सकता है, जिससे उसके अंदर की बनावट और हर कक्ष को सही तरीके से देखा जा सके।

इसलिए 20 मुखी खरीदते समय एक **बेहद भरोसेमंद और अनुभवी विक्रेता** से खरीदना अनिवार्य माना जाता है।

धारण करने से पहले की तैयारी

20 मुखी हर किसी के लिए नहीं है और इसे बिना तैयारी के अचानक धारण करने की सलाह नहीं दी जाती।

माना जाता है कि इससे निकलने वाली ऊर्जा इतनी अधिक होती है कि पहले से तैयार न हुए आभामंडल के लिए इसे संभालना मुश्किल हो सकता है।

इसे सुरक्षित रूप से धारण करने और इसके लाभ प्राप्त करने के लिए शरीर के **जैव-विद्युत क्षेत्र** को पहले इसके अनुकूल बनाना आवश्यक माना जाता है।

इसका अर्थ है कि व्यक्ति को पहले **14, 16 या 17 मुखी** जैसे अन्य उच्च मुखी रुद्राक्ष पहनने का अनुभव होना चाहिए, ताकि उसका तंत्रिका तंत्र धीरे-धीरे इस स्तर की ऊर्जा के लिए तैयार हो सके।

जब शरीर इस ऊर्जा के लिए पूरी तरह तैयार हो जाए, तभी वह 20 मुखी में मानी जाने वाली **त्रिदेवों की अत्यंत शक्तिशाली संयुक्त ऊर्जा** को बिना किसी ऊर्जा संबंधी टकराव के ग्रहण कर सकता है।

21 मुखी: भगवान कुबेर — धन की रक्षा और पीढ़ियों की समृद्धि का रुद्राक्ष

एकविंशतिवक्त्रस्तु कुबेरः परिकीर्तितः ।

तस्य धारणमात्रेण निधिः शो भवेन्नरः ॥

"21 मुखी रुद्राक्ष को स्वयं भगवान कुबेर का स्वरूप माना गया है। इसे केवल धारण करने मात्र से व्यक्ति अपार धन और अनंत संपत्ति का स्वामी बनता है।" (मंत्र महार्णव और तांत्रिक परंपराओं से लिया गया)

- **अधिष्ठाता देव:** भगवान कुबेर (देवताओं के कोषाध्यक्ष)
- **स्वामी ग्रह:** शुक्र
- **मंत्र:** ॐ नमः शिवाय और महामृत्युंजय मंत्र

धन बढ़ाने वाला नहीं, धन की रक्षा करने वाला

21 मुखी को लेकर एक बहुत बड़ी गलतफहमी है, जिसे समझना ज़रूरी है।

यदि कोई व्यक्ति अभी धन कमाने की शुरुआत कर रहा है और नई संपत्ति बनाना चाहता है, तो 21 मुखी उसके लिए सही रुद्राक्ष नहीं है। ऐसे व्यक्ति के लिए **7-, 14- या 17-मुखी** अधिक उपयुक्त माने जाते हैं।

भगवान कुबेर देवताओं के **कोषाध्यक्ष** हैं, धन के निर्माता नहीं। इसलिए 21 मुखी का मुख्य और विशेष उद्देश्य पहले से कमाए गए धन और संपत्ति को **सुरक्षित रखना** माना जाता है।

यह एक अभेद्य तिजोरी की तरह काम करने वाला माना जाता है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि आपके द्वारा बनाए गए बड़े व्यापारिक साम्राज्य, संपत्तियाँ और उपलब्ध धन गलत निवेश, बाज़ार में भारी गिरावट या कानूनी विवादों के कारण नष्ट न हों।

साथ ही, शुक्र ग्रह से जुड़े होने के कारण इसे जीवन की सभी सांसारिक सुख-सुविधाएँ और ऐश्वर्य प्रदान करने वाला भी माना जाता है।

इसमें मौजूद **21 प्राकृतिक कक्षों** के कारण इससे होने वाला ऊर्जा प्रवाह बेहद अधिक और जटिल माना जाता है। इसी वजह से इसे सबसे शक्तिशाली रुद्राक्षों में से एक माना गया है।

पीढ़ियों तक चलने वाली समृद्धि

असली 21 मुखी धारण करने वाले बहुत से लोग दूसरी या तीसरी पीढ़ी के करोड़पति होते हैं, जिन्हें यह रुद्राक्ष अपने पिता या दादा से विरासत में मिला होता है।

ऐसा माना जाता है कि इसमें एक विशेष **पीढ़ीगत ऊर्जा** होती है, जो यह सुनिश्चित करती है कि आने वाली हर पीढ़ी पिछली पीढ़ी से अधिक समृद्ध होती जाए।

यदि किसी व्यक्ति को अपने जीवन में असली 21 मुखी प्राप्त हो जाए, तो उसे दुनिया के सबसे भाग्यशाली लोगों में से एक माना जाता है।

यह केवल एक रुद्राक्ष नहीं, बल्कि ऐसी **पारिवारिक विरासत** माना जाता है जो परिवार की आर्थिक समृद्धि को आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित रखती है।

बाज़ार की सच्चाई: 21 मुखी के नाम पर नकली रुद्राक्ष

1 मुखी और 14 मुखी के बाद 21 मुखी को सबसे अधिक मांग वाले रुद्राक्षों में से एक माना जाता है। लेकिन इसकी वास्तविक उपलब्धता और बाज़ार में दिखाई देने वाली संख्या के बीच बहुत बड़ा अंतर है।

- **वास्तविक पैदावार**

नेपाल में एक सामान्य फसल के मौसम में **20 से भी कम असली 21 मुखी रुद्राक्ष** प्राप्त होते हैं।

इनमें से भी बहुत कम रुद्राक्ष ऐसे होते हैं जिनका आकार और बनावट धारण करने के लिए सही और उच्च गुणवत्ता वाली हो।

- **नकली रुद्राक्षों का बाज़ार**

जहाँ वास्तविक पैदावार 20 से भी कम होती है, वहीं हर सीज़न बाज़ार में **10,000 से अधिक 21 मुखी रुद्राक्ष** घूमते दिखाई देते हैं।

आखिर ये आते कहाँ से हैं?

इनमें बड़ी संख्या में छेड़छाड़ किए हुए नकली रुद्राक्ष होते हैं। कई पूरी तरह लकड़ी को काटकर बनाए जाते हैं, कुछ कम मुख वाले रुद्राक्षों पर कृत्रिम रेखाएँ बनाकर तैयार किए जाते हैं और कुछ इंडोनेशियन रुद्राक्षों को उच्च नेपाली रुद्राक्ष बताकर बेच दिया जाता है।

असली 21 मुखी आमतौर पर बेहद सीमित और उच्च स्तर के भरोसेमंद नेटवर्क के भीतर ही उपलब्ध होते हैं।

खरीदारों के लिए चेतावनी

सिर्फ़ गूगल पर 21 मुखी खोजकर किसी भी विक्रेता को फोन करना शुरू न करें। ऐसा करने पर ठगी होने का खतरा बेहद अधिक है।

मैंने कई संदिग्ध ऑनलाइन विक्रेताओं को केवल **₹20,000 में "1 से 21 मुखी माला"** बेचते देखा है।

लोग इसे कोई असाधारण सौदा समझकर खरीद लेते हैं। बाद में जब वे हमारे यहाँ विशेष **रुद्राक्ष कोर्स®** करते हैं, तब उन्हें पता चलता है कि उनकी पूरी माला ही नकली है।

सही तरीका

सिर्फ़ इसलिए 21 मुखी के पीछे न भागें क्योंकि आपने इसके चमत्कारी प्रभावों की कहानियाँ सुनी हैं।

इससे बेहतर है कि अपनी ज़रूरत, उद्देश्य और मौजूदा बजट को ध्यान में रखते हुए अच्छी गुणवत्ता वाले, असली रुद्राक्ष चुनें—जैसे **उच्च 7 मुखी या 14 मुखी**—जो वास्तव में आपके लक्ष्यों के अनुकूल हों।

त्रिजुटी: त्रिदेव का रुद्राक्ष — ब्रह्मा, विष्णु और महेश

ब्रह्मा विष्णुर्महेशश्च त्रयस्तत्र व्यवस्थिताः ।

तस्मात् तद् धारयेद् यत्नात् सर्वपापप्रणाशनम् ॥

"ब्रह्मा, विष्णु और महेश—तीनों इसमें एक साथ निवास करते हैं। इसलिए इसे श्रद्धापूर्वक धारण करना चाहिए, क्योंकि यह सभी शारीरिक और कर्म संबंधी बाधाओं को नष्ट करने वाला माना जाता है।"

स्रोत संदर्भ: मुख्य पुराणों में प्राकृतिक रूप से बनने वाली ऐसी दुर्लभ आकृतियों को बहुत सीमित रखा गया था, इसलिए "त्रिजुटी" शब्द का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता। हालाँकि, कात्यायनी तंत्र परंपरा सहित तांत्रिक और आगमिक परंपराओं के इस श्लोक का प्रयोग ऐसे रुद्राक्ष को सिद्ध करने के लिए किया जाता है जो त्रिमूर्ति की सर्वोच्च ऊर्जा का स्वरूप माना जाता है।

- **अधिष्ठाता देव:** त्रिदेव — भगवान ब्रह्मा, भगवान विष्णु और भगवान शिव
- **स्वामी ग्रह:** सभी नौ ग्रहों (नवग्रह) को एक साथ संतुलित करने वाला
- **मंत्र:** ॐ नमः शिवाय और महामृत्युंजय मंत्र

प्रकृति की एक बेहद दुर्लभ रचना

जिस तरह गौरीशंकर में दो अलग-अलग रुद्राक्ष प्राकृतिक रूप से आपस में जुड़े होते हैं, उसी तरह त्रिजुटी प्रकृति की एक बेहद दुर्लभ घटना है, जिसमें तीन अलग-अलग रुद्राक्ष बढ़ते समय पेड़ पर ही प्राकृतिक रूप से आपस में जुड़ जाते हैं।

यह देखने में और ऊर्जा के स्तर पर त्रिदेव का प्रतिनिधित्व करता है—

- ब्रह्मा — सृजन
- विष्णु — पालन
- शिव — परिवर्तन

इसी कारण अनुभवी साधक और उच्च स्तर के नेतृत्व से जुड़े लोग इसे 20 मुख्य रुद्राक्ष के सर्वोत्तम प्राकृतिक विकल्पों में से एक मानकर धारण करते हैं।

माना जाता है कि यह त्रिदेव की वही ऊर्जा प्रदान करता है और उस अत्यंत शक्तिशाली ऊर्जा तक पहुँचने का थोड़ा अधिक सुलभ विकल्प है—हालाँकि यह स्वयं भी बेहद दुर्लभ और खास रुद्राक्ष है।

मुखी का सिद्धांत और ऊर्जा के गुण

त्रिजुटी केवल त्रिदेव की शक्ति पर ही काम नहीं करती। इसकी विशेष ऊर्जा इसमें मौजूद **कुल मुखों की संख्या** के अनुसार बदलती है।

गौरीशंकर की तरह ही इसमें भी सभी जुड़े हुए रुद्राक्षों की रेखाओं यानी मुखों की **कुल संख्या** गिनी जाती है। यही संख्या इसकी विशेष ग्रह ऊर्जा को निर्धारित करती है।

इसलिए त्रिजुटी के तीनों जुड़े हुए रुद्राक्षों के मुखों को जोड़कर कुल मुखी संख्या निकाली जाती है।

- तीन रुद्राक्षों के एक साथ जुड़े होने के कारण त्रिजुटी सामान्यतः **14 मुखी या उससे ऊपर** से मिलना शुरू होती है।
- यदि किसी त्रिजुटी में कुल **17 मुख** हैं, तो उसमें त्रिदेव की ऊर्जा के साथ **कात्यायनी देवी से जुड़ी धन उत्पन्न करने वाली शक्ति और शनि की ऊर्जा** भी मानी जाती है।
- यदि किसी त्रिजुटी में कुल **19 मुख** हैं, तो उसमें त्रिदेव की ऊर्जा के साथ **भगवान विष्णु से जुड़ी सूर्य की सर्वोच्च नेतृत्व और अधिकार वाली ऊर्जा** भी मानी जाती है।

इसे तीनों **गुणों—सत्त्व, रजस और तमस—का सर्वोच्च संतुलन बनाने वाला** भी माना जाता है।

यह व्यक्ति के मन, शरीर और आध्यात्मिक चेतना के बीच संतुलन स्थापित करता है, जिससे वह वास्तविक जीवन में बहुत बड़ी परियोजनाओं और जिम्मेदारियों को संभाल सके और साथ ही अपनी आंतरिक शांति भी बनाए रखे।

बाज़ार की सच्चाई और कीमत

त्रिजुटी की कोई एक तय कीमत नहीं होती। इसकी कीमत मुख्य रूप से उस विशेष त्रिजुटी में मौजूद **कुल मुखों की संख्या** के आधार पर तय होती है।

चूँकि ये सामान्यतः **16 मुखी से शुरू होती हैं**, इसलिए शुरुआत से ही इनकी कीमत उच्च श्रेणी में होती है।

एक 16 मुखी त्रिजुटी की अपनी शुरुआती कीमत होगी, लेकिन जैसे-जैसे कुल मुखों की संख्या **19, 20 या 21 मुखी** तक पहुँचती है, इसकी कीमत कई गुना बढ़ सकती है।

इसका कारण दो तरह की दुर्लभता का एक साथ मिलना है—पहला, तीन रुद्राक्षों का प्राकृतिक रूप से आपस में जुड़ना और दूसरा, उनका अधिक मुखी होना।

संपूर्ण व्यक्तित्व और नेतृत्व का रुद्राक्ष

त्रिजुटी को व्यक्तित्व के सभी पहलुओं को एक साथ संतुलित करने का सर्वोच्च प्रतीक माना जाता है।

यह एक **ऊर्जा के आधार** की तरह काम करने वाला माना जाता है, जो बेहद अस्थिर और कठिन परिस्थितियों में भी व्यक्ति को अपने मन और आसपास की परिस्थितियों पर नियंत्रण बनाए रखने में मदद करता है।

उद्योगपतियों और उच्च स्तर के अधिकारियों के लिए इसे प्रभावशाली नेतृत्व, कठिन परिस्थितियों में भी पूरी तरह शांत रहने और जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए एक बेजोड़ रुद्राक्ष माना जाता है।

अध्याय 8:

एक शक्तिशाली माला बनाने का सही तरीका

रुद्राक्षं कण्ठदेशे तु यः पुमान् धारयेद् भक्त्या ।
स कोटिकुलमुद्धृत्य शिवलोके महीयते ॥

"जो व्यक्ति श्रद्धा के साथ अपने गले में रुद्राक्ष धारण करता है, वह अपने करोड़ों पूर्वजों का उद्धार करता है और शिवलोक में सम्मान प्राप्त करता है।" (शिव पुराण)

प्राचीन ग्रंथों—उत्तर-मध्यकालीन उपनिषदों से लेकर विस्तृत पुराणों तक—में केवल रुद्राक्ष की उत्पत्ति का ही वर्णन नहीं मिलता, बल्कि इसे **किस तरह और कितनी संख्या में पहनना चाहिए**, इसका भी बहुत बारीकी से उल्लेख किया गया है।

बृहज्जाबाल उपनिषद के अनुसार, रुद्राक्ष में वही आध्यात्मिक ऊर्जा मानी जाती है जो **कालाग्नि रुद्र के आँसुओं** में थी। वहीं **अक्षमालिका उपनिषद** में विस्तार से बताया गया है कि इन रुद्राक्षों को विशेष धातुओं और निश्चित ध्रुवीयता के अनुसार किस तरह पिरोया जाना चाहिए।

रुद्राक्ष चुनने और पहनने के मुख्य नियम

रुद्राक्षों की संख्या समझने से पहले कुछ बुनियादी नियम जानना ज़रूरी है, ताकि उनसे अधिकतम लाभ लिया जा सके।

- **उत्पत्ति का महत्व**

असली **नेपाली रुद्राक्ष** इंडोनेशियन (जावा) रुद्राक्ष की तुलना में हमेशा अधिक शक्तिशाली, तेज़ और स्पष्ट परिणाम देने वाला माना जाता है।

- **संख्या से ज़्यादा गुणवत्ता**

मैं हमेशा अधिक संख्या में सामान्य रुद्राक्ष खरीदने के बजाय अच्छी गुणवत्ता वाले, उत्कृष्ट संग्रहणीय श्रेणी रुद्राक्ष में निवेश करने की सलाह देता हूँ।

- **पहनने की जगह और त्वचा से संपर्क**

रुद्राक्ष शरीर के अलग-अलग हिस्सों पर पहना जा सकता है, लेकिन इसे गले में पहनना सबसे अधिक लाभकारी माना जाता है।

गले में पहनने पर रुद्राक्ष लगातार त्वचा से हल्का रगड़ खाता रहता है, जिससे तंत्रिका तंत्र को निरंतर उत्तेजना मिलती है। साथ ही, रुद्राक्ष अनाहत चक्र के पास रहता है, जिससे व्यक्ति के भावनात्मक और ऊर्जा केंद्र को स्थिरता मिलने की मान्यता है।

सही कारीगरी और ऊर्जा का प्रवाह

इन शक्तिशाली रुद्राक्ष संयोजनों को मजबूत और सुरक्षित रखने के लिए उन्हें अच्छी कारीगरी के साथ **शुद्ध चाँदी की जड़ाई** में लगवाना एक बेहतर मानक माना जाता है।

चाँदी एक बेहतरीन **चालक** की तरह काम करती है और रुद्राक्ष की परावैद्युत ऊर्जा को सीधे त्वचा तक पहुँचाने में मदद करती है।

इन रुद्राक्ष संयोजनों को किन-किन धागों और धातुओं में पिरोकर पहना जा सकता है, इसके बारे में अगले अध्याय में विस्तार से बताया जाएगा।

पहनने वाली माला में कितने रुद्राक्ष होने चाहिए?

आपके उद्देश्य, रोज़मर्रा के पहनावे और मंत्र-जप के अनुसार अलग-अलग संख्या में रुद्राक्षों की माला का उपयोग किया जा सकता है।

- **30 या 32 रुद्राक्ष**

विशेष रूप से धन, संपत्ति और आर्थिक समृद्धि आकर्षित करने के लिए।

- **100 रुद्राक्ष**

बड़े आध्यात्मिक अनुष्ठानों के लिए, खासकर हज़ारों **महापुरश्चरणों**, यानी उन्नत मंत्र साधना के लिए।

- **102 रुद्राक्ष**

तेज़ी से **आध्यात्मिक पुण्य और उच्च गूढ़ ज्ञान** प्राप्त करने के लिए।

- **104 रुद्राक्ष**

मजबूत शारीरिक स्वास्थ्य, रोग प्रतिरोधक क्षमता और सहनशक्ति बढ़ाने के उद्देश्य से।

- **107 रुद्राक्ष**

मोक्ष (अंतिम मुक्ति/निर्वाण) और सांसारिक मोह से पूर्ण विरक्ति चाहने वालों के लिए।

- **108 रुद्राक्ष**

इसे सबसे महत्वपूर्ण और संपूर्ण संख्या माना जाता है। इसका उद्देश्य जीवन के चार पुरुषार्थ—

धर्म — सही और धार्मिक जीवन

अर्थ — धन और समृद्धि

काम — इच्छाएँ

मोक्ष — मुक्ति

— के बीच संतुलन स्थापित करना है।

व्यावहारिक तरीका: कीमत, आकार और शास्त्रों के बीच संतुलन

शास्त्रों में अधिक से अधिक रुद्राक्ष पहनने की सलाह दी गई है, खासकर **54 या 108** जैसी शुभ संख्याओं में। सामान्य रूप से **9 के गुणकों** में रुद्राक्ष पहनना भी शुभ माना जाता है।

लेकिन यहाँ एक व्यावहारिक सवाल उठता है।

अगर नेपाली रुद्राक्ष अधिक शक्तिशाली माने जाते हैं, लेकिन उनका आकार भी बड़ा होता है और कीमत भी काफ़ी अधिक होती है, तो एक आम व्यक्ति **54 या 108 नेपाली रुद्राक्षों की पूरी माला** कैसे पहन सकता है?

इसके लिए विशेषज्ञ एक बेहद व्यावहारिक तरीका अपनाते हैं।

आपको 108 नेपाली रुद्राक्ष खरीदने की आवश्यकता नहीं है।

इसके बजाय कुछ उच्च नेपाली रुद्राक्ष **विषम संख्या में—कम से कम 3, 5 या 7—**चुनें। ये आपकी माला के मुख्य ऊर्जा केंद्र की तरह काम करेंगे।

इसके बाद बाकी संख्या को **5 मुखीइंडोनेशियन रुद्राक्षों** से पूरा किया जा सकता है।

इनइंडोनेशियन रुद्राक्षों को चुनते समय खास तौर पर अच्छी गुणवत्ता वाले **"पाथरी माला"** के रुद्राक्ष लेने चाहिए।

इंडोनेशियन पाथरी रुद्राक्ष आकार में छोटे होते हैं, अधिक संख्या में आसानी से लगाए जा सकते हैं और उनकी सतह पर गहरी एवं साफ़ प्राकृतिक रेखाएँ दिखाई देती हैं।

इस तरह विषम संख्या में शक्तिशाली नेपाली रुद्राक्षों को इंडोनेशियन पाथरी रुद्राक्षों के छोटे आकार, सुंदरता और कम कीमत के साथ मिलाकर माला बनाई जा सकती है।

इससे आप अपनी गर्दन पर बहुत अधिक वजन डाले बिना और बजट को बहुत ज़्यादा बढ़ाए बिना शास्त्रों के अनुसार आवश्यक संख्या पूरी कर सकते हैं। इसका उदाहरण अगले अध्याय में दिए गए चित्र में दिखाया गया है।

108 का ब्रह्मांडीय रहस्य और 9 की शक्ति

सभी वैदिक परंपराओं में **108** को इतना शुभ क्यों माना जाता है?

इसके पीछे खगोल विज्ञान, शरीर विज्ञान और गणित का एक गहरा संबंध बताया गया है।

- **खगोलीय गणना**

ब्रह्मांड को **27 नक्षत्रों** में बाँटा गया है।

हर नक्षत्र के **4 अलग-अलग चरण** होते हैं।

इसलिए: $27 \times 4 = 108$

इस तरह 108 को पूरे ब्रह्मांडीय ढाँचे का प्रतिनिधित्व करने वाली संख्या माना जाता है।

- **शरीर का ऊर्जा तंत्र**

मानव शरीर में ठीक **108 महत्वपूर्ण संवेदनशील ऊर्जा केंद्र (मर्म)** माने गए हैं।

इसके अलावा, प्राचीन आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में ठीक **108 प्रमुख मानसिक और मनोवैज्ञानिक रोगों** का उल्लेख होने का दावा किया जाता है।

- **संस्कृत की गणना**

मूल पाठ के अनुसार, संस्कृत वर्णमाला में **50 व्यंजन और 7 स्वर** माने गए हैं।

इन्हें आगे की दिशा में **57**, पीछे की दिशा में **50**, और बीच में एक केंद्रीय ध्वनि '**क्ष**' (**1**) के साथ जोड़ने पर गणना इस प्रकार बताई गई है:

$50 + 7 + 50 + 1 = 108$

इस प्रकार यह संख्या 108 बनती है।

अगर 108 रुद्राक्ष नहीं पहन सकते तो?

यदि आपके लिए ठीक **108 रुद्राक्षों** की माला पहनना संभव नहीं है, तो कोशिश करें कि आपकी माला में रुद्राक्षों की संख्या **9 के गुणक** में हो।

9 को एक अत्यंत शक्तिशाली ब्रह्मांडीय संख्या माना जाता है। इसे पूर्ण निर्माण और पूर्ण विनाश—दोनों की प्रबल शक्ति से जोड़ा जाता है और माना जाता है कि यह व्यक्ति को सीधे दिव्य ऊर्जा से जोड़ती है।

इसलिए यदि 108 रुद्राक्ष पहनना संभव न हो, तो आप 9 के गुणकों में दूसरी संख्याएँ चुन सकते हैं, जैसे: **54, 63, 72, 81 आदि।**

अध्याय 9:

माला की बनावट — पिरोने का तरीका, धातुएँ और पवित्र सामग्री

सौवर्णं राजतं ताम्रं तन्मुखे मुखं तत्पुच्छे पुच्छं तद्विराटनिक्रमेण योजयेत्
"भगवान् गुह (कार्तिकेय) भगवान् ब्रह्मा को अक्षमाला बनाने की सही
विधि बताते हैं। इसमें 'मुख' से मतलब रुद्राक्ष के उस चौड़े या ऊपरी
हिस्से से है, जहाँ वह पेड़ की डाली से जुड़ा होता है, और 'पुच्छ' उसके
नीचे के नुकीले हिस्से या छोटे छेद को कहा गया है। रुद्राक्षों को 'मुख
से मुख और पुच्छ से पुच्छ' के क्रम में पिरोना शास्त्रों के अनुसार सही
विधि मानी गई है।" (अक्षमालिका उपनिषद्, श्लोक 2)

पिछले अध्याय में हमने समझा कि माला में रुद्राक्षों की संख्या का क्या महत्व
है। अब यह समझना ज़रूरी है कि **माला वास्तव में बनाई कैसे जानी
चाहिए।**

आपके पास दुनिया का सबसे अच्छी गुणवत्ता वाला और सबसे शक्तिशाली
नेपाली रुद्राक्ष हो सकता है, लेकिन यदि उसे गलत तरीके से पिरोया गया है,
तो उसका प्रभाव काफ़ी कम हो सकता है या पूरी तरह समाप्त भी हो सकता
है।

इस अध्याय में हम रुद्राक्ष पिरोने की प्राचीन विधि, उसके साथ इस्तेमाल होने
वाली अलग-अलग सामग्रियों के पीछे का विज्ञान और सोना, चाँदी एवं ताँबे
जैसी धातुओं के इस्तेमाल की वास्तविकता को समझेंगे।

रुद्राक्ष पिरोने का सही क्रम और तरीका: चुंबकीय परिपथ

श्रीमद् देवी भागवत और अक्षमालिका उपनिषद में बताई गई विधि के अनुसार रुद्राक्षों को एक निश्चित क्रम में **मुख से मुख और पुच्छ से पुच्छ** मिलाकर पहनना चाहिए।

इसे समझने के लिए पहले रुद्राक्ष की प्राकृतिक बनावट को समझना ज़रूरी है।

- **मुख**

यह रुद्राक्ष का ऊपरी हिस्सा होता है, जहाँ वह प्राकृतिक रूप से पेड़ की डाली से जुड़ा हुआ था।

- **पुच्छ**

यह रुद्राक्ष का निचला और थोड़ा नुकीला हिस्सा होता है।

- **बीच की प्राकृतिक नली**

रुद्राक्ष के अंदर एक प्राकृतिक खोखला रास्ता होता है, जो मुख से लेकर पुच्छ तक जाता है।

इस क्रम के पीछे का विज्ञान

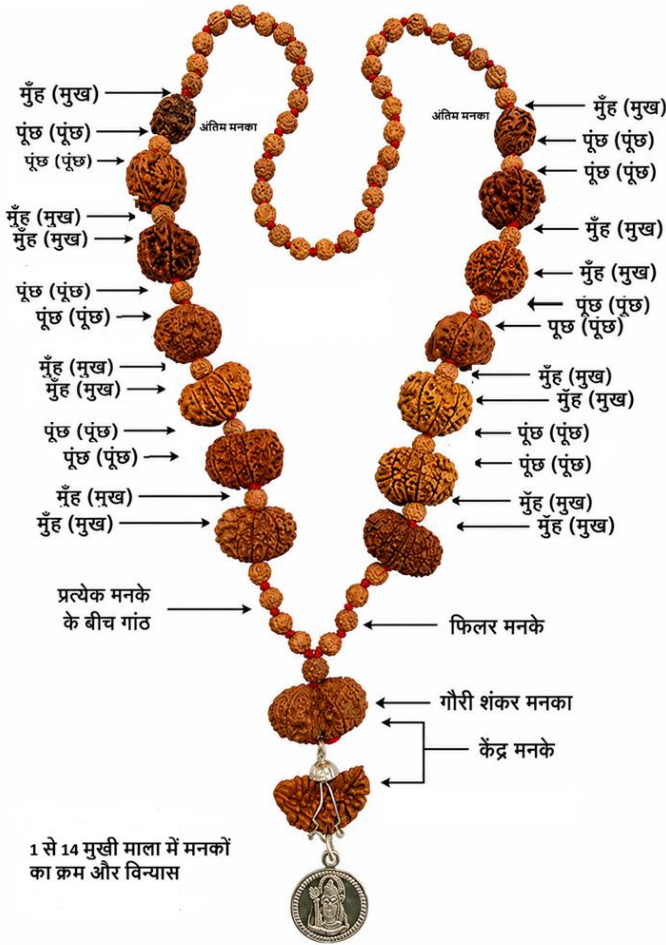
रुद्राक्षों को मुख से मुख और पुच्छ से पुच्छ क्यों लगाया जाता है?

यह बिल्कुल **चुंबक के दो ध्रुवों** की तरह काम करने वाला माना जाता है।

जब रुद्राक्षों को इस निश्चित क्रम में लगाया जाता है, तो उनसे उत्पन्न होने वाली **जैव-विद्युत ऊर्जा** सही तरीके से फैलती है, अपने आप संतुलित होती है और शरीर के चारों ओर एक साथ तालमेल में चलने वाला परिपथ बनाती है।

ध्यान रखें: यदि रुद्राक्षों को बिना किसी सही क्रम के लगातार मुख से पुच्छ की दिशा में पिरो दिया जाए, तो उनकी ऊर्जाएँ आपस में टकराने लगती हैं।

इसीलिए माला किसी ऐसे अनुभवी व्यक्ति से बनवाना बेहद ज़रूरी है जो रुद्राक्षों की इस विशेष **वैदिक दिशा और क्रम** को सही तरीके से समझता हो।



1 से 14 मुखी माला में मनकों का क्रम और विन्यास

रुद्राक्ष के साथ धातुएँ: चाँदी, ताँबा और सोना

बहुत से लोग पूछते हैं कि क्या रुद्राक्ष को चाँदी, ताँबे या सोने की जड़ाई में लगाकर या इन धातुओं के साथ पिरोकर पहना जा सकता है।

जवाब है—हाँ, लेकिन धातु का चुनाव सोच-समझकर करना चाहिए।

ज्योतिषीय तालमेल

माला में किसी धातु का अधिक इस्तेमाल करने से पहले अपनी **जन्म कुंडली** देखना ज़रूरी माना जाता है।

- **चाँदी** — चंद्रमा का प्रतिनिधित्व करती है।
- **ताँबा** — मंगल का प्रतिनिधित्व करता है।
- **सोना** — सूर्य और बृहस्पति का प्रतिनिधित्व करता है।

इसलिए जिस धातु का इस्तेमाल किया जा रहा है, उससे संबंधित ग्रह आपकी कुंडली में शुभ स्थिति में होना चाहिए, ताकि ऊर्जाओं के बीच किसी तरह का टकराव न हो।

चाँदी और शिव का संबंध

रुद्राक्ष के साथ सबसे अधिक इस्तेमाल की जाने वाली धातु **चाँदी** है, क्योंकि यह चंद्रमा का प्रतिनिधित्व करती है।

पुराणों के अनुसार, चंद्रदेव की **27 पत्नियाँ** थीं। अपने ससुर दक्ष प्रजापति की सभी पुत्रियों में से चंद्रदेव केवल एक पत्नी को अधिक महत्व देते थे। इससे क्रोधित होकर दक्ष प्रजापति ने उन्हें धीरे-धीरे क्षीण होकर समाप्त हो जाने का श्राप दिया।

इस श्राप से बचने के लिए चंद्रदेव ने भगवान शिव की शरण ली।

भगवान शिव ने उनकी रक्षा करने और श्राप के प्रभाव को कम करने के लिए चंद्रमा को अपने मस्तक पर धारण कर लिया। इसी कारण भगवान शिव को **चंद्रशेखर** भी कहा जाता है।

चूँकि चंद्रमा भगवान शिव के मस्तक पर विराजमान है, इसलिए चाँदी को रुद्राक्ष की दिव्य ऊर्जा को शीतलता देने और उसे बढ़ाने वाली धातु माना जाता है।

जड़ाई की बाज़ार में वास्तविकता और मेरी राय

धातु की जड़ाई काफ़ी लोकप्रिय है, लेकिन यहाँ एक महत्वपूर्ण बात समझना ज़रूरी है।

कई विक्रेता सही वैज्ञानिक जानकारी के अभाव में रुद्राक्ष के दोनों सिरों को भारी चाँदी की टोपी से लगभग पूरी तरह ढक देते हैं।

ऐसा करने पर रुद्राक्ष का त्वचा से सीधा संपर्क काफ़ी कम हो जाता है, जिससे उसकी **धारिता** भी सीमित हो सकती है।

इसके अलावा, कई ज्वेलर्स रुद्राक्षों को आपस में जोड़ने के लिए उसके प्राकृतिक छेद यानी मुख से पुच्छ तक एक मोटा चाँदी का तार डाल देते हैं।

इस तरह जबरदस्ती मोटा तार डालने से रुद्राक्ष के अंदर मौजूद प्राकृतिक बीजों में दरार आ सकती है और उसके आंतरिक कक्षों की प्राकृतिक बनावट खराब हो सकती है।

मेरा व्यक्तिगत मानना है कि जब रुद्राक्ष को भगवान शिव का पवित्र स्वरूप माना जाता है, तो उसके भीतर किसी भी नुकीले तार को नहीं डालना चाहिए।

एक और व्यावहारिक समस्या यह है कि चाँदी समय के साथ स्वाभाविक रूप से **ऑक्सीकृत होकर काली पड़ने लगती है।**

बहुत से लोग इसे नियमित रूप से साफ़ नहीं करते। धीरे-धीरे माला देखने में कम आकर्षक लगने लगती है और व्यक्ति भी उसे पहनने में रुचि खो सकता है।

इन्हीं कारणों से रुद्राक्ष को बिना किसी जड़ाई के, प्राकृतिक रूप से धागे में पिरोकर पहनना भी बेहद प्रभावी और कम देखभाल वाला विकल्प है।

यदि आप फिर भी धातु का इस्तेमाल करना चाहते हैं, तो यह सुनिश्चित करें कि उसकी कारीगरी बेहद बारीकी से की गई हो और रुद्राक्ष के प्राकृतिक अंदरूनी हिस्से को किसी तार से नुकसान न पहुँचाया जाए।

रुद्राक्ष के साथ स्फटिक पहनना

रुद्राक्ष के साथ पहनी जाने वाली एक और शक्तिशाली सामग्री है **स्फटिक**।

दिव्य बीज की कथा

शिव पुराण में स्फटिक को भगवान शिव के **रेतस् यानी वीर्य/दिव्य ऊर्जा के स्फटिक रूप** के तौर पर पूजनीय माना गया है।

कथा के अनुसार, भगवान शिव और माता पार्वती के मिलन के दौरान शिव का अत्यंत शक्तिशाली बीज निकला। उसकी अग्नि और परमाणु जैसी तीव्र गर्मी इतनी अधिक थी कि न तो पृथ्वी और न ही देवता उसे संभाल पाए।

अंततः अग्निदेव को उसे अपने भीतर धारण करना पड़ा। बाद में उन्होंने उसे पवित्र गंगा नदी में छोड़ दिया, जिससे युद्ध के देवता **भगवान कार्तिकेय** का जन्म हुआ।

इस दिव्य ऊर्जा की जो बूँदें पृथ्वी पर गिरीं, वे ठंडी होकर शुद्ध **स्फटिक** के रूप में जम गईं।

इसी कारण स्फटिक शिवलिंग की पूजा करना या रुद्राक्ष के साथ स्फटिक धारण करना अत्यंत शक्तिशाली आध्यात्मिक और भौतिक लाभ देने वाला माना जाता है।

● सावधानी

यदि आप स्फटिक पहनना चाहते हैं, तो यह सुनिश्चित करना बेहद ज़रूरी है कि वह **असली स्फटिक** हो, न कि बाज़ार में मिलने वाला सस्ता काँच।

इसके अलावा, स्फटिक की ऊर्जा की प्रकृति बेहद **ठंडी और शीतल** मानी जाती है। इसलिए दमा या गंभीर साँस संबंधी समस्याओं से जूझ रहे लोगों को इसे पहनने से बचने की सलाह दी जाती है।

माला के धागे का रंग और सामग्री

अब सवाल आता है कि इतने शक्तिशाली रुद्राक्षों को आखिर किस तरह के धागे में पिरोया जाए?

शिव पुराण में शुद्ध **रेशम** के धागे की सलाह दी गई है, क्योंकि इसे ऊर्जा के स्तर पर निष्क्रिय और शुद्ध माना जाता है।

लेकिन आज के समय में असली रेशम का धागा भारी रुद्राक्षों का वजन लंबे समय तक संभालने के लिए पर्याप्त मजबूत नहीं होता। पसीने और पानी के लगातार संपर्क में आने से भी यह जल्दी खराब हो सकता है।

इसीलिए आज अधिकतर पेशेवर विक्रेता माला को सुरक्षित और मजबूत रखने के लिए अच्छी गुणवत्ता वाले **सूती या टिकाऊ पॉलिएस्टर धागे** का इस्तेमाल करते हैं।

लाल रंग का महत्व

आप अपनी ग्रह संबंधी आवश्यकता के अनुसार **काला, पीला या सफेद** धागा भी चुन सकते हैं, लेकिन सनातन धर्म में **लाल रंग** को सामान्य रूप से सबसे शुभ माना जाता है।

क्यों?

लाल रंग को **आकर्षण और भक्ति की सार्वभौमिक ऊर्जा** का प्रतीक माना जाता है। इसे ईश्वर को प्रसन्न करने और उनकी कृपा आकर्षित करने वाले रंग के रूप में देखा जाता है।

हम माथे पर **लाल तिलक** लगाते हैं, कलाई पर **लाल कलावा या मौली** बाँधते हैं और लाल सिंदूर से पवित्र **स्वस्तिक** बनाते हैं।

इसी तरह पारंपरिक रूप से माता काली जैसी उग्र देवी को प्रसन्न करने के लिए **लाल गुड़हल के फूल** और ऐतिहासिक रूप से रक्त बलि भी अर्पित की जाती रही है।

इसी आधार पर एक सामान्य नियम के रूप में रुद्राक्ष को **लाल धागे में पिरोना** दिव्य उपस्थिति और सुरक्षा को आमंत्रित करने वाला माना जाता है।

अपनी पसंद के अनुसार माला बनवाना: रुद्रसम्राट की विशेषता

रुद्राक्ष पिरोने के नियम, ज्योतिष के अनुसार सही धातु का चुनाव और धागे के रंग जैसी बातें काफ़ी विशेष होती हैं। इसलिए ऐसा विक्रेता मिलना आसान नहीं है जो माला बनाते समय इन प्राचीन नियमों और बारीकियों का सही तरीके से पालन करे।

इसी कारण www.rudrasamrat.com पर हमने खास "अपनी माला/ब्रेसलेट को अनुकूलित करें" अनुभाग तैयार किया है।

यहाँ ग्रंथों में बताए गए अलग-अलग माला और ब्रेसलेट डिज़ाइन उपलब्ध कराए गए हैं।

इस सेक्शन में माला की बनावट से लेकर **जड़ाई की सामग्री—बिना रुद्राक्ष को नुकसान पहुँचाने वाले तार के—और धागे के रंग तक**, हर चीज़ को ग्राहक अपनी आवश्यकता के अनुसार आसानी से अनुकूलित कर सकता है।

हमें गर्व है कि हम ऐसा एकमात्र मंच हैं जो शास्त्रों के अनुसार इस स्तर तक माला को अनुकूलित करने की सुविधा देता है।

एक सही रुद्राक्ष माला बनाना केवल मनकों को धागे में पिरो देना नहीं है। इसके लिए बहुत बारीक और अनुभवी कारीगरी की आवश्यकता होती है, ताकि **मुख से मुख और पुच्छ से पुच्छ** का क्रम बिना किसी गलती के बनाया जा सके।

तभी आपका रुद्राक्ष केवल एक आभूषण बनकर नहीं रह जाता, बल्कि एक जीवंत और सक्रिय **आध्यात्मिक साधन** की तरह काम करता है।

अध्याय 10:

रुद्राक्ष को सक्रिय करने, शरीर को उसके अनुकूल बनाने और उसकी देखभाल का विज्ञान

विना मन्त्रेण यो धत्ते रुद्राक्षं भुवि मानवः ।

स याति नरकं घोरं यावदिन्द्राश्चतुर्दश ॥

"जो व्यक्ति उचित मंत्रों से रुद्राक्ष को अभिमंत्रित किए बिना उसे धारण करता है, वह चौदह इंद्रों के काल तक घोर अंधकार में रहता है।" (शिव पुराण, विद्येश्वर संहिता)

अब तक आपने बाज़ार को समझकर अपने उद्देश्य के अनुसार सही मुखी चुना, और उसके चुंबकीय क्रम को बनाए रखने के लिए सही गणना और विधि से उसे पिरोया भी।

लेकिन इस समय तक आपका रुद्राक्ष केवल **बहुत अधिक क्षमता वाला एक प्राकृतिक बीज** है।

आधुनिक उदाहरण से समझें तो आपने एक बेहद शक्तिशाली सुपरकंप्यूटर खरीद लिया है, लेकिन वह अभी बंद है।

अभिमंत्रण और प्राण प्रतिष्ठा (जीवन-शक्ति स्थापित करना) वह विधि मानी जाती है जिसके माध्यम से रुद्राक्ष की जैव-विद्युत क्षमता को सक्रिय

करके उसे विशेष रूप से आपके व्यक्तिगत आभामंडल की ऊर्जा के साथ जोड़ा जाता है।

इस मान्यता के अनुसार, सक्रिय किए बिना रुद्राक्ष अपनी वास्तविक क्षमता का केवल एक छोटा हिस्सा ही प्रदान करता है।

आइए अब रुद्राक्ष को जागृत करने, शरीर को उसके अनुकूल बनाने और उसकी सही देखभाल की पूरी विधि समझते हैं।

बाज़ार का भ्रम: "ज्योतिर्लिंग में अभिमंत्रित" करने का दावा

प्रक्रिया समझने से पहले रुद्राक्ष बाज़ार में चलने वाले एक बेहद लाभदायक दावे को समझना ज़रूरी है।

कई विक्रेता बहुत अधिक अतिरिक्त पैसे लेकर दावा करते हैं कि उनके पंडितों ने आपके रुद्राक्ष को विशेष रूप से **पशुपतिनाथ मंदिर या किसी पवित्र ज्योतिर्लिंग के अंदर पहले से अभिमंत्रित** कर दिया है।

इस दावे पर खुद सोचिए—व्यावहारिक रूप से यह कैसे संभव होगा?

इन मंदिरों में हर दिन बहुत बड़ी और नियंत्रित भीड़ होती है। मंदिर प्रशासन सामान्य विक्रेताओं या आम लोगों को पवित्र शिवलिंग छूने की अनुमति नहीं देता। यह अधिकार आमतौर पर कुछ विशेष मुख्य पुजारियों तक ही सीमित रहता है।

इसलिए ऐसे दावों को बिना जाँचे सच न मानें और केवल इस आधार पर किसी विक्रेता को अतिरिक्त पैसा न दें।

रुद्राक्ष को सक्रिय करने का सबसे अच्छा और शक्तिशाली तरीका इसे **स्वयं अभिमंत्रित करना** माना जाता है। मान्यता है कि रुद्राक्ष को आपकी आवाज़, आपके स्पर्श और आपके स्पष्ट संकल्प से जुड़ना चाहिए।

सही समय: मुहूर्त

रुद्राक्ष को किसी भी समय बिना सोचे-समझे सक्रिय करने की सलाह नहीं दी जाती।

हालाँकि तकनीकी रूप से इसे किसी भी सोमवार को धारण किया जा सकता है, लेकिन कुछ विशेष दिनों और समय को इसकी ऊर्जा ग्रहण करने के लिए अधिक शुभ माना जाता है।

**शिवरात्रौ विशेषेण रुद्राक्षं यस्तु धारयेत् ।
सहस्रगुणितं पुण्यं तस्य प्राप्नोति निश्चितम् ॥**

"जो व्यक्ति विशेष रूप से महाशिवरात्रि की रात रुद्राक्ष धारण करता है, उसे निश्चित रूप से हज़ार गुना आध्यात्मिक पुण्य और ऊर्जा संबंधी लाभ प्राप्त होते हैं।" (शिव पुराण की परंपराओं पर आधारित)

- **सबसे शुभ दिन: महाशिवरात्रि**

महाशिवरात्रि को भगवान शिव और माता पार्वती के दिव्य विवाह के दिन के रूप में मनाया जाता है। रुद्राक्ष धारण करने के लिए इसे वर्ष का सबसे शक्तिशाली दिन माना गया है।

मान्यता है कि इस दिन रुद्राक्ष धारण करने से उसके लाभ हज़ार गुना बढ़ जाते हैं।

- **अन्य अत्यंत शुभ दिन**

श्रावण मास के सोमवार, श्रावण शिवरात्रि, अक्षय तृतीया, गणेश चतुर्थी, मकर संक्रांति, गुड़ी पड़वा, धनतेरस और दीपावली भी रुद्राक्ष धारण करने के लिए बेहद शुभ माने जाते हैं।

- **सामान्य नियम**

यदि रुद्राक्ष खरीदने के आसपास इनमें से कोई त्योहार नहीं आ रहा है, तो शुक्ल पक्ष के किसी सोमवार को चुना जा सकता है।

- **सूर्यास्त का नियम**

रुद्राक्ष को सक्रिय करने और पहली बार धारण करने की प्रक्रिया ब्रह्म मुहूर्त से लेकर सूर्यास्त तक पूरी करनी चाहिए।

रुद्राक्ष को पहली बार सूर्यास्त के बाद नहीं पहना जाता।

इसका एकमात्र अपवाद **महाशिवरात्रि** माना जाता है, क्योंकि इसकी मुख्य पूजा और साधना रात में ही होती है।

रुद्राक्ष को सक्रिय करने की 5 चरणों वाली विधि

चरण 1: शुद्धि

रुद्राक्ष या पूरी माला को **ताँबे या चाँदी की थाली** में रखें।

सबसे पहले उसे धीरे से **गंगाजल** से स्नान कराएँ।

इसके बाद **पंचामृत**—बिना उबला गाय का दूध, दही, घी, शहद और चीनी—से अच्छी तरह स्नान कराएँ।

फिर एक बार दोबारा गंगाजल से धोएँ और किसी **साफ़ तथा पहले इस्तेमाल न किए गए कपड़े** से हल्के हाथ से सुखा लें।

चरण 2: उपचार

मुख्य रुद्राक्ष पर श्रद्धापूर्वक **चंदन या भस्म** का तिलक लगाएँ।

थाली में **अखंड चावल (अक्षत)** और सफेद फूल अर्पित करें।

इसके बाद **धूप और घी का दीपक** जलाएँ और उसकी सुगंधित धूप को रुद्राक्ष के आसपास फैलने दें।

चरण 3: संकल्प

अपने दाएँ हाथ में पानी की कुछ बूँदें लें।

आँखें बंद करके अपना **नाम, गोत्र और इस रुद्राक्ष को पहनने का स्पष्ट उद्देश्य** बोलें।

संकल्प पूरा होने के बाद हाथ में लिया पानी ज़मीन पर छोड़ दें।

मान्यता के अनुसार, इस प्रक्रिया से आपका संकल्प ब्रह्मांडीय ऊर्जा के साथ जुड़ जाता है।

चरण 4: मंत्र-जप

रुद्राक्ष को अपने दाएँ हाथ में पकड़ें।

अब मंत्र का **108 बार जाप** करके उसे ध्वनि ऊर्जा से अभिमंत्रित करें।

आप इनमें से किसी मंत्र का जाप कर सकते हैं:

ॐ नमः शिवाय

या

महामृत्युंजय मंत्र

या फिर उस विशेष मुखी रुद्राक्ष का निर्धारित **बीज मंत्र**।

चरण 5: धारण

108वाँ जाप पूरा होने के बाद रुद्राक्ष को अपने **माथे यानी आज्ञा चक्र** से स्पर्श कराएँ और फिर उसे गले में धारण कर लें।

घी में रखने की परंपरा और आधुनिक दृष्टिकोण

आपको यजुर्वेद से जुड़ी परंपराओं में यह पढ़ने को मिल सकता है कि रुद्राक्ष को पहनने से पहले **21 दिनों तक शुद्ध घी में भिगोकर** रखना चाहिए।

प्राचीन समय में इस प्रक्रिया का गहरा धार्मिक और अनुष्ठानिक महत्व माना जाता था।

हालाँकि, मूल लेखक का मत है कि रुद्राक्ष की सतह पर मौजूद बेहद छोटे छिद्रों को देखते हुए आज ऐसा करना उचित नहीं है।

रुद्राक्ष अपनी सतह पर मौजूद सूक्ष्म छिद्रों के माध्यम से "साँस" लेता है—ऐसा दावा किया गया है। यदि उसे 21 दिनों तक गाढ़े घी या भारी तेल में डुबोकर रखा जाए, तो ये सूक्ष्म छिद्र बंद हो सकते हैं, जिससे उसकी बताई गई **परावैद्युत ऊर्जा के उत्सर्जन** में रुकावट आ सकती है।

इसी कारण इस प्रक्रिया से बचने की सलाह दी गई है।

शरीर को रुद्राक्ष के अनुकूल बनाना और शुरुआती प्रभाव

कई लोग पहली बार रुद्राक्ष पहनने के बाद होने वाले **प्रभाव** के बारे में पूछते हैं।

मूल विचार के अनुसार, आज की जीवनशैली में हम कई ऐसी चीज़ें करते हैं जिन्हें तामसिक माना गया है—जैसे प्याज़-लहसुन और मांसाहारी भोजन खाना, शराब का सेवन करना, अत्यधिक तनावपूर्ण जीवन जीना और ध्यान न करना।

ऐसा माना जाता है कि इन कारणों से शरीर के चक्रों का संतुलन बिगड़ सकता है।

जब कोई व्यक्ति पहली बार शक्तिशाली रुद्राक्ष संयोजन पहनता है, तो मान्यता है कि वह उच्च आवृत्ति वाली ब्रह्मांडीय ऊर्जा ग्रहण करके चक्रों को दोबारा संतुलित करने लगता है।

मूल पाठ इसे एक तेज़ **ऊर्जा परिवर्तन** या **"शुद्धीकरण चरण"** के रूप में बताता है।

• बताए गए शुरुआती लक्षण

मूल पाठ के अनुसार, इस दौरान कुछ लोगों को **तेज़ बुखार, दस्त, उल्टी, नींद में गंभीर गड़बड़ी, चक्कर या रक्तचाप अथवा रक्त शर्करा में अस्थायी बढ़ोतरी** जैसे लक्षण महसूस हो सकते हैं।

इन लक्षणों को केवल रुद्राक्ष के काम करने या "शुद्धीकरण" का प्रमाण मानकर नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए। तेज़ बुखार, लगातार उल्टी-दस्त, गंभीर चक्कर या रक्तचाप/रक्त शर्करा में असामान्य बदलाव के चिकित्सकीय कारण भी हो सकते हैं और आवश्यकता पड़ने पर चिकित्सा सलाह लेनी चाहिए।

अधिक उम्र के लोगों और उच्च मुखी रुद्राक्षों के लिए विशेष नियम

यदि आप पहली बार बहुत शक्तिशाली संयोजन—जैसे **1 से 14 मुखी समृद्धि माला**—पहन रहे हैं, या आपकी उम्र **50 वर्ष से अधिक** है, तो मूल

विधि के अनुसार शरीर को धीरे-धीरे इसके अनुकूल बनाने की सलाह दी जाती है।

- पहले सप्ताह रुद्राक्ष को प्रतिदिन केवल **4 घंटे** पहनें।
- इसके बाद अगले सप्ताह पहनने का समय **2 घंटे** बढ़ाएँ।

इसका उद्देश्य शरीर और तंत्रिका तंत्र को धीरे-धीरे इसके अनुकूल होने का समय देना है।

यदि पहनने पर चक्कर या असहजता महसूस हो, तो अपनी सुविधा के अनुसार इसे कुछ समय पहनकर उतारा जा सकता है। लगातार या गंभीर शारीरिक लक्षण होने पर उन्हें केवल ऊर्जा परिवर्तन मानने के बजाय उचित चिकित्सकीय कारणों की जाँच कराना ज़रूरी है।

रुद्राक्ष की देखभाल और सफाई

मैंने कई लोगों को महँगे **कवच और मालाओं** पर काफ़ी पैसा खर्च करते देखा है, लेकिन पहनने के बाद वे उनकी देखभाल करना पूरी तरह भूल जाते हैं।

रुद्राक्ष को भगवान शिव का जीवंत स्वरूप माना जाता है। जिस तरह हमारे शरीर को नियमित साफ़-सफाई की आवश्यकता होती है, उसी तरह रुद्राक्ष को भी साफ़ रखना ज़रूरी है।

समय के साथ त्वचा से निकलने वाला प्राकृतिक तेल, पसीना और गंदगी रुद्राक्ष की सतह पर जमा होने लगते हैं।

यह गंदगी धीरे-धीरे उसकी सतह के सूक्ष्म छिद्रों को बंद कर सकती है।

मूल लेखक के अनुसार, यही एक कारण हो सकता है कि कुछ लोगों को लगता है कि शुरुआत में उनका रुद्राक्ष बहुत अच्छा प्रभाव दे रहा था, लेकिन कुछ महीनों बाद उसका प्रभाव कम हो गया।

इस विचार के अनुसार, रुद्राक्ष ने अपनी शक्ति नहीं खोई होती, बल्कि उसकी सतह पर गंदगी की परत जमा हो गई होती है।

रुद्राक्ष की सही सफाई की प्रक्रिया

- **भिगोना**

हल्का गर्म पानी लें और उसमें **सतरीठा/रीठा** डालें।

अपनी माला या रुद्राक्ष को इस घोल में ठीक **30 मिनट** के लिए रखें, ताकि जमा हुई गंदगी नरम होकर निकल सके।

- **ब्रश से सफाई**

एक **साफ़ और पहले इस्तेमाल न किया गया टूथब्रश** लें।

रुद्राक्ष को हल्के हाथ से साफ़ करें और उसकी प्राकृतिक रेखाओं एवं खाँचों के अंदर जमी गंदगी को भी निकालें।

इसे बहते नल के पानी के नीचे धीरे-धीरे साफ़ करें, ताकि निकली हुई गंदगी पूरी तरह बह जाए।

- **दोबारा शुद्ध करना**

अंत में रुद्राक्ष को अच्छी तरह **गंगाजल** से धोएँ।

मान्यता है कि रुद्राक्ष पर गंगाजल छिड़कते ही वह दोबारा शुद्ध और सक्रिय हो जाता है।

- **हल्का तेल लगाना**

उसी टूथब्रश को अच्छी तरह साफ़ और सुखाकर उससे रुद्राक्ष पर **हल्के जैतून तेल** की बहुत पतली परत लगाएँ।

भारी या बहुत गाढ़े तेल का इस्तेमाल न करें।

मूल पाठ में हल्के जैतून तेल की सलाह इसलिए दी गई है क्योंकि यह आसानी से उपलब्ध होता है और रुद्राक्ष के पेड़ **एलिओकार्पस** को जैतून के व्यापक वनस्पति परिवार से जोड़कर देखा गया है।

रुद्राक्ष को कितनी बार साफ़ करना है, यह आपके शहर के मौसम और आपके काम करने की परिस्थितियों के अनुसार तय किया जा सकता है।

अति-शीतक का तरीका: कैलाश जैसा ठंडा वातावरण

मूल पाठ में विशेषज्ञों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली एक और उन्नत तकनीक बताई गई है।

इसके अनुसार, बहुत अधिक ठंड के संपर्क में आने पर रुद्राक्ष सक्रिय होता है और उसकी आणविक संरचना अधिक सघन हो जाती है। इसे हिमालय और कैलाश जैसे ऊँचाई वाले क्षेत्रों के शून्य से नीचे के तापमान जैसा वातावरण देने की कोशिश के रूप में बताया गया है।

इस विधि में रुद्राक्ष को रातभर **अति-शीतक** में रखने—लेकिन 8 घंटे से अधिक नहीं—की सलाह दी गई है।

मूल पाठ के अनुसार, हर **15 दिन में** ऐसा करने से रुद्राक्ष की संरचना लंबे समय तक सुरक्षित रह सकती है और उसका जैव-विद्युत प्रभाव काफ़ी बढ़ सकता है।

अध्याय 11:

रुद्राक्ष और अंक ज्योतिष मार्गदर्शिका

बाज़ार में एक आम धारणा है कि **ज्योतिषीय सलाह या किसी पंडित से परामर्श किए बिना रुद्राक्ष नहीं पहना जा सकता।** मैं इसे बिल्कुल साफ़ कर देना चाहता हूँ—यह पूरी तरह एक मिथक है।

यदि आप मूल शास्त्रों और पुराणों का गहराई से अध्ययन करें, तो वहाँ **नवग्रहों को अलग-अलग मुखी रुद्राक्षों से सीधे जोड़ने का कोई उल्लेख नहीं मिलता।** प्राचीन ग्रंथों में रुद्राक्षों का वर्णन मुख्य रूप से उनके अधिष्ठाता देवी-देवताओं और उनके विशेष आध्यात्मिक गुणों के आधार पर किया गया है।

तो फिर रुद्राक्षों के साथ ग्रहों का संबंध कहाँ से आया?

यह आधुनिक विद्वानों और ज्योतिष के जानकारों द्वारा की गई गहरी व्याख्या का परिणाम है। उन्होंने पुराणों में प्रत्येक मुखी से जुड़े देवी-देवताओं के गुणों का अध्ययन किया और फिर उन गुणों को समान प्रकृति वाले ग्रहों से जोड़ा।

- **उदाहरण:** 1 मुखी रुद्राक्ष को परम ब्रह्म शिव का स्वरूप माना गया है। भगवान शिव ब्रह्मांड की सर्वोच्च और सबसे शक्तिशाली सत्ता का प्रतिनिधित्व करते हैं।

जब विद्वानों ने नौ ग्रहों में ऐसी ही सत्ता और शक्ति का प्रतिनिधित्व करने वाले ग्रह को देखा, तो **सूर्य** सबसे स्वाभाविक विकल्प था, क्योंकि सूर्य हमारे सौरमंडल का केंद्र और जीवन-शक्ति है।

इसी आधार पर **1 मुखी रुद्राक्ष को सूर्य से जोड़ा गया।**

यही तार्किक व्याख्या दूसरे मुखी रुद्राक्षों पर भी लागू की गई।

इसलिए यदि आपकी **अंक ज्योतिष या ज्योतिष में गहरी आस्था** है, तो आपको रुद्राक्ष से डरने की आवश्यकता नहीं है। आप इन विद्याओं को एक उपयोगी मार्गदर्शक की तरह इस्तेमाल करके ऐसा मुखी चुन सकते हैं जो आपके जीवन की ऊर्जा के अनुरूप हो।

अंक ज्योतिष का आधार: जन्मांक और भाग्यांक

यदि आप अंक ज्योतिष के आधार पर अपना रुद्राक्ष चुनना चाहते हैं, तो सबसे पहले दो मुख्य अंक निकालने होंगे:

1. **जन्मांक**
2. **भाग्यांक**

1. जन्मांक

जन्मांक निकालना बहुत आसान है।

यह केवल **आपके जन्म की तारीख** से निकाला जाता है, यानी महीने की 1 से 31 तारीख के बीच जिस दिन आपका जन्म हुआ।

यदि आपकी जन्म तारीख दो अंकों में है, तो दोनों अंकों को जोड़कर उन्हें एक अंक में बदलना होता है।

उदाहरण 1: यदि आपका जन्म **3 जनवरी** को हुआ है, तो आपका जन्मांक होगा: **3**

उदाहरण 2: यदि आपका जन्म **26 सितंबर** को हुआ है, तो: **2 + 6 = 8**

इसलिए आपका **जन्मांक 8** होगा।

2. भाग्यांक

भाग्यांक को **जीवन पथ संख्या** भी कहा जाता है।

इसे निकालने के लिए आपकी पूरी जन्मतिथि—**दिन + महीना + वर्ष**—के सभी अंकों को तब तक जोड़ा जाता है, जब तक अंत में एक अंक न मिल जाए।

उदाहरण: मान लेते हैं कि किसी व्यक्ति की जन्मतिथि है:
26 सितंबर 1985 (26-09-1985)

अब सभी अंकों को जोड़ें:

$$2 + 6 + 0 + 9 + 1 + 9 + 8 + 5 = 40$$

अब 40 को एक अंक में बदलें:

$$4 + 0 = 4$$

इसलिए इस व्यक्ति का **भाग्यांक 4** है।

अंक ज्योतिष और ग्रहों के अनुसार रुद्राक्ष

पिछले अध्यायों में बताए गए ग्रह संबंधों के आधार पर नीचे दी गई तालिका आपके **जन्मांक या भाग्यांक**, उसके स्वामी ग्रह और उससे जुड़े रुद्राक्ष को समझने में मदद करेगी।

जन्मांक/ भाग्यांक	स्वामी ग्रह	मुख्य रुद्राक्ष	विकल्प या उन्नयन
1	सूर्य	1 मुखी या 12 मुखी	19 मुखी
2	चंद्रमा	2 मुखी	गौरीशंकर या 20 मुखी
3	बृहस्पति (गुरु)	5 मुखी	10 या 15 मुखी
4	राहु	8 मुखी	गणेश रुद्राक्ष या 16 मुखी
5	बुध	4 मुखी	—
6	शुक्र	6 मुखी या 13 मुखी	21 मुखी
7	केतु	9 मुखी	—
8	शनि	7 मुखी	14 मुखी या 17 मुखी
9	मंगल	3 मुखी या 11 मुखी	18 मुखी

पहनने का मुख्य नियम

एक बार जब आपने अपना जन्मांक और भाग्यांक निकाल लिया, तो अपने लिए सही रुद्राक्ष संयोजन तैयार करने का नियम बहुत आसान है:

अपने जन्मांक और भाग्यांक दोनों से जुड़े रुद्राक्षों को एक साथ पहनें।

इसे पहले दिए गए उदाहरण से समझते हैं।

जिस व्यक्ति का जन्म **26 सितंबर 1985** को हुआ था:

- **जन्मांक:** 8 — जिसका स्वामी शनि है।
- **भाग्यांक:** 4 — जिसका स्वामी राहु है।

सही रुद्राक्ष का चुनाव

- **जन्मांक 8 के लिए**

इस व्यक्ति को **7 मुखी रुद्राक्ष** पहनना चाहिए।

यदि वह इससे अधिक शक्तिशाली विकल्प चाहता है, तो सीधे **14 मुखी** को उन्नयन के रूप में चुन सकता है।

- **भाग्यांक 4 के लिए**

इस व्यक्ति को **8 मुखी रुद्राक्ष** पहनना चाहिए।

इसके विकल्प के रूप में **गणेश रुद्राक्ष** भी चुना जा सकता है, जिसे कम कीमत में मिलने वाला एक शक्तिशाली विकल्प माना गया है।

इन दोनों रुद्राक्षों को एक ही धागे में बाँधकर या अपनी आवश्यकता के अनुसार **चाँदी की जड़ाई वाले संयोजन** में पहनने से व्यक्ति अपने जन्मजात स्वभाव और क्षमताओं—जिन्हें जन्मांक दर्शाता है—को अपने जीवन के अंतिम मार्ग और उद्देश्य—जिसे भाग्यांक दर्शाता है—के साथ जोड़ सकता है।

मान्यता है कि इससे व्यक्ति अपने जीवन की यात्रा में अधिक तेज़ी और कम रुकावटों के साथ आगे बढ़ सकता है।

विषम संख्या में रुद्राक्ष पहनने का नियम

इस उदाहरण में व्यक्ति के पास **7 मुखी और 8 मुखी**, यानी कुल दो रुद्राक्ष हैं।

इस संयोजन को विषम संख्या में करने के लिए इसमें एक और ऐसा रुद्राक्ष जोड़ा जा सकता है जिसकी कीमत सामान्यतः बहुत अधिक न हो—जैसे:

4 मुखी, 5 मुखी या 6 मुखी।

इस तरह कुल रुद्राक्षों की संख्या **3** हो जाएगी, जो विषम संख्या है।

यदि आप ये सारी गणनाएँ स्वयं नहीं करना चाहते, तो **www.rudrasamrat.com** पर उपलब्ध "**रुद्राक्ष कैलकुलेटर**" का इस्तेमाल कर सकते हैं।

यह तंत्र आपकी **जन्मतिथि के आधार पर 3 रुद्राक्षों** का सुझाव देगा।

इसके बाद वेबसाइट के "**कस्टम माला**" सेक्शन में जाकर आप अपनी आवश्यकता के अनुसार उस कवच को अनुकूलित भी कर सकते हैं।

अंक ज्योतिष के आधार पर रुद्राक्ष चुनने का मेरा अनुभव

पिछले कई वर्षों में मैंने व्यक्तिगत रूप से इसी **अंक ज्योतिष पद्धति** का इस्तेमाल करके बहुत से लोगों को उनकी ज़रूरत के अनुसार रुद्राक्ष के विशेष संयोजन सुझाए हैं।

मेरे अनुभव में इसके वास्तविक परिणाम लगातार काफ़ी प्रभावशाली और असरदार रहे हैं।

यह तरीका ज्योतिष से जुड़े कई भ्रमों और डर को दूर करता है और रुद्राक्ष चुनने के लिए एक सरल, व्यावहारिक और गणना पर आधारित तरीका देता है।

इसका उद्देश्य व्यक्ति की आवश्यकता के अनुसार सही ब्रह्मांडीय ऊर्जा से जुड़े रुद्राक्ष का चुनाव करना है, ताकि वह अपने **व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में अधिक तेज़ी से आगे बढ़ सके**।

अध्याय 12:

रुद्राक्ष और ज्योतिष मार्गदर्शिका

यकीन मानिए, यह तरीका बहुत कम लोगों को पता है। कई बड़े और अनुभवी ज्योतिषी केवल इसी तरीके से आपके लिए सही रुद्राक्ष सुझाने के लिए अच्छी-खासी परामर्श शुल्क लेते हैं।

इस तरीके की सबसे अच्छी बात यह है कि इसे समझने के लिए आपको वर्षों तक गहरा वैदिक ज्योतिष पढ़ने की ज़रूरत नहीं है।

आपको बस किसी भी आधुनिक **ज्योतिष सॉफ़्टवेयर या ऐप** की मदद से अपनी सामान्य **कुंडली** बनानी है और नीचे दिए गए चरणों को एक-एक करके समझना है। इससे आप अपने लिए सही रुद्राक्ष संयोजन चुन सकते हैं।

3 चरणों में ज्योतिष के अनुसार रुद्राक्ष चुनने का तरीका

चरण 1: लग्न पहचानें

सबसे पहले अपनी कुंडली के **पहले भाव** को देखें। सामान्य डायमंड आकार की उत्तर भारतीय कुंडली में यह ऊपर बीच वाला हिस्सा होता है। यही आपका **लग्न** है।

इस भाव में **1 से 12 के बीच एक संख्या** लिखी होगी। यह संख्या 12 राशियों में से किसी एक को दर्शाती है।

- **उदाहरण**

यदि पहले भाव में 3 लिखा है, तो नीचे दी गई राशि तालिका में संख्या 3 देखें।

संख्या 3 **मिथुन राशि** को दर्शाती है, जिसका स्वामी ग्रह **बुध** है।

चरण 2: चंद्र राशि पहचानें

अब अपनी कुंडली में देखें कि चंद्रमा, जिसे "**चंद्र**" के रूप में लिखा जा सकता है, किस भाव में स्थित है।

उस भाव में लिखी हुई संख्या नोट करें।

- **उदाहरण:** यदि चंद्रमा उस भाव में बैठा है जहाँ 5 लिखा हुआ है, तो इसका मतलब है कि व्यक्ति का चंद्रमा सिंह राशि में है।

नीचे दी गई तालिका के अनुसार सिंह राशि का स्वामी **सूर्य** है।

चरण 3: नक्षत्र पहचानें

यह सबसे महत्वपूर्ण और बारीकी से परिणाम देने वाला आधार माना जाता है।

अपने ज्योतिषीय सॉफ्टवेयर के **ग्रह विवरण** वाले भाग में जाएँ और देखें कि आपका चंद्रमा किस विशेष नक्षत्र में स्थित है।

- **उदाहरण:** मान लीजिए सॉफ्टवेयर बताता है कि चंद्रमा सिंह राशि में है और उसका नक्षत्र पूर्व फाल्गुनी है।

अब हमारे पास रुद्राक्ष चुनने के लिए तीन ज़रूरी जानकारियाँ आ गई हैं—

लग्न + चंद्र राशि + नक्षत्र

रुद्राक्ष चुनने का नियम: अपना सही संयोजन बनाना

ऊपर बताए गए तीन चरणों के आधार पर अब ऐसा रुद्राक्ष संयोजन तैयार किया जा सकता है जो व्यक्ति की कुंडली के अनुसार खास तौर पर उसके लिए चुना गया हो।

हम ऊपर वाले उदाहरण को ही आगे बढ़ाते हैं।

- **लग्न का रुद्राक्ष**

व्यक्ति का लग्न **मिथुन** है।

मिथुन का स्वामी **बुध** है।

इसलिए उसे **4 मुखी रुद्राक्ष** पहनना चाहिए।

- **चंद्र राशि का रुद्राक्ष**

व्यक्ति का चंद्रमा **सिंह राशि** में है।

सिंह का स्वामी **सूर्य** है।

इसलिए व्यक्ति अपने बजट और उद्देश्य के अनुसार **1 मुखी, 12 मुखी या 19 मुखी** रुद्राक्ष पहन सकता है।

- **नक्षत्र का रुद्राक्ष**

व्यक्ति का चंद्रमा **पूर्व फाल्गुनी नक्षत्र** में है।

पूर्व फाल्गुनी का स्वामी **शुक्र** है।

इसलिए उसे **6 मुखी या 13 मुखी** रुद्राक्ष पहनना चाहिए।

इस व्यक्ति के लिए अंतिम संयोजन

4 मुखी + 12 मुखी + 13 मुखी

इन तीनों रुद्राक्षों को एक साथ बाँधकर पहनने से एक बेहद शक्तिशाली और व्यक्ति की कुंडली के अनुसार विशेष रूप से तैयार किया गया **ब्रह्मांडीय सुरक्षा कवच** बनता है।

एडवांस नियम: अगर आप और गहराई में जाना चाहते हैं

यदि आप स्वयं ज्योतिषी हैं या अपनी कुंडली के अनुसार रुद्राक्ष के चुनाव को और बारीकी से समझना चाहते हैं, तो इन दो एडवांस नियमों का इस्तेमाल किया जा सकता है।

- **त्रिकोण नियम: पहला, पाँचवाँ और नौवाँ भाव**

कुंडली के **पहले, पाँचवें और नौवें भाव** को त्रिकोण भाव कहा जाता है।

इन तीनों भावों के स्वामी ग्रहों से जुड़े रुद्राक्ष सुरक्षित रूप से पहने जा सकते हैं।

यहाँ एक महत्वपूर्ण बात समझने वाली है—

इस पद्धति के अनुसार, इन ग्रहों से जुड़े रुद्राक्ष तब भी पहने जा सकते हैं जब वह ग्रह कुंडली में **अशुभ स्थिति में हो या नीच का हो।**

यदि कोई ग्रह अशुभ है, तो सामान्यतः उससे संबंधित **रत्न** पहनने की सलाह नहीं दी जाती, क्योंकि मान्यता के अनुसार रत्न उस ग्रह की ऊर्जा को और अधिक बढ़ा सकता है और इससे गंभीर दुष्प्रभाव हो सकते हैं।

लेकिन इस पद्धति के अनुसार रुद्राक्ष के साथ ऐसा नहीं माना जाता।

रुद्राक्ष को बिना नकारात्मक दुष्प्रभाव वाला माना गया है। मान्यता है कि वह ग्रह की अशुभ ऊर्जा को शांत करके उसे सकारात्मक प्रभाव में बदलने में मदद करता है।

- **दशा और अंतर्दशा में राहत**

रुद्राक्ष को कठिन या अस्थिर ग्रह दशाओं के दौरान एक प्रभावी उपाय माना जाता है।

उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति की **बृहस्पति महादशा** चल रही है और उसके भीतर **राहु की अंतर्दशा** है, और इस दौरान उसे अचानक बहुत अधिक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है, तो इस पद्धति के अनुसार उसे:

बृहस्पति के लिए — 5 मुखी या 15 मुखी

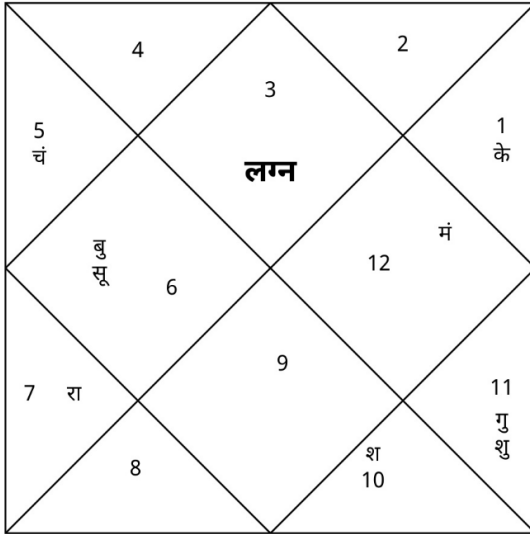
और

राहु के लिए — 8 मुखी

एक साथ पहनने की सलाह दी जा सकती है।

मान्यता है कि यह संयोजन दोनों ग्रहों के बीच होने वाले ऊर्जा संबंधी टकराव को शांत करके व्यक्ति को जल्दी और स्पष्ट राहत देने में मदद करता है।

जब इसी पद्धति और विश्वास के आधार पर रुद्राक्ष सुझाया जाता है, तो इसके तेज़ और जीवन में बड़े बदलाव लाने वाले परिणाम आपको हैरान कर सकते हैं।



ग्रहों के संक्षिप्त नाम

- सू = सूर्य
- चं = चंद्रमा
- मं = मंगल
- बु = बुध
- गु = गुरु (बृहस्पति)
- शु = शुक्र
- श = शनि
- रा = राहु
- के = केतु

संदर्भ तालिका 1: राशियाँ और उनसे जुड़े रुद्राक्ष

संख्या	राशि	स्वामी ग्रह	मुख्य रुद्राक्ष	उन्नयन / विकल्प
1	मेष	मंगल	3 मुखी	11 मुखी, 18 मुखी
2	वृषभ	शुक्र	6 मुखी	13 मुखी, 21 मुखी
3	मिथुन	बुध	4 मुखी	—
4	कर्क	चंद्रमा	2 मुखी	गौरीशंकर, 20 मुखी
5	सिंह	सूर्य	1 मुखी, 12 मुखी	19 मुखी
6	कन्या	बुध	4 मुखी	—
7	तुला	शुक्र	6 मुखी	13 मुखी, 21 मुखी
8	वृश्चिक	मंगल	3 मुखी	11 मुखी, 18 मुखी
9	धनु	बृहस्पति	5 मुखी	10 या 15 मुखी
10	मकर	शनि	7 मुखी	14 मुखी, 17 मुखी
11	कुंभ	शनि	7 मुखी	14 मुखी, 17 मुखी
12	मीन	बृहस्पति	5 मुखी	10 या 15 मुखी

संदर्भ तालिका 2: 27 नक्षत्र और उनसे जुड़े रुद्राक्ष

नक्षत्र	स्वामी ग्रह	मुख्य रुद्राक्ष	उन्नयन / विकल्प
अश्विनी, मघा, मूल	केतु	9 मुखी	—
भरणी, पूर्व फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा	शुक्र	6 मुखी	13 मुखी, 21 मुखी
कृत्तिका, उत्तर फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा	सूर्य	1 मुखी, 12 मुखी	19 मुखी
रोहिणी, हस्त, श्रवण	चंद्रमा	2 मुखी	गौरीशंकर, 20 मुखी
मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा	मंगल	3 मुखी	11 मुखी, 18 मुखी
आर्द्रा, स्वाती, शतभिषा	राहु	8 मुखी	गणेश रुद्राक्ष, 16 मुखी
पुनर्वसु, विशाखा, पूर्व भाद्रपद	बृहस्पति	5 मुखी	10 या 15 मुखी
पुष्य, अनुराधा, उत्तर भाद्रपद	शनि	7 मुखी	14 मुखी, 17 मुखी
आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती	बुध	4 मुखी	—

अध्याय 13:

पहले से तैयार शक्तिशाली रुद्राक्ष संयोजन

अगर आप अपना **जन्मांक**, **भाग्यांक** नहीं निकालना चाहते या अपनी कुंडली के जटिल ज्योतिषीय हिसाब में नहीं पढ़ना चाहते, तो इसका एक आसान और सभी के लिए उपयोगी तरीका भी है।

कई वर्षों के शोध और अनुभव के आधार पर हमने कुछ खास, पहले से तैयार **रुद्राक्ष संयोजन** बनाए हैं। इन्हें जीवन की अलग-अलग व्यावहारिक समस्याओं को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है—चाहे वह रुका हुआ पैसा हो, पढ़ाई में एकाग्रता की कमी हो या जीवन में स्थिरता की ज़रूरत।

चूँकि ये संयोजन एक साथ कई ग्रहों और चक्रों को संतुलित करने के उद्देश्य से बनाए गए हैं, इसलिए इन्हें बिना किसी ज्योतिषीय सलाह के भी शुरुआत से सीधे पहना जा सकता है और इनका पूरा लाभ लिया जा सकता है।

नोट: नीचे दिए गए सभी असली और **प्रयोगशाला-प्रमाणित** संयोजन केवल **www.rudrasamrat.com** पर उपलब्ध हैं। इन्हें बेहद सावधानी से शास्त्रों में बताए गए **मुख से मुख और पुच्छ से पुच्छ** के सही क्रम में तैयार किया जाता है।

1. विष्णु लक्ष्मी बंध

पहली बार पहनने वालों के लिए

- **संयोजन:** 5 मुखी + 6 मुखी + 7 मुखी
- **उद्देश्य:** प्रेम, समृद्धि और आर्थिक स्थिरता

यह हमारे मंच पर सबसे ज़्यादा बिकने वाले संयोजनों में से एक है और खासतौर पर उन लोगों की पहली पसंद है जो कम बजट में पहली बार रुद्राक्ष की शक्ति का अनुभव करना चाहते हैं।

इसमें **कालाग्नि रुद्र (5 मुखी)**, **भगवान कार्तिकेय (6 मुखी)** और **माता लक्ष्मी (7 मुखी)** की ऊर्जाओं को एक साथ जोड़ा जाता है।

यह बंध व्यक्ति के जीवन में एक मजबूत आधार और स्थिरता देने वाला माना जाता है।

इसे शास्त्रों में बताए गए **मुख से मुख** के क्रम में विशेष रूप से बाँधा जाता है, ताकि यह गहरी मानसिक शांति, रिश्तों में भावनात्मक स्थिरता और धन के नियमित एवं स्थिर प्रवाह में मदद कर सके।

2. लक्ष्मी गणेश बंध

समृद्धि को आकर्षित करने वाला संयोजन

- **संयोजन:** 6 मुखी + 7 मुखी + 8 मुखी
- **उद्देश्य:** रुका हुआ पैसा, कॉर्पोरेट सफलता और विदेश में बसना

यह मध्यम बजट वाला संयोजन है और खासतौर पर उद्यमियों, बड़े व्यवसायों से जुड़े अधिकारियों और ऐसे पेशेवरों के लिए बनाया गया है जिनका धन, भुगतान या पदोन्नति लंबे समय से अटकी हुई है।

- **6 और 7 मुखी** का संयोजन माता लक्ष्मी की ऊर्जा को आकर्षित करने वाला एक शक्तिशाली माध्यम माना जाता है।
- वहीं **8 मुखी**, जो भगवान गणेश का प्रतिनिधित्व करता है, रास्ते में आने वाली बाधाओं को दूर करने वाला माना जाता है।

इन तीनों को मिलाकर ऐसा ऊर्जा संयोजन तैयार होता है जो **समृद्धि के प्रवाह** को बढ़ाने के उद्देश्य से पहना जाता है।

इसी कारण इसे **आईटी** पेशेवरों, लंबे समय से कानूनी मामलों में फँसे वकीलों और स्थायी निवास, **वीज़ा** या विदेश में स्थायी रूप से बसने की कोशिश कर रहे लोगों के लिए भी बेहद प्रभावी माना जाता है।

3. वृद्धि बंध

समृद्धि माला का छोटा रूप

- **संयोजन:** 5 मुखी + दो 6 मुखी + दो 7 मुखी + 8 मुखी + 12 मुखी
- **उद्देश्य:** संपूर्ण विकास—स्वास्थ्य, रिश्ते, धन और करियर

बहुत से लोगों की इच्छा होती है कि वे शक्तिशाली **1 से 14 मुखी समृद्धि माला** पहनें, लेकिन बजट की वजह से हर व्यक्ति इसे तुरंत नहीं खरीद सकता।

इसी समस्या का व्यावहारिक समाधान है—**वृद्धि बंध**।

यह समृद्धि माला का एक सोच-समझकर तैयार किया गया छोटा रूप है, जिसकी कीमत लगभग उसके बजट का **1/10 हिस्सा** होती है।

इसमें स्थिरता प्रदान करने वाले मूल रुद्राक्ष—**5, 6, 7 और 8 मुखी**—के साथ **12 मुखी** की शक्तिशाली सूर्य ऊर्जा को जोड़ा गया है, जिसे नेतृत्व, अधिकार और करियर में आगे बढ़ने से जोड़ा जाता है।

यह एक बेहद शक्तिशाली संयोजन माना जाता है। हमारे अनुभव के अनुसार, **वृद्धि बंध पहनने वाले 90% से अधिक लोग** अपने जीवन में तेज़ और स्पष्ट परिणाम देखने के बाद अपने रुद्राक्ष संयोजन को आगे उन्नयन करने के लिए वापस आए हैं।

4. विद्या बंध

विद्यार्थियों का शक्तिशाली संयोजन

- **संयोजन:** दो 4 मुखी + एक 6 मुखी
- **उद्देश्य:** याददाश्त, एकाग्रता और पढ़ाई में सर्वोच्च सफलता

माता सरस्वती को समर्पित यह संयोजन **विद्यार्थियों, शिक्षकों, लेखकों, कलाकारों और पब्लिक स्पीकर्स** के बीच बेहद पसंद किया जाता है।

- इसमें मौजूद **दो 4 मुखी रुद्राक्ष भगवान ब्रह्मा** का प्रतिनिधित्व करते हैं और रचनात्मकता, बुद्धि तथा मस्तिष्क के विकास को तेज़ी से बढ़ाने वाले माने जाते हैं।
- वहीं **6 मुखी रुद्राक्ष भगवान कार्तिकेय** की अनुशासन और अटूट एकाग्रता वाली ऊर्जा से जुड़ा है। इसे याददाश्त और संवाद क्षमता को बेहतर बनाने वाला माना जाता है।

इन तीनों रुद्राक्षों को एक साथ **शुभ लाल धागे** में पिरोया जाता है।

यह संयोजन मन की बेचैनी को दूर करके पढ़ाई और संवाद में बेहतर प्रदर्शन सुनिश्चित करने वाला माना जाता है।

5. शक्ति बंध

अभेद्य सुरक्षा कवच

- **संयोजन:** 8 मुखी + 9 मुखी + 10 मुखी
 - **उद्देश्य:** दिव्य सुरक्षा, साहस और नकारात्मकता को निष्क्रिय करना
- शक्ति बंध तीन अत्यंत शक्तिशाली रक्षक देवी-देवताओं की ऊर्जा को एक साथ जोड़ता है:

भगवान गणेश — 8 मुखी

माता दुर्गा — 9 मुखी

भगवान विष्णु — 10 मुखी

यह विशेष संयोजन पहनने वाले व्यक्ति के चारों ओर एक बेहद शक्तिशाली **ऊर्जा सुरक्षा कवच** बनाने वाला माना जाता है।

इसका उपयोग विशेष रूप से काले जादू के प्रभाव को निष्क्रिय करने, छिपे हुए शत्रुओं पर विजय पाने और गंभीर कर्म संबंधी बाधाओं को दूर करने के लिए किया जाता है।

8 मुखी से जुड़ी राहु की ऊर्जा और 9 मुखी से जुड़ी केतु की ऊर्जा को संतुलित करते हुए, 10 मुखी भगवान विष्णु के माध्यम से बाकी सभी ग्रहों में सामंजस्य स्थापित करने वाला माना जाता है।

इस तरह यह संयोजन व्यक्ति को अत्यधिक साहस, मानसिक स्पष्टता और मजबूत आंतरिक शक्ति प्रदान करता है।

6. समृद्धि माला (1 से 14 मुखी)

जीवन की हर बड़ी आवश्यकता के लिए संपूर्ण समाधान

- संयोजन: 1 मुखी से 14 मुखी तक
- उद्देश्य: जीवन पर संपूर्ण नियंत्रण, ब्रह्मांडीय अंतर्ज्ञान और दिव्य आशीर्वाद

एकादिचतुर्दशान्तान् रुद्राक्षान् धारयेन्नरः ।
स साक्षाच्छिवरूपः स्यात्तस्य किं दुर्लभं भुवि ॥

"जो मनुष्य 1 से 14 मुखी तक सभी रुद्राक्ष धारण करता है, वह स्वयं भगवान शिव के स्वरूप के समान हो जाता है। फिर इस पृथ्वी पर उसके लिए ऐसा क्या है जो कठिन या अप्राप्य हो?" (श्रीमद् देवी भागवतम्)

एकादिचतुर्दशमुखान् रुद्राक्षान् यस्तु धारयेत् ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः स शिवे सह मोदते ॥

"जो व्यक्ति 1 से 14 मुखी तक सभी रुद्राक्ष धारण करता है, वह सभी शारीरिक और कर्म संबंधी पापों से मुक्त होकर सदैव शिव की दिव्य ऊर्जा में आनंदित रहता है।" (शिव पुराण)

यह रुद्राक्ष विज्ञान का सर्वोच्च स्तर माना जाता है।

समृद्धि माला जीवन में आने वाली लगभग हर बड़ी चुनौती के लिए एक संपूर्ण समाधान के रूप में देखी जाती है।

बहुत कम लोगों को अपने जीवन में असली और उच्च नेपाली **1 से 14 मुखी माला** प्राप्त करने का सौभाग्य, पात्रता और आर्थिक सामर्थ्य मिल पाता है।

इसे पहनने वाले व्यक्ति के जीवन में दिव्य और चमत्कारी घटनाएँ होने की मान्यता है।

यह पहनने वाले को अचानक आने वाले झटकों और अप्रत्याशित दुर्घटनाओं से पूरी तरह सुरक्षित रखने वाला माना जाता है।

साथ ही, यह **तीसरी आँख यानी आज्ञा चक्र** की अंतर्ज्ञान शक्ति को इतना तेज़ करने वाला माना जाता है कि व्यक्ति की आंतरिक समझ लगातार उसे सत्य, धर्म और निश्चित विजय की दिशा में मार्गदर्शन करती रहती है।

7. 1 से 14 मुखीइंडोनेशियन ब्रेसलेट

समृद्धि माला की शक्ति, रोज़ पहनने योग्य रूप में

- **संयोजन:** 1 से 14 मुखीइंडोनेशियन रुद्राक्ष + गणेश रुद्राक्ष + गौरीशंकर + चाँदी का अंकुड़ा
- **उद्देश्य:** समृद्धि माला की शक्ति को एक सुविधाजनक और रोज़ पहनने योग्य रूप में प्राप्त करना

जो लोग भारी और बड़े आकार वाली नेपाली **समृद्धि माला** नहीं खरीद सकते, उनके लिए यह ब्रेसलेट एक बेहतर विकल्प है।

इसमें शक्तिशाली इंडोनेशियन **(जावा) रुद्राक्षों** का इस्तेमाल करके 1 से 14 मुखी तक का पूरा क्रम बनाया जाता है।

इसके साथ बाधाओं को दूर करने वाला **गणेश रुद्राक्ष** और रिश्तों में सामंजस्य स्थापित करने वाला **गौरीशंकर रुद्राक्ष** भी जोड़ा जाता है।

इस पूरे शक्तिशाली संयोजन को एक **समायोज्य शुद्ध चाँदी के अंकुड़ा** से सुरक्षित किया जाता है और इसे कलाई पर पहनने के लिए तैयार किया जाता है।

महत्वपूर्ण नियम

चाहे आप पुरुष हों या महिला, इस पद्धति के अनुसार रुद्राक्ष का ब्रेसलेट हमेशा दाएँ हाथ में ही पहनना चाहिए।

इसका कारण यह माना जाता है कि शरीर का दायाँ हिस्सा सक्रिय, शुद्ध और सूर्य से जुड़ी पिंगला ऊर्जा नाड़ी का प्रतिनिधित्व करता है।

यही ऊर्जा माध्यम इस शक्तिशाली रुद्राक्ष संयोजन की ऊर्जा को बाहरी दुनिया में सक्रिय रूप से प्रकट करने के लिए आवश्यक माना जाता है।

अध्याय 14:

आयुर्वेद में रुद्राक्ष का उपयोग

सदियों से रुद्राक्ष को केवल एक आध्यात्मिक ऊर्जा का माध्यम ही नहीं, बल्कि एक शक्तिशाली वनस्पति-आधारित औषधि के रूप में भी देखा गया है।

पारंपरिक आयुर्वेद में **एलिओकार्पस गैनिट्रस** वृक्ष के लगभग हर हिस्से—इसकी छाल, पत्तियों, फल के गूदे और सूखे बीज यानी रुद्राक्ष—का इस्तेमाल अलग-अलग औषधीय तैयारियों में किया जाता रहा है।

आज भी हरिद्वार के **पतंजलि आयुर्वेदिक संस्थान** जैसे संस्थानों में इनके सूखे पाउडर का विभिन्न उपचारों में उपयोग किया जाता है। पारंपरिक आयुर्वेदिक दावों के अनुसार, इनका इस्तेमाल उच्च रक्तचाप और मधुमेह सहित लंबे समय से चली आ रही हृदय संबंधी समस्याओं में किया जाता है।

ज़रूरी सूचना

नीचे बताए गए चिकित्सा संबंधी उपयोग और उपचार **पारंपरिक आयुर्वेदिक पद्धतियों** से लिए गए हैं। इन्हें आधुनिक चिकित्सा द्वारा प्रमाणित इलाज या आपकी चिकित्सक द्वारा दी गई दवाओं और उपचार का विकल्प नहीं माना जाना चाहिए।

खासकर मधुमेह, उच्च रक्तचाप, निमोनिया, दमा, कैसर, ऑटिज़्म, लकवा या किसी अन्य गंभीर बीमारी में चिकित्सक द्वारा दिया गया उपचार जारी रखना ज़रूरी है।

आइए अब शरीर के स्वास्थ्य के लिए पारंपरिक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली प्रमुख रुद्राक्ष विधियों को समझते हैं।

रुद्राक्ष से जुड़ी मुख्य तरल चिकित्सा विधियाँ

1. रुद्राक्ष जल चिकित्सा

ताँबे का आयनीकरण

- विधि

5 मुखी रुद्राक्ष के 3 दाने लें और उन्हें पानी से भरे शुद्ध ताँबे के बर्तन में रातभर भिगोकर रखें।

- सेवन

सुबह खाली पेट इस पानी को पिँएँ।

- पारंपरिक लाभ

इस पानी को हृदय स्वास्थ्य के लिए एक प्रभावी मस्तिष्कवर्धक नहीं, बल्कि हृदयवर्धक पेय माना जाता है। पारंपरिक मान्यता के अनुसार इसका इस्तेमाल उच्च रक्तचाप और मधुमेह को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है।

इसे पाचन तंत्र को साफ़ करने, पुरानी कब्ज और पेट से जुड़ी कई समस्याओं में राहत देने तथा शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाला भी माना जाता है।

- व्यावहारिक पक्ष

यह जल चिकित्सा अपने बताए गए परिणामों के कारण दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में काफ़ी पसंद की जाती है। इसे सामान्य पानी समझकर हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए; पारंपरिक दृष्टिकोण से इसे एक शक्तिशाली बायो-केमिकल संतुलन प्रक्रिया माना जाता है।

सुविधा और सही संयोजन के लिए हमने उच्च 4-, 5- और 6-मुखी रुद्राक्षों के साथ अलग-अलग जल चिकित्सा सामग्री भी तैयार किए हैं, जो विशेष रूप से www.rudrasamrat.com पर उपलब्ध हैं।

2. रुद्राक्ष वाला दूध

- **विधि और सेवन**

ताज़ा उबले हुए एक कप दूध में **6 मुखी रुद्राक्ष** डालें।

दूध को थोड़ा ठंडा होने दें, फिर रुद्राक्ष निकालकर दूध पी लें।

इस प्रक्रिया को लगातार **40 दिनों** तक दोहराने की सलाह दी जाती है।

- **पारंपरिक लाभ**

इस मिश्रण को **मस्तिष्कवर्धक** के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

पारंपरिक मान्यता के अनुसार यह मानसिक कमजोरी, एकाग्रता की कमी और याददाश्त कमजोर होने जैसी समस्याओं में मदद करता है।

- **तंत्रिकीय समस्याओं में उपयोग**

सामान्य याददाश्त से जुड़ी समस्याओं के अलावा, **4 और 6 मुखी रुद्राक्ष** के साथ की जाने वाली इस दूध चिकित्सा का पारंपरिक रूप से ऑटिज़्म और लकवे जैसी गंभीर तंत्रिकीय स्थितियों से जूझ रहे लोगों के सहायक उपचार के रूप में भी इस्तेमाल किया गया है।

- **हकलाने के लिए**

पारंपरिक विधि के अनुसार **दो 4 मुखी रुद्राक्षों** को दूध में उबालकर लगातार **90 दिनों** तक उस दूध का सेवन करने को हकलाने की समस्या में उपयोगी माना जाता है।

3. रुद्राक्ष का काढ़ा

- **विधि**

किसी भी मुखी के **2 रुद्राक्ष** लें।

उन्हें एक गिलास पानी में ठीक **3 मिनट** तक उबालें।

इसके बाद पानी को ठंडा करके छान लें। यही रुद्राक्ष का काढ़ा है।

- **इस्तेमाल**

इस पानी से दिन में **2 से 3 बार अच्छी तरह गरारे** करें।

- **पारंपरिक लाभ**

रुद्राक्ष में बताए गए विटामिन सी और बी-समूह विटामिनों के गुण के कारण इस काढ़े को मुँह से जुड़ी समस्याओं—जैसे गंभीर मुँह की सूजन, छाले, गले के घाव और जीभ पर होने वाली दर्दनाक दरारों या फफोलों—में राहत के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

4. रुद्राक्ष आई ड्रॉप्स

- **विधि और इस्तेमाल**

एक साफ़ रुद्राक्ष को शुद्ध गुलाब जल में 3 से 4 घंटे के लिए भिगोकर रखें।

इसके बाद पानी को अलग कर लें। पारंपरिक विधि में इसे रोज़ाना 1–2 बूंद आई ड्रॉप की तरह इस्तेमाल करने का उल्लेख मिलता है।

- **बताए गए लाभ**

इसे आँखों की जलन, आँख आना और धीरे-धीरे दृष्टि में सुधार के लिए उपयोगी माना गया है।

सुरक्षा की दृष्टि से: घर पर तैयार किसी भी गैर-स्टेराइल तरल को सीधे आँखों में डालना संक्रमण या आँख को नुकसान पहुँचा सकता है। इसलिए इस पारंपरिक विधि को अपनाने से पहले नेत्र चिकित्सक की सलाह लेना ज़रूरी है।

5. रुद्राक्ष का तेल

- **विधि**

एक पारंपरिक मिट्टी के बर्तन में:

10 रुद्राक्ष + 9 साबुत लहसुन की गाँठें + 200 मिलीलीटर शुद्ध तिल का तेल मिलाएँ।

इस मिश्रण को 30 मिनट तक उबालें। फिर इसे ठंडा होने दें और तेल को छान लें।

- **इस्तेमाल और पारंपरिक लाभ**

इस औषधीय तेल को हल्का गुनगुना करके दिन में **2-3 बार छाती पर लगाने** की पारंपरिक विधि बताई गई है।

इसे निमोनिया के कारण होने वाले छाती के ऐंठन वाले दर्द और श्वसन संबंधी जकड़न में आराम देने वाला माना जाता है।

यह निमोनिया के चिकित्सकीय उपचार या चिकित्सक द्वारा दी गई दवाओं का विकल्प नहीं है।

रुद्राक्ष का लेप और त्वचा पर उपयोग

रुद्राक्ष के कठोर बीज को किसी साफ़ पत्थर पर पानी, दूध या किसी अन्य माध्यम के साथ घिसकर उसका लेप भी तैयार किया जाता है।

- **त्वचा संक्रमण और दाग-धब्बे**

5 मुखी रुद्राक्ष को पानी या दूध के साथ घिसकर बने लेप को पारंपरिक रूप से **खुजली, मुहाँसों और त्वचा की सूजन** वाली जगह पर लगाया जाता है।

इसे तुलसी के अर्क के साथ मिलाकर चेहरे के दाग-धब्बों और **ल्यूकोडर्मा के सफेद धब्बों** पर भी इस्तेमाल करने का उल्लेख मिलता है।

- **निशान और जलने के घाव**

रुद्राक्ष के लेप में थोड़ी मात्रा में **नारियल तेल और कपूर** मिलाकर जलने के घावों पर लगाने की पारंपरिक विधि बताई गई है। इसे घाव भरने और दूसरे संक्रमण से बचाने वाला माना जाता है।

पुराने निशान के ऊपर रुद्राक्ष को रातभर टेप से लगाकर एक सप्ताह रखने के बारे में भी दावा किया जाता है कि इससे मेलानिन बनने में मदद मिलती है और निशान हल्का पड़ता है।

- **बालों की देखभाल**

रुद्राक्ष के पाउडर को:

सफेद होते बालों के लिए — ताज़े आँवले के अर्क के साथ और बाल झड़ने या गंजेपन के लिए — नीम के पत्तों के अर्क के साथ मिलाकर बालों की जड़ों में लगाने की पारंपरिक विधि बताई गई है।

इसे लगातार **90 दिनों** तक लगाने से सिर की त्वचा को उत्तेजित करने और स्वस्थ बालों की वृद्धि में मदद मिलने का दावा किया जाता है।

- **चेचक और छोटी माता**

पारंपरिक विधि के अनुसार **2 मुखी रुद्राक्ष** को गाय के दूध के साथ पत्थर पर घिसकर तैयार मिश्रण की **एक चम्मच मात्रा लगातार 7 दिनों** तक देने का उल्लेख चेचक और छोटी माता जैसे विषाणुजनित संक्रमणों में किया गया है।

विषाणुजनित संक्रमण में इसे चिकित्सकीय उपचार का विकल्प नहीं माना जाना चाहिए, विशेष रूप से गंभीर लक्षण होने पर चिकित्सक की सलाह ज़रूरी है।

पूरे शरीर और श्वसन संबंधी पारंपरिक उपचार

- **दमा और श्वसनी-शोथ**

1 ग्राम बारीक पिसे रुद्राक्ष पाउडर को शहद में मिलाकर दिन में दो बार लेने की पारंपरिक विधि बताई गई है।

इसे प्राकृतिक रूप से कफ कम करने वाला माना जाता है और दावा किया जाता है कि यह छाती की जकड़न तथा दमा के कारण होने वाली ऐंठन में राहत दे सकता है।

दमा में निर्धारित श्वसन यंत्र या दूसरी दवाएँ चिकित्सक की सलाह के बिना बंद नहीं करनी चाहिए।

- **गठिया और जोड़ों का दर्द**

एक रुद्राक्ष को एक गिलास **बकरी के दूध** में उबालकर लगातार **21 दिनों** तक उस दूध का सेवन करने को गठिया और जोड़ों के दर्द में पारंपरिक रूप से लाभकारी माना गया है।

- **रोग प्रतिरोधक क्षमता की कमी**

रुद्राक्ष का लगातार शरीर और त्वचा के संपर्क में रहना शरीर के पूरे **तंत्रिका-प्रतिरक्षा तंत्र** को मजबूत करने वाला माना जाता है।

पारंपरिक मान्यता के अनुसार त्वचा पर रुद्राक्ष का हल्का रगड़ना रोग प्रतिरोधक क्षमता को कमजोर करने वाली बीमारियों के खिलाफ एक प्राकृतिक सुरक्षा कवच की तरह काम कर सकता है।

- **पाचन संबंधी राहत**

अत्यधिक एसिडिटी, जी मिचलाना या लंबे समय से अपच की समस्या होने पर **रुद्राक्ष के लेप को अदरक के रस के साथ मिलाकर सेवन करने** का पारंपरिक उल्लेख मिलता है।

इसे पाचन तंत्र में तेज़ी से राहत देने वाला माना जाता है।

संक्षिप्त मार्गदर्शिका: अलग-अलग मुखी के पारंपरिक स्वास्थ्य उपयोग

नीचे दी गई तालिका में अलग-अलग मुखी रुद्राक्षों को उन शारीरिक, मानसिक और शरीर की कार्यप्रणाली से जुड़ी समस्याओं के साथ जोड़ा गया है जिनमें पारंपरिक रूप से इनके उपयोग का उल्लेख मिलता है।

मुखी	पारंपरिक रूप से जुड़े स्वास्थ्य उपयोग
1 मुखी	आँखें, हृदय, रक्त, रक्तचाप, तंत्रिका तंत्र और हड्डियाँ
2 मुखी	फेफड़े, गुर्दा, पाचन, हृदय, रक्त, याददाश्त, मोटापा और मासिक धर्म संबंधी समस्याएँ
3 मुखी	अपच, बवासीर, घाव, रक्ताल्पता, बोन मैरो और मासिक धर्म संबंधी समस्याएँ

4 मुखी	दमा, हकलाना, मिर्गी, त्वचा रोग, पीलिया, साइनस और याददाश्त संबंधी समस्याएँ
5 मुखी	यकृत, हड्डियाँ, वसा, गुर्दा, गठिया और उच्च रक्तचाप; मानसिक शांति एवं समृद्धि बढ़ाने वाला माना जाता है
6 मुखी	यौन समस्याएँ, प्रजनन तंत्र, यूरिनरी इन्फेक्शन और आत्मविश्वास की कमी
7 मुखी	मोतियाबिंद, त्वचा रोग, नपुंसकता और आत्मविश्वास की कमी
8 मुखी	फेफड़े, त्वचा, यकृत, आँखें, प्लीहा, लकवा और यकृत बढ़ने की समस्या
9 मुखी	हृदय, फेफड़े, आँखें, पेट, त्वचा, चेचक, गर्भपात और मिसकैरेज
10 मुखी	सामान्य स्वास्थ्य समस्याएँ, काली खाँसी और चिंता
11 मुखी	बांझपन और महिलाओं से जुड़ी स्त्री रोग संबंधी समस्याएँ
12 मुखी	लंबे समय से चली आ रही बीमारियाँ; आत्मविश्वास और याददाश्त बढ़ाने तथा हानिकारक आदतों/लत से जुड़ी समस्याओं में उपयोग
13 मुखी	मूत्र मार्ग, प्रजनन अंग, कैंसर की शुरुआती अवस्था, कान, नाक और गला तथा शारीरिक सुंदरता बढ़ाने से जोड़ा जाता है
14 मुखी	चेहरे का लकवा, गंभीर चिंता और अवसाद

इन सभी उपयोगों को **पारंपरिक आयुर्वेदिक मान्यताओं और प्रयोगों** के संदर्भ में समझना चाहिए। गंभीर, लंबे समय से चली आ रही या अचानक बिगड़ती स्वास्थ्य समस्या में रुद्राक्ष आधारित किसी भी घरेलू विधि को आधुनिक चिकित्सकीय जाँच और उपचार का विकल्प नहीं बनाना चाहिए।

अध्याय 15:

पवित्र श्लोक—प्रसिद्ध श्लोक और उनके गहरे अर्थ

इस किताब में अब तक हमने रुद्राक्ष के विज्ञान, उसकी बनावट, अंक ज्योतिष और चिकित्सा से जुड़े उपयोगों को विस्तार से समझा है। लेकिन इस पूरे ज्ञान का मूल आधार हमारे प्राचीन वैदिक ग्रंथों में मिलता है।

संस्कृत केवल बातचीत या विचार व्यक्त करने की भाषा नहीं है; इसे सटीक ध्वनि और कंपन की भाषा भी माना गया है। प्राचीन ऋषियों ने रुद्राक्ष से जुड़ी गहरी आध्यात्मिक और जैव-विद्युत मान्यताओं को विशेष श्लोकों के माध्यम से ग्रंथों में संजोया।

आज बाज़ार में ऐसे कई स्वयंभू "गुरु" मिल जाते हैं, जो अपनी तरफ से नियम बना देते हैं कि रुद्राक्ष कौन पहन सकता है, कौन नहीं और इसे कब पहनना चाहिए। इन आधुनिक मिथकों को समझने का सबसे अच्छा तरीका है कि हम देखें कि मूल ग्रंथ वास्तव में क्या कहते हैं।

यहाँ **शिव पुराण**, **श्रीमद् देवी भागवतम्**, **स्कंद पुराण** और **उपनिषदों** से लिए गए कुछ प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण श्लोक दिए गए हैं, साथ ही उनके सरल और व्यावहारिक अर्थ भी समझाए गए हैं।

1. रुद्राक्ष की उत्पत्ति

दिव्यवर्षसहस्राणि निमील्य नयने मया ।
तदा गतानि तीव्राणि ततो बिन्दवः पतिताः ॥
(बृहज्जाबाल उपनिषद्)

- अर्थ:

भगवान शिव कहते हैं:

"मैंने एक हज़ार दिव्य वर्षों तक अपनी आँखें बंद रखीं। मेरी अत्यंत गहन तपस्या के बाद मेरी आँखों से आँसू की बूँदें पृथ्वी पर गिरीं, जिनसे रुद्राक्ष के वृक्ष की उत्पत्ति हुई।"

- इसका गहरा अर्थ

यह श्लोक रुद्राक्ष से जुड़े पूरे ज्ञान का मूल आधार माना जाता है।

इसके अनुसार रुद्राक्ष केवल किसी पेड़ का सामान्य बीज नहीं है, बल्कि इसे भगवान शिव की करुणा और उनकी गहन तपस्या की शक्ति का भौतिक स्वरूप माना गया है।

2. स्त्री और जाति से जुड़ा भ्रम

सर्वाश्रमाणां वर्णानां स्त्रीशूद्राणां शिवाज्ञया ।
धार्याः सदैव रुद्राक्षा यतीनां प्रणवेन हि ॥
(शिव पुराण, विद्येश्वर संहिता)

- अर्थ:

"भगवान शिव की आज्ञा के अनुसार सभी आश्रमों और सभी वर्णों के लोग, स्त्रियाँ और शूद्र भी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं और उन्हें धारण करना चाहिए। योगी और संन्यासी इसे ॐ का जप करते हुए धारण करें।"

- वास्तविक संदेश

यह श्लोक उस रूढ़िवादी धारणा को सीधे खारिज करता है कि महिलाएँ या किसी विशेष जाति के लोग रुद्राक्ष नहीं पहन सकते।

रुद्राक्ष को एक **सार्वभौमिक दिव्य उपहार** माना गया है। भगवान शिव की आज्ञा में मनुष्य द्वारा बनाई गई जाति या लिंग जैसी सीमाओं के आधार पर कोई भेदभाव नहीं बताया गया है।

3. 24/7 पहनने का नियम और खान-पान का भ्रम

सुप्ते पीते सदाकालं रुद्राक्षं धारयेन्नरः ।

(श्रीमद् देवी भागवतम्, स्कंध 11, अध्याय 7)

- **अर्थ**

"मनुष्य को हर समय रुद्राक्ष धारण करना चाहिए—सोते, खाते और पीते समय भी।"

- **वास्तविक संदेश**

इसके अलावा, इसी ग्रंथ के **स्कंध 3, अध्याय 6** के अनुसार, मांसाहार या मदिरा का सेवन करने वाला व्यक्ति भी रुद्राक्ष धारण कर सकता है, क्योंकि रुद्राक्ष स्वयं पहनने वाले को पापों से मुक्त करने वाला माना गया है।

यानी रुद्राक्ष का उद्देश्य आपके खान-पान को देखकर आपको परखना नहीं, बल्कि आपकी ऊर्जा को शुद्ध करना माना गया है।

बार-बार रुद्राक्ष उतारने से वह निरंतर **जैव-विद्युत परिपथ** टूटता है, जिसे आप शरीर के साथ स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं।

4. नकारात्मक ऊर्जाओं से सुरक्षा

रुद्राक्षधारिणं दृष्ट्वा भूतप्रेतपिशाचकाः ।

डाकिनी शाकिनी चैव दूरतो यान्ति भीतवत् ॥

(शिव पुराण, विद्येश्वर संहिता)

- **अर्थ**

"रुद्राक्ष धारण किए हुए व्यक्ति को देखकर भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी और दूसरी नकारात्मक शक्तियाँ भयभीत होकर उससे दूर चली जाती हैं।"

- **वास्तविक संदेश**

हम पहले भी समझ चुके हैं कि रुद्राक्ष को एकपरावैद्युत संधारित्र की तरह कार्य करने वाला माना जाता है।

इस श्लोक की आध्यात्मिक व्याख्या यह है कि रुद्राक्ष पहनने वाले के चारों ओर इतना मजबूत और उच्च कंपन वाला **ऊर्जा कवच** बनाता है कि कम कंपन वाली नकारात्मक या बाहरी ऊर्जाएँ उसमें आसानी से प्रवेश नहीं कर पातीं।

प्राचीन समय में ऐसी ऊर्जाओं को अक्सर "भूत-प्रेत", "बुरी नज़र" या दूसरी नकारात्मक शक्तियों के रूप में समझाया जाता था।

5. पूजा की शक्ति बढ़ाने वाला

विना भस्मत्रिपुण्ड्रेण विना रुद्राक्षमालया ।

पूजितोऽपि महादेवो न तस्य फलदायकः ॥

(शिव पुराण)

- **अर्थ**

"त्रिपुंड अर्थात् पवित्र भस्म और रुद्राक्ष माला के बिना की गई भगवान महादेव की पूजा भी अपना पूर्ण फल नहीं देती।"

- **वास्तविक संदेश**

इस श्लोक का संदेश यह है कि केवल बाहरी पूजा-पद्धति ही पर्याप्त नहीं मानी गई है।

रुद्राक्ष को यहाँ एक माध्यम या संकेतग्राही की तरह समझा जा सकता है।

इसके बिना प्रार्थना करना कुछ ऐसा है जैसे बिना संकेतग्राही के रेडियो संकेत भेजना—भावना और उद्देश्य तो मौजूद हैं, लेकिन उसका प्रसारण उतना मजबूत नहीं होता।

इस मान्यता के अनुसार रुद्राक्ष धारण करने से साधक और दिव्य ऊर्जा के बीच अधिक सीधा और निर्बाध संबंध स्थापित होता है।

6. पापों से मुक्ति

रुद्राक्षधारणं पुण्यं सर्वपापविनाशनम् ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन धारणीयो मनीषिभिः ॥
(श्रीमद् देवी भागवतम्)

- **अर्थ**

"रुद्राक्ष धारण करना अत्यंत पुण्यदायी और सभी पापों का नाश करने वाला है। इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति को हर संभव प्रयास करके इसे धारण करना चाहिए।"

- **वास्तविक संदेश**

योगिक संदर्भ में "पाप" को केवल धार्मिक अर्थ में समझना ज़रूरी नहीं है। इसकी व्याख्या **कर्म संबंधी बाधाओं, पुराने मानसिक आघात और नुकसान पहुँचाने वाली आदतों** के रूप में भी की जाती है।

इस श्लोक का संदेश है कि एक समझदार व्यक्ति असली रुद्राक्ष प्राप्त करके उसे पहनने का प्रयास करेगा, क्योंकि इसे उन पुराने कर्मों और बोझ को कम करने वाला माना जाता है जो वर्तमान जीवन में व्यक्ति की प्रगति को धीमा करते हैं।

7. भाग्य से मिलता है रुद्राक्ष

बहुना जन्मनामन्ते महादेवप्रसादतः ।
रुद्राक्षधारणे वाञ्छा स्वभावादेव जायते ॥
(श्रीमद् देवी भागवतम्, स्कंध 5, अध्याय 25)

- **अर्थ**

"रुद्राक्ष के प्रति आकर्षण बिना किसी कारण के पैदा नहीं होता। अनेक जन्मों के बाद और भगवान महादेव की कृपा प्राप्त होने पर ही व्यक्ति के भीतर स्वाभाविक रूप से रुद्राक्ष धारण करने की इच्छा उत्पन्न होती है।"

- **वास्तविक संदेश**

अगर आप यह किताब पढ़ रहे हैं और आपके मन में रुद्राक्ष पहनने की इच्छा पैदा हो रही है, तो इस आध्यात्मिक दृष्टिकोण से इसे केवल एक संयोग नहीं माना जाता।

इसे आपके पिछले कर्मों का परिणाम और एक **दिव्य संकेत** माना जाता है कि अब आप अपने जीवन को अगले स्तर पर ले जाने के लिए तैयार हैं।

8. मंत्र की शक्ति बनाम हमारा आलस

केवलानपि रुद्राक्षान्मन्त्रालस्याद्विभर्ति यः ।

तं न स्पृशन्ति पापानि तमोतीव विभावसुम् ॥

(पद्म पुराण)

- **अर्थ**

"यदि कोई व्यक्ति आलस के कारण बिना किसी मंत्र का जप किए केवल रुद्राक्ष ही धारण करता है, तब भी पाप उसे छू नहीं सकते—ठीक उसी तरह जैसे अंधकार सूर्य को नहीं छू सकता।"

- **वास्तविक संदेश**

मंत्र जप को रुद्राक्ष की शक्ति कई गुना बढ़ाने वाला माना गया है, लेकिन इस श्लोक के अनुसार रुद्राक्ष के अपने प्राकृतिक गुण व्यक्ति की आध्यात्मिक दिनचर्या पर पूरी तरह निर्भर नहीं हैं।

इसे एक **जीवंत ऊर्जा-संचयक** की तरह समझाया गया है, जो तब भी अपना काम करता है जब पहनने वाला व्यक्ति अपनी साधना या मंत्र जप को लेकर थोड़ा आलसी ही क्यों न हो।

9. रुद्राक्ष पहनने में शर्म या मज़ाक करने की चेतावनी

रुद्राक्षधारणे लज्जा येषामस्ति महामुने ।

तेषां नास्ति विनिर्मोक्षः संसाराजन्मकोटिभिः ॥

(स्कंद पुराण)

- **अर्थ**

"हे महामुनि! जो लोग रुद्राक्ष धारण करने में शर्म या संकोच महसूस करते हैं, वे करोड़ों जन्मों तक भी इस संसार के बंधनों से मुक्ति प्राप्त नहीं कर पाते।"

- **वास्तविक संदेश**

ग्रंथों में रुद्राक्ष धारण करने वाले व्यक्ति की आलोचना या उसका मज़ाक उड़ाने को अनुचित माना गया है।

इसका व्यावहारिक संदेश सीधा है—अगर आपने रुद्राक्ष धारण करने का निर्णय लिया है, तो उसे पूरे विश्वास और बिना किसी झिझक के पहनें।

10. पुण्य को कई गुना बढ़ाने वाला और मोक्ष का आश्वासन

रुद्राक्षस्पर्शनाद्वापि लक्षपुण्यं प्रजायते ।
कोटिपुण्यं भवेत्तस्य यस्तु कण्ठे प्रधारयेत् ॥
कोटिकोटीसहस्राणि कोटिकोटीशतानि च ।
रुद्राक्षधारणे पुण्यं जपतो लभ्यते नरः ॥
(स्कंद पुराण, माहेश्वर खंड, केदार खंड)

- **अर्थ**

"केवल रुद्राक्ष को छूने से ही एक लाख गुना पुण्य प्राप्त होता है। इसे गले में धारण करने से यह पुण्य एक करोड़ गुना हो जाता है और रुद्राक्ष की माला से जप करने पर इसका फल इससे भी असंख्य गुना बढ़ जाता है।"

- **वास्तविक संदेश**

ग्रंथों में यहाँ तक कहा गया है कि यदि कोई अज्ञानी जीव—जैसे एक गधा—भी अपने शरीर पर रुद्राक्ष धारण किए हुए मृत्यु को प्राप्त करता है, तो वह **रुद्रस्वरूप**, यानी शिव के स्वरूप को प्राप्त कर सकता है।

अगर केवल रुद्राक्ष के शारीरिक संपर्क को ही किसी जीव के लिए इतनी बड़ी आध्यात्मिक मुक्ति देने वाला माना गया है, तो एक जागरूक मनुष्य के लिए इसकी संभावनाएँ कितनी विशाल हो सकती हैं, इसका अनुमान लगाया जा सकता है।

इस दृष्टिकोण से रुद्राक्ष की क्षमता केवल धन या स्वास्थ्य तक सीमित नहीं रहती, बल्कि अंततः व्यक्ति को **आध्यात्मिक उन्नति और मोक्ष** की दिशा में ले जाने वाली मानी जाती है।

अध्याय 16:

अंतिम जागरण

हम इस किताब के अंत तक पहुँच चुके हैं, लेकिन आपके लिए यह अंत नहीं, बल्कि एक गहरे व्यक्तिगत बदलाव की शुरुआत है।

जब आपने पहली बार यह किताब खोली होगी, तब शायद रुद्राक्ष आपके लिए केवल एक धार्मिक आभूषण रहा होगा—कुछ ऐसा जिसे साधु-संत पहनते हैं या जिसे लोग आस्था के कारण धारण करते हैं।

लेकिन अब तक इस पूरी यात्रा के बाद, उम्मीद है कि आप इसे एक अलग नज़रिए से देखते होंगे—एक ऐसे अत्यंत विकसित **जैव-विद्युत संधारित्र** के रूप में, जिसकी उत्पत्ति को ब्रह्मांडीय करुणा से जोड़ा गया है।

इस किताब में हमने भगवान शिव के आँसुओं से रुद्राक्ष की पौराणिक उत्पत्ति से अपनी यात्रा शुरू की और फिर अंक ज्योतिष तथा ज्योतिषीय कुंडली के माध्यम से अपने लिए सही रुद्राक्ष चुनने के सटीक और गणितीय तरीकों तक पहुँचे।

इस पवित्र बीज को लेकर जो डर, भ्रम और गलत धारणाएँ वर्षों से बनी हुई थीं, उन्हें हमने एक-एक करके समझने और दूर करने की कोशिश की है।

अब आपके हाथ में इसका पूरा खाका है।

असली रुद्राक्ष की पहचान और हमारी जिम्मेदारी

आज का आध्यात्मिक बाज़ार दुर्भाग्य से धोखाधड़ी से भरा हुआ है।

बाज़ार में नकली प्लास्टिक के रुद्राक्ष, कृत्रिम रूप से बनाई गई मुखी रेखाएँ और ऐसे विक्रेता मौजूद हैं, जिनके लिए प्राचीन ज्ञान से ज़्यादा ज़रूरी जल्दी पैसा कमाना है।

इससे भी खराब स्थिति तब होती है जब जानकारी की कमी के कारण रुद्राक्ष के प्राकृतिक गुणों को ही नुकसान पहुँचा दिया जाता है। कई विक्रेता सस्ते और मोटे धातु के तार सीधे रुद्राक्ष के भीतर मौजूद प्राकृतिक छिद्र और उसके अंदरूनी हिस्सों से गुज़ार देते हैं, जिससे बीज की प्राकृतिक संरचना और उसकी धारिता प्रभावित हो सकती है।

इस किताब को लिखने का मेरा एक बड़ा उद्देश्य इसी शोर और भ्रम को खत्म करना था।

यही कारण है कि हमारे काम की पूरी नींव **प्रामाणिकता** पर टिकी है—सख्त **प्रयोगशाला परीक्षण** से लेकर सही **मुख-से-मुख** क्रम में रुद्राक्ष पिरोने तक और उच्च चाँदी की जड़ाई की बारीक कारीगरी तक।

रुद्राक्ष को सुरक्षित और संरक्षित किया जाना चाहिए, उसे तार से छेदकर या पूरी तरह ढककर दबाया नहीं जाना चाहिए।

चाँदी की इस बारीक कारीगरी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का उद्देश्य यही है कि हर रुद्राक्ष की प्राकृतिक बनावट और उसकी ऊर्जा से जुड़ी संरचना बिना किसी नुकसान के सुरक्षित रहे।

यह किताब आपसे मेरा एक वादा है—इस अव्यवस्थित और भ्रम से भरे बाज़ार में सच्चाई सामने लाने और आपको बिना किसी मिलावट के सही जानकारी देने का।

साधन और साधक

लेकिन इन सबके बीच एक बात आपको हमेशा याद रखनी होगी:

रुद्राक्ष साधन है, लेकिन उसे दिशा देने वाले आप हैं।

अगर आप दुनिया का सबसे शक्तिशाली **14 मुखी रुद्राक्ष** खरीद लें, उसे गले में पहन लें और फिर सोफे पर बैठकर आसमान से किसी चमत्कार के गिरने का इंतज़ार करें, तो कुछ नहीं होने वाला।

रुद्राक्ष इंसानी मेहनत की जगह नहीं लेता—यह उसे बढ़ाने का माध्यम माना जाता है।

मान्यता है कि यह अदृश्य कर्म संबंधी बाधाओं को कम करता है, आपकी अंतर्ज्ञान शक्ति को तेज़ करता है और आपके चक्रों को संतुलित करने में मदद करता है।

लेकिन कदम आपको ही उठाने होंगे।

अगर आप मेहनत करते हैं, अपना ध्यान लक्ष्य पर बनाए रखते हैं और लगातार आगे बढ़ते हैं, तो रुद्राक्ष आपके लिए उस **पीछे से चलने वाली अनुकूल हवा** की तरह काम कर सकता है, जो आपकी रफ्तार को बढ़ाती है और रास्ते की उन बाधाओं को कम करती है जो सामान्यतः आपकी प्रगति को धीमा कर देती हैं।

आपके लिए एक निःशुल्क उपहार और विशेष छूट

आपने इस किताब को पढ़ने, रुद्राक्ष को समझने और यहाँ तक पहुँचने के लिए अपना समय दिया है। इसलिए मैं आपकी इस नई यात्रा का पहला कदम थोड़ा आसान बनाना चाहता हूँ।

क्योंकि बिना कर्म के ज्ञान केवल एक अधूरी संभावना बनकर रह जाता है।

आपकी इस यात्रा की शुरुआत के लिए मेरी ओर से आपको एक 5 मुख्य रुद्राक्ष ब्रेसलेट बिल्कुल निःशुल्क दिया जा रहा है।

ध्यान दें: यह निःशुल्क ब्रेसलेट पहले से अभिमंत्रित या ऊर्जित नहीं होगा। इससे आप रुद्राक्ष को उसके प्राकृतिक रूप में अनुभव कर सकेंगे और इस किताब में बताई गई सक्रियण की प्रक्रिया को स्वयं करके देख सकेंगे।

लिंक: <https://linktr.ee/rudrasamrat>

या नीचे दिए गए क्यूआर संकेतक को स्कैन करें और भुगतान प्रक्रिया के समय कूपन कोड दर्ज करें: **BOOK100** का इस्तेमाल करें।



पाठकों के लिए विशेष छूट

इस किताब को पूरा पढ़ने के लिए धन्यवाद के रूप में आपके पहले अनुकूलित रुद्राक्ष संयोजन पर एक अलग विशेष प्रस्ताव भी दिया जा रहा है।

www.rudrasamrat.com पर ₹999 या उससे अधिक की किसी भी खरीदारी पर भुगतान प्रक्रिया के समय कूपन कोड दर्ज करें: **BOOK15** का इस्तेमाल करें और पाएँ: **15% की निश्चित छूट!**

अंतिम आशीर्वचन

रुद्राक्ष से डरिए मत।

समाज में फैले अंधविश्वासों और बेवजह के नियमों में मत उलझिए।

अपने रुद्राक्ष संयोजन को उस योद्धा के आत्मविश्वास के साथ पहनिए, जिसे पता है कि उसके साथ एक शक्तिशाली दिव्य कवच है।

इस प्रक्रिया पर विश्वास रखिए, इसके विज्ञान को समझिए और यह भरोसा रखिए कि जो व्यक्ति शुद्ध मन से रुद्राक्ष धारण करता है, उसे जीवन के अचानक आने वाले झटकों से सुरक्षा मिलने की मान्यता है।

भगवान शिव की दिव्य ऊर्जा आपके भीतर छिपी सर्वोच्च क्षमता को जगाए, आपकी सीमाओं को तोड़े और आपको अपार समृद्धि, मजबूत स्वास्थ्य और परम शांति की ओर ले जाए।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

अर्थ:

"हम तीन नेत्रों वाले भगवान शिव की आराधना करते हैं, जो सुगंध के समान सहज रूप से सर्वत्र व्याप्त हैं, अत्यंत कृपालु हैं और अपने भक्तों का पालन-पोषण तथा संरक्षण करते हैं। जिस प्रकार पका हुआ फल सहज ही अपनी डाली के बंधन से अलग हो जाता है, उसी प्रकार वे हमें मृत्यु के बंधन से मुक्त कर अमरत्व की ओर ले जाएँ।"

ॐ नमः शिवाय।

परिशिष्टः

प्रमुख शब्दों की विस्तृत शब्दावली

आदित्य – वैदिक सूर्य देव तथा 12 मुखी रुद्राक्ष के अधिष्ठाता देवता। ब्रह्मांडीय परिपथ के संदर्भ में आदित्य अनंत जीवनशक्ति, नेतृत्व क्षमता तथा शारीरिक रोगों से पूर्ण मुक्ति का प्रतीक हैं।

अग्नि – वैदिक अग्नि देव तथा 3 मुखी रुद्राक्ष के अधिष्ठाता देवता। अग्नि पूर्व जन्मों के कर्मों के दहन, मन की शुद्धि तथा आत्म-संदेह के नाश का प्रतीक है।

अक्षमालिका उपनिषद् – एक प्राचीन वैदिक ग्रंथ, जिसमें प्रभावशाली माला के निर्माण हेतु उसकी संरचना, सामग्री के चयन तथा ज्यामितीय नियमों का विस्तृत वर्णन है। इसी ग्रंथ में मनकों को "मुख से मुख" तथा "पूँछ से पूँछ" जोड़कर अखंड जैव-विद्युत ऊर्जा परिपथ बनाने का सिद्धांत बताया गया है।

अनंग – कामदेव का एक अन्य नाम। शिवपुराण के अनुसार 7 मुखी रुद्राक्ष अनंग से संबंधित है और धारणकर्ता को आकर्षक व्यक्तित्व, धन-संपदा तथा भौतिक इच्छाओं की पूर्ति प्रदान करता है।

अश्वमेध यज्ञ – अत्यंत विशाल एवं व्ययपूर्ण प्राचीन वैदिक यज्ञ। पद्मपुराण के अनुसार हज़ारों अश्वमेध यज्ञों के आध्यात्मिक एवं भौतिक पुण्य के समान फल केवल 11 मुखी रुद्राक्ष धारण करने से प्राप्त हो सकता है।

भैरव – भगवान शिव का उग्र एवं काल-विजयी स्वरूप, जो भय के विनाश से जुड़ा है। देवी दुर्गा के साथ भैरव 9 मुखी रुद्राक्ष के अधिष्ठाता देवता हैं।

जैव-विद्युत – मानव शरीर की कोशिकाओं, विशेषकर हृदय एवं केंद्रीय तंत्रिका तंत्र द्वारा उत्पन्न सूक्ष्म विद्युत धाराएँ। यही जैव-विद्युत रुद्राक्ष के विद्युत-चुंबकीय क्षेत्र के साथ परस्पर क्रिया करती है।

ब्रह्मा – हिंदू त्रिमूर्ति के सृष्टिकर्ता तथा 4 मुखी रुद्राक्ष के अधिष्ठाता देवता। ब्रह्मा बुद्धि, स्मरणशक्ति, वाणी तथा शास्त्रों के ज्ञान के अधिपति हैं।

धारिता – किसी प्रणाली की विद्युत आवेश संचित करने की क्षमता। उच्च गुणवत्ता वाला रुद्राक्ष प्राकृतिक जैव-विद्युत संधारित्र की भाँति कार्य करते हुए तनाव से उत्पन्न अतिरिक्त ऊर्जा को अवशोषित कर संचित करता है, जिससे धारणकर्ता का मन शांत होता है।

ब्रह्मांडीय परिपथ – रुद्राक्षों के वैज्ञानिक ढंग से निर्मित विशिष्ट संयोजन (जैसे समृद्धि माला) को दिया गया नाम। जिस प्रकार सूक्ष्म परिपथ किसी उपकरण का संचालन करता है, उसी प्रकार ब्रह्मांडीय परिपथ जैव-विद्युत ऊर्जा को व्यवस्थित कर मानव क्षमता को अधिकतम करने तथा जीवन में विशिष्ट परिणाम आकर्षित करने में सहायक माना जाता है।

प्रतिचुंबकत्व – प्रामाणिक रुद्राक्षों का एक वैज्ञानिक गुण। बाहरी चुंबकीय क्षेत्र (जैसे हृदय की धड़कन से उत्पन्न क्षेत्र) के प्रभाव में रुद्राक्ष हल्का चुंबकीय संरक्षण ग्रहण करता है, जिससे हृदय एवं रक्तवाहिनी तंत्र पर संतुलनकारी प्रभाव पड़ता है।

पराविद्युत गुण – ऐसा गुण जिसके कारण कोई पदार्थ विद्युतरोधी होते हुए भी बाहरी विद्युत क्षेत्र के प्रभाव से ध्रुवित हो सकता है। रुद्राक्ष में यह गुण पाया जाता है, जिससे चिंता एवं अत्यधिक विचारों के कारण उत्पन्न अनियमित मस्तिष्कीय तरंगों को संतुलित करने में सहायता मिलती है।

एलिओकार्पस गैनिट्रस – प्रामाणिक रुद्राक्ष वृक्ष का वानस्पतिक एवं वैज्ञानिक नाम। सर्वोत्तम गुणवत्ता वाले रुद्राक्ष नेपाल के हिमालयी क्षेत्रों में पाए जाने वाले इसी वृक्ष से प्राप्त होते हैं।

गर्भ गौरी – दो प्राकृतिक रूप से जुड़े हुए रुद्राक्षों का मनका, जिसमें एक मनका दूसरे से छोटा होता है। यह माता पार्वती और भगवान गणेश का प्रतीक

माना जाता है तथा पारिवारिक एवं मातृत्व संबंधों में सामंजस्य स्थापित करने हेतु उपयोग किया जाता है।

गौरीशंकर – दो प्राकृतिक रूप से जुड़े हुए रुद्राक्षों का मनका, जो भगवान शिव एवं माता पार्वती की संयुक्त ऊर्जा का प्रतीक है। यह धारणकर्ता के भीतर स्त्री एवं पुरुष ऊर्जा के संतुलन में सहायक माना जाता है।

ईश्वर – संस्कृत शब्द, जिसका अर्थ है "स्वामी", "प्रभु" या "समृद्ध व्यक्ति"। शिवपुराण के अनुसार 7 मुखी रुद्राक्ष निर्धन व्यक्ति को भी ईश्वर के समान समृद्ध बना सकता है।

महासेन – भगवान कार्तिकेय (स्कन्द) का एक अन्य नाम। 6 मुखी रुद्राक्ष के अधिष्ठाता देवता के रूप में वे साहस प्रदान करते हैं, मंच-भय दूर करते हैं तथा सभाओं एवं नेतृत्व की परिस्थितियों में विजय दिलाते हैं।

माला – ध्यान, ऊर्जा संतुलन तथा मन की एकाग्रता के लिए प्रयुक्त मनकों का पारंपरिक क्रम। प्रभावी माला का निर्माण निश्चित गणितीय एवं संरचनात्मक नियमों के अनुसार किया जाना आवश्यक माना गया है।

मंत्र – संस्कृत की गणितीय रूप से संरचित ध्वनि या कंपन। मंत्र केवल धार्मिक उच्चारण नहीं हैं, बल्कि रुद्राक्ष की सुप्त ऊर्जा को सक्रिय करने वाली विशिष्ट ध्वनि-आवृत्तियाँ माने जाते हैं।

मोक्ष – जन्म-मृत्यु के चक्र से अंतिम मुक्ति। इसे आध्यात्मिक विकास की सर्वोच्च अवस्था माना गया है, जिसे विशेष रूप से 11 एवं 14 मुखी जैसे उच्च मुखी रुद्राक्षों से जोड़ा गया है।

मुख – रुद्राक्ष का ऊपरी भाग, जहाँ वह मूलतः वृक्ष से जुड़ा होता है। अक्षमालिका उपनिषद् के अनुसार माला पिरोते समय इसकी सही पहचान अत्यंत आवश्यक है।

मुखी – रुद्राक्ष की बाहरी सतह पर बनी प्राकृतिक लंबवत रेखाएँ। मुखों की संख्या उसके भीतर के बीज-कोषों तथा उसकी विशिष्ट विद्युत-चुंबकीय आवृत्ति का निर्धारण करती है।

नेपाल रुद्राक्ष – हिमालयी क्षेत्रों से प्राप्त सर्वोच्च श्रेणी का रुद्राक्ष। इंडोनेशियन रुद्राक्षों की तुलना में इसमें गहरी एवं स्पष्ट मुख रेखाएँ तथा अधिक सतही क्षेत्र होता है, जिससे त्वचा के साथ अधिक संपर्क और बेहतर जैव-विद्युत प्रेरण संभव होता है।

पद्मपुराण – अठारह प्रमुख पुराणों में से एक। इसका अध्याय 57 विभिन्न मुखी रुद्राक्षों के लाभ एवं अधिष्ठाता देवताओं का विस्तृत वर्णन करता है।

छद्म-औषधि प्रभाव (प्लेसीबो) प्रभाव – मनोवैज्ञानिक प्रभाव, जिसमें व्यक्ति केवल विश्वास के कारण लाभ अनुभव करता है। रुद्राक्ष डिकोडेड के अनुसार रुद्राक्ष का प्रभाव केवल विश्वास पर नहीं, बल्कि भौतिक एवं जैव-विद्युत सिद्धांतों पर आधारित माना गया है।

प्राण – मानव तंत्रिका तंत्र में प्रवाहित होने वाली जीवनशक्ति अथवा जैव-विद्युत ऊर्जा। प्राण का अवरोध शारीरिक रोगों एवं मानसिक जड़ता के रूप में प्रकट हो सकता है।

प्राण प्रतिष्ठा – वैदिक विधि जिसके माध्यम से रुद्राक्ष की सुप्त ऊर्जा को जागृत एवं सक्रिय किया जाता है, जिससे उसे धारण करने से पूर्व उसका ब्रह्मांडीय परिपथ सक्रिय माना जाता है।

पुच्छ – रुद्राक्ष का निचला भाग। माला बनाते समय पुच्छ को पुच्छ से जोड़ना आवश्यक माना गया है ताकि ऊर्जा प्रवाह में व्यवधान उत्पन्न न हो।

समृद्धि माला (1-14 मुखी) – 1 से 14 मुखी तक के सभी प्रामाणिक रुद्राक्षों से निर्मित अत्यंत शक्तिशाली ब्रह्मांडीय परिपथ। इसे समग्र स्वास्थ्य, समृद्धि, आध्यात्मिक उन्नति तथा चक्र संतुलन के लिए बनाया गया माना जाता है।

संधि – संस्कृत शब्द, जिसका अर्थ है "जोड़" या "संयोग"। माला निर्माण में यह दो रुद्राक्षों के बीच के उस बिंदु को दर्शाता है जहाँ उनका सही संयोजन ऊर्जा प्रवाह के लिए आवश्यक माना जाता है।

शास्त्र – प्राचीन भारतीय ग्रंथ, जिनमें वैज्ञानिक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक सिद्धांतों का वर्णन है। 4 मुखी रुद्राक्ष को इन शास्त्रों के ज्ञान में निपुणता प्रदान करने वाला माना जाता है।

शिवपुराण – भगवान शिव से संबंधित सर्वाधिक प्रामाणिक ग्रंथों में से एक। इसकी विद्येश्वर संहिता में रुद्राक्ष की उत्पत्ति, धारण-विधि तथा उसके वैज्ञानिक सिद्धांतों का विस्तृत वर्णन मिलता है।

श्रीमद् देवी भागवतम् – आदिशक्ति को समर्पित प्रमुख पुराण, जिसमें विभिन्न रुद्राक्षों द्वारा ग्रहदोषों एवं अदृश्य बाधाओं के निवारण का वर्णन मिलता है।

सुमेरु (बिंदु) – माला का प्रधान मनका (आमतौर पर जपमाला का 109वाँ मनका), जो ऊर्जा परिपथ के आधार बिंदु के रूप में कार्य करता है और ऊर्जा के संतुलित वितरण में सहायक माना जाता है।

वेदाङ्ग – वैदिक अध्ययन से संबंधित छह सहायक विद्याएँ, जिनमें शिक्षा, व्याकरण, ज्योतिष आदि सम्मिलित हैं।

विनायक – भगवान गणेश का एक नाम। वे 8 मुखी रुद्राक्ष के अधिष्ठाता देवता तथा विघ्नों के नाशक माने जाते हैं।

विष्णु लक्ष्मी बंध – 5, 6 एवं 7 मुखी रुद्राक्षों से निर्मित अत्यंत प्रभावशाली ब्रह्मांडीय परिपथ। इसे मानसिक स्थिरता, व्यावसायिक चिंता में कमी तथा आर्थिक समृद्धि के लिए विशेष रूप से निर्मित माना जाता है।

परिशिष्ट:

रुद्राक्ष चयन की व्यावहारिक मार्गदर्शिका (पेशा एवं समस्या के अनुसार)

सही रुद्राक्ष चुनने के लिए हमेशा जटिल ज्योतिषीय कुंडली की आवश्यकता नहीं होती। अलग-अलग पेशे मानव तंत्रिका तंत्र पर अलग प्रकार का दबाव डालते हैं और सर्वोत्तम प्रदर्शन के लिए अलग-अलग जैव-विद्युत आवृत्तियों की आवश्यकता होती है। इसी कारण रुद्राक्ष का चयन भी उसी प्रकार किया जा सकता है, जैसे किसी व्यक्ति की आवश्यकता के अनुसार विशेष अभ्यास, उपचार या संज्ञानात्मक साधन सुझाया जाता है।

1. सूचना प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी क्षेत्र के पेशेवर

- **समस्या:** लंबे समय तक स्क्रीन के सामने काम करना, निरंतर डिजिटल तनाव, मानसिक थकावट, अनियमित नींद तथा समय-सीमा के दबाव से उत्पन्न अस्वस्थ आदतें।
- **अनुशंसित संयोजन:** 5, 6, 7, 8 और 12 मुखी।
- **वैज्ञानिक आधार:** 5, 6 और 7 मुखी डिजिटल दबाव के कारण उत्पन्न अनियमित मस्तिष्कीय तरंगों को संतुलित कर मानसिक स्थिरता एवं आर्थिक प्रगति में सहायक माने जाते हैं। 8 मुखी विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। परंपरागत रूप से राहु से संबंधित होने के कारण इसे तकनीक, विश्लेषण तथा डिजिटल क्षेत्र से जोड़ा जाता है। यह तार्किक क्षमता और तकनीकी विकास को प्रोत्साहित करने वाला माना जाता है। 12 मुखी व्यक्ति को केवल तकनीकी कार्य तक

सीमित न रखकर नेतृत्व क्षमता और पदोन्नति के लिए आवश्यक प्रभाव प्रदान करता है।

2. विधि व्यवसाय से जुड़े लोग (अधिवक्ता एवं न्यायाधीश)

- **समस्या:** तीक्ष्ण विश्लेषण क्षमता, विरोधी पक्ष से आगे रहने की आवश्यकता तथा उच्च दबाव वाली परिस्थितियों में अधिकारपूर्ण व्यक्तित्व बनाए रखना।
- **अनुशंसित संयोजन:** 7, 8, 12 और 14 मुखी।
- **वैज्ञानिक आधार:** 8 मुखी विश्लेषण क्षमता को तीव्र बनाता है और जटिल तर्कों को समझने में सहायता करता है। 7 मुखी धैर्य, न्यायप्रियता तथा दीर्घकालिक संघर्ष की शक्ति प्रदान करता है। 12 मुखी प्रभावशाली व्यक्तित्व विकसित करता है, जबकि 14 मुखी को ऐसी अंतर्ज्ञान शक्ति से जोड़ा जाता है जो विरोधी की अगली रणनीति का पूर्वानुमान लगाने में सहायक मानी जाती है।

3. चिकित्सा क्षेत्र के पेशेवर (चिकित्सक एवं शल्य चिकित्सक)

- **समस्या:** लंबे कार्य घंटे, शारीरिक थकान, भावनात्मक दबाव तथा जीवन-मरण से जुड़े त्वरित निर्णय।
- **अनुशंसित संयोजन:** 9, 11 और 12 मुखी।
- **वैज्ञानिक आधार:** 11 मुखी मानसिक एवं शारीरिक सहनशक्ति को बढ़ाने वाला माना जाता है। 9 मुखी धारणकर्ता की ऊर्जा की रक्षा करते हुए उसे रोगियों के दुःख एवं तनाव के प्रभाव से बचाने में सहायक माना जाता है। 12 मुखी चिकित्सा क्षेत्र में उच्च सफलता और प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सहायक माना जाता है।

4. वित्त एवं बैंकिंग क्षेत्र के पेशेवर

- **समस्या:** अस्थिर वित्तीय बाज़ार, उच्च मूल्य वाले ग्राहकों का प्रबंधन तथा त्रुटिरहित वित्तीय विश्लेषण की आवश्यकता।
- **अनुशंसित संयोजन:** 6, 7, 8, 12 और 13 मुखी।

- **वैज्ञानिक आधार:** 6, 7 और 8 मुखी विश्लेषण क्षमता तथा आर्थिक उन्नति का आधार बनाते हैं। 12 मुखी नेतृत्व एवं व्यावसायिक प्रगति में सहायक माना जाता है। 13 मुखी आकर्षण, प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा समृद्धि की भावना को बढ़ाने वाला माना जाता है, जिससे महत्वपूर्ण व्यावसायिक समझौते करना सरल हो सकता है।

5. राजनेता एवं लोकसेवक

- **समस्या:** सार्वजनिक उत्तरदायित्व, अचानक उत्पन्न होने वाले संकट, जनसमर्थन बनाए रखना तथा विरोधियों से निरंतर संघर्ष।
- **अनुशंसित संयोजन:** 1, 7, 8, 12, 13 और 14 मुखी।
- **वैज्ञानिक आधार:** इसे अत्यंत प्रभावशाली संयोजन माना जाता है।
 - **1 मुखी:** नेतृत्व, निर्भीकता और निर्णय क्षमता।
 - **7 मुखी:** आर्थिक स्थिरता एवं जनसमर्थन।
 - **8 मुखी:** बाधाओं एवं संकटों से उबरने की क्षमता।
 - **12 मुखी:** प्रभावशाली नेतृत्व और प्रतिष्ठा।
 - **13 मुखी:** प्रभावशाली वक्तृत्व एवं जन-आकर्षण।
 - **14 मुखी:** तीव्र अंतर्ज्ञान और दूरदर्शिता।

6. विद्यार्थी (5 से 13 वर्ष)

- **समस्या:** कम एकाग्रता, मंच-भय तथा अध्ययन का दबाव।
- **अनुशंसित संयोजन:** 4 और 6 मुखी (विद्या बंध), आवश्यकता अनुसार आगे चलकर 8 मुखी।
- **वैज्ञानिक आधार:** 4 मुखी स्मरणशक्ति एवं बौद्धिक क्षमता को प्रोत्साहित करता है। 6 मुखी अनुशासन विकसित करने तथा परीक्षा एवं सार्वजनिक बोलने के भय को कम करने में सहायक माना जाता है। आगे की जटिल पढ़ाई के लिए 8 मुखी तार्किक क्षमता को सुदृढ़ करने वाला माना जाता है।

7. आध्यात्मिक मार्गदर्शक (उपचारक, ज्योतिषी एवं टैरो विशेषज्ञ)

- **समस्या:** परामर्श के दौरान नकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव, जटिल आध्यात्मिक विषयों को सरलता से समझाना तथा गहन अंतर्ज्ञान की आवश्यकता।
- **अनुशंसित संयोजन:** 4, 5, 9, 13 और 15 मुखी।
- **वैज्ञानिक आधार:** 5 मुखी प्राचीन ज्ञान से जुड़ाव का प्रतीक माना जाता है। 4 एवं 13 मुखी मिलकर प्रभावशाली एवं संवेदनशील अभिव्यक्ति विकसित करने में सहायक माने जाते हैं। 9 मुखी धारणकर्ता के आभामंडल की रक्षा करता है, जबकि 15 मुखी अंतर्ज्ञान, दूरदृष्टि तथा अवचेतन क्षमता को प्रबल करने वाला माना जाता है।

8. गृहिणी

- **समस्या:** घर की विविध जिम्मेदारियाँ, भावनात्मक थकान तथा पारिवारिक संबंधों में संतुलन बनाए रखना।
- **अनुशंसित संयोजन:** 5 मुखी, 9 मुखी तथा गौरीशंकर।
- **वैज्ञानिक आधार:** 5 मुखी मानसिक शांति एवं रक्तचाप के संतुलन में सहायक माना जाता है। 9 मुखी भावनात्मक दृढ़ता एवं निडरता प्रदान करने वाला माना जाता है। गौरीशंकर धारण करने से परिवार में सामंजस्य, सहानुभूति तथा वैवाहिक संबंधों में मधुरता बढ़ने की मान्यता है।

9. पूर्णतः नए साधक (सार्वभौमिक मार्ग)

- **समस्या:** "मुझे समझ नहीं आ रहा कि शुरुआत कहाँ से करूँ और पहले वास्तविक अनुभव प्राप्त करना चाहता हूँ।"
- **अनुशंसित संयोजन:** क्रमिक उन्नयन पद्धति।

- **वैज्ञानिक आधार:** शुरुआत विष्णु लक्ष्मी बंध (5, 6 और 7 मुखी) से करें। यह स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन एवं आर्थिक प्रगति के लिए आधार तैयार करता है। इसके बाद अनुभव के आधार पर वृद्धि बंध अपनाया जा सकता है। अंततः दीर्घकालिक लक्ष्य 1 से 14 मुखी समृद्धि माला धारण करना माना जाता है।

10. ठहराव का सामना कर रहा उद्यमी (आर्थिक एवं रचनात्मक अवरोध)

- **समस्या:** अत्यधिक परिश्रम के बावजूद आर्थिक प्रगति का अभाव, विकास में रुकावट, अवसरों का छूट जाना, प्रभावशाली व्यक्तित्व की कमी तथा असफलता का भय।
- **अनुशंसित संयोजन:** विष्णु लक्ष्मी बंध (5, 6 और 7 मुखी), इसके बाद क्रमशः 12, 13 और 14 मुखी तक उन्नयन।
- **वैज्ञानिक आधार:** प्रारंभिक चरण में 5 मुखी तंत्रिका तंत्र को संतुलित करने वाला आधार बनाता है। 6 मुखी संप्रेषण क्षमता, आत्मविश्वास तथा प्रस्तुतीकरण कौशल को प्रोत्साहित करता है। 7 मुखी समृद्धि एवं आकर्षण की भावना को सुदृढ़ करने वाला माना जाता है।
- **सर्वोच्च सफलता के लिए उन्नयन क्रम:** जब आर्थिक स्थिरता एवं आत्मविश्वास विकसित हो जाए, तब 12 मुखी नेतृत्व एवं प्रतिष्ठा को सुदृढ़ करने हेतु जोड़ा जाता है। 13 मुखी प्रभावशाली व्यक्तित्व और सफल व्यावसायिक वार्ताओं में सहायक माना जाता है। अंततः 14 मुखी को तीव्र अंतर्ज्ञान एवं दूरदर्शिता का प्रतीक माना जाता है, जिससे भविष्य की संभावनाओं को बेहतर ढंग से समझने और प्रतिस्पर्धा में आगे रहने में सहायता मिलती है।

